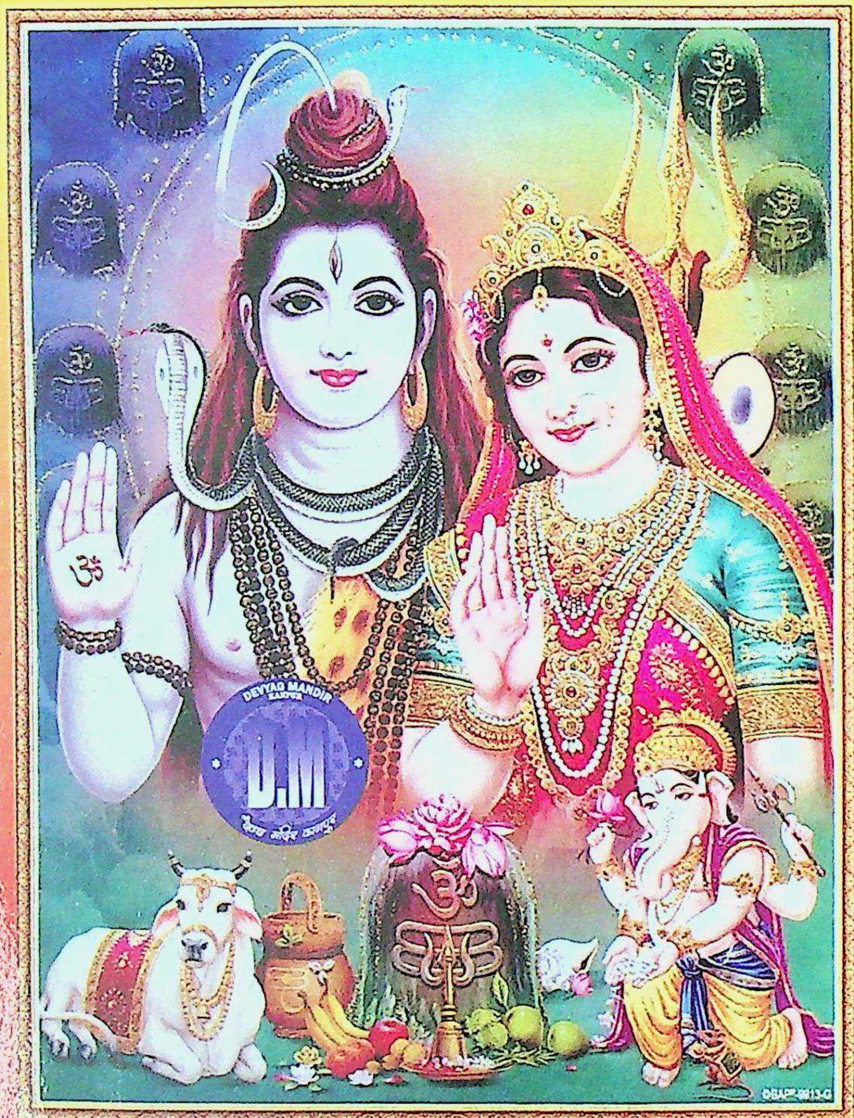
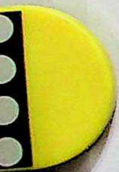
शिव सपर्या पद्धति



दैवज्ञ मंदिर - कानपुर

संकलक स्व. पं. देवनारायण जी गौड़ 'दैवज्ञ'



ॐ नमः शिवाय

अथ

शिव सपर्या पद्धति

अथवा

श्री विश्वनाथ उपासना विधिः
(नानविषयोपलंकृता च)

संकलनकर्ता

स्व. पं. देवनारायण गौड़ 'दैवज्ञ'

व्यवस्थापक

पं. विनय कुमार गौड़

मो. 9451396245

प्रकाशक

दैवज्ञ मन्दिर प्रकाशन

33/164, गया प्रसाद लेन, चौक

कानपुर - 208001

मो. : 8765190580

संशोधित संस्करण : सम्वत् 2080

संख्या : 5000

मूल्य रू. 160/-



|| श्री गणेशाय नमः ||

भूमिका

माता पार्वती एवं पिता शिवशंकर की कृपा से तथा उन्हीं के आदेश से शिव सपर्या पद्धति का नवीन एवं सवंर्द्धित संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। पिछले संस्करण सभी प्रकार से उपयोगी एवं लोकप्रिय हुये। प्रत्येक संस्करण को देखने से कुछ न कुछ कमी प्रतीत होती है। शिवजी अनन्त हैं फिर भी ऐसा प्रयास रहता है कि इसमें कुछ और सामग्री की वृद्धि करके पुस्तक की उपयोगिता में वृद्धि करें। उसके उस संशोधित संस्करण में पृथक रूप से शतरुद्री, अष्टोत्तरशत बिल्वपत्रार्पण स्तोत्र तथा रूद्रस्वाहाकार को भी लगा दिया है, उससे पुस्तक के पृष्ठ संख्या में भी वृद्धि हो गयी है।

वर्तमान समय में समाज की नयी पीढ़ी में कर्मकाण्ड के प्रति एक प्रकार की अनास्था सी भावना घर कर रही है। उसका एक कारण यह भी है कि उन्हें सनातन धर्म का पूरा ज्ञान उनके ढंग से नहीं है। अतएव वे लोग इसकी उपेक्षा करने लग गये हैं। इन्हें उनके तर्कों का सकारण उत्तर चाहिए। क्लिष्ट विषयों से वे दूर रहना चाहते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए, देश–काल परिस्थितियों के अनुसार, यह संकलन मैने समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है। इसमें हिन्दी के माध्यम से भगवान शंकर के पूजन का क्रम दिया है। मुझे पूरी आशा है कि उसके द्वारा शिवभक्तों को सुगमता एवं सुविधा प्राप्त होगी। कानपुर नगर के सभी गुरु जनों की सहमति आशीर्वाद एवं उत्साहवर्द्धन द्वारा जो सहयोग दिया गया उसके लिए मैं उनका विशेष आभारी हूँ। भगवान शिव इन सबका कल्याण करें। सभी विज्ञ पाठकों से हमारा विनम्र निवेदन है कि मुद्रण कार्य में यदाकदा दृष्टि दोषवश त्रुटियाँ रह जाती हैं, कृपा करके उन्हे सुधार लें तथा क्षमा प्रदान करें।



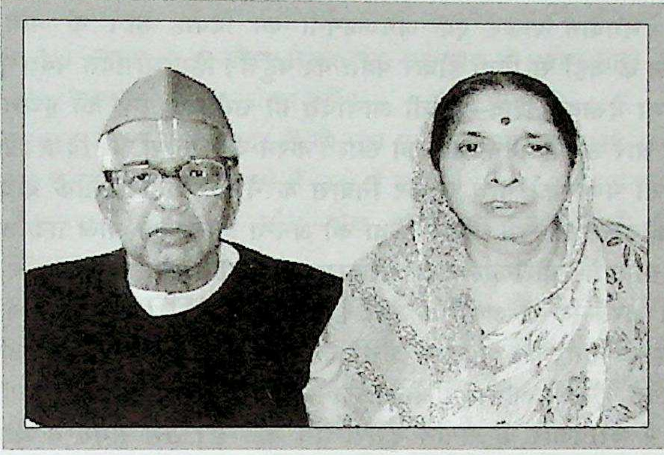
दिनांक : 23.7.2012
श्रावण शुक्ल नागपंचमी सोमवार
संवत 2069 विक्रम

निवेदक

पं. देव नारायण गौड़ 'दैवज्ञ'

नोट : इस समय कागज एवं छपाई की बढ़ती कीमतों के कारण मूल्य वृद्धि करनी पड़ रही है। जिसके लिए हम विविश है

पुण्य स्मृति में



स्मृतिशेष पं. देवनारायण गौड़ "दैवज्ञ" एवं सौ. प्रियम्वदा गौड़

जन्म : ता. 28.10.1936 **जन्म : ता. 31.03.1943**

निर्वाण : ता. 09.02.2014 **निर्वाण : ता. 23.02.2012**

समर्पण

प्रातः स्मरणीय गुरु प्रवर पूज्यपाद कर्मकाण्ड-निधि वेदान्त, वेद-शिक्षा निष्णात स्व. पं. ओंकार नाथ जी गौड़ वेदान्ती आदि कतिपय मनीषियों को सादर समर्पित

स्व. पं. किशन लाल जी गौड़ एवं स्व. श्रीमती मूलोदेवी गौड़

स्व. पं. अनन्त राम जी गौड़

स्व. डॉ. विश्वनाथ जी गौड़ एवं स्व. पं. जागेश्वरप्रसाद जी गौड़

स्व. पं. श्यामलाल जी गौड़ एवं स्व. पं. राम कुमार जी गौड़

स्व. पं. रामचन्द्रजी बाजपेयी एवं स्व. पं. सोमदत्तजी बाजपेयी

स्व. पं. बद्री प्रसाद जी पाण्डेय एवं स्व. पं. जयनन्दनजी अवस्थी

स्व. पं. रामलाल जी पाण्डे एवं स्व. पं. ताराचन्द जी पाण्डे

स्व. बाबू किशोर चन्द जी कपूर 'किशोर'

आदि अन्य गुरुजनों की स्मृति में सादर समर्पित

उपासना के आदि में शिववास ज्ञान

भगवान शकर एवं जगज्जननी का विवाह होने के बाद वे हिमांचल के यहाँ से विदा होकर पर्वत पर पहुँचे। हिमाच्छादित पर्वतश्रृगों की शोभा देखकर शिव–पार्वती आनंदित हो उठे। एकान्त की इच्छा से उन्होंने सारे ऊपरी पर्वतप्रदेश को खाली करने का आदेश कर दिया। सभी पर्वतवासी गणों को नीचे जाकर निवास करने को कहा। उसके बाद वे दोनों क्रीड़ारत हो गये। शिव शिवा की अनन्त क्रीड़ा का आज तक अन्त किसने पाया है? दीर्घकाल तक तारकासुर से पीड़ित देवता कुमारजन्म की कल्पना करते–करते अधीर हो उठें। सर्व सम्मति से अग्नि भगवान् से क्रीड़गृह के भीतर की व्यवस्था जानने की प्रार्थना की। कामदहन से चरित्र को जानते हुए भी अग्निदेव भीतर जाने के लिए तैयार हो गये। क्योंकि संसार में परोपकार के समान दूसरा धर्म नहीं है। उस समय वे लोटन कबूतर का रूप धारण करके वहाँ जाने का विचार कर ही रहे थे कि उन्हें वीणा के स्वरों से मिश्रित नारद का गान सुनाई पड़ा। उतनी ही देर में वहाँ नारद जी आ गये। नारदजी ज्योतिषशास्त्र के प्रणेता आचार्यों में होने से भूत भविष्य और वर्तमान तीनों कालों का ज्ञान रखते हैं। उन्हें देखकर देवताओं ने उनसे शिव पार्वती की अवस्था के बारे में तथा अग्निदेव की यात्रा के सम्बन्ध में प्रश्न किया। उस समय उन्होंने इसकी गणित के द्वारा उत्तर दिया कि इस समय शिव क्रीड़ा में हैं तथा इस समय उनके पास जाने वाले को कष्ट पराजय, हानि आदि फल प्राप्त होंगे। आगे हुआ भी यही कि अग्निदेव उनके तेज को न सह सके और उस तेज को गंगाजी की धारा में छोड़ना पड़ा। उसी तेज से कुमार का जन्म हुआ। यहाँ वही नारद प्रणीत शिववास का गणित दे रहे हैं। जिससे शिवभक्तों को विशेष से शिवकृपा हो। शिवार्चन सम्बन्धी सभी अनुष्ठानों में इसका ज्ञान अत्यावश्यक है। अन्यथा साधक को शिववास के अनुरूप ही फल की प्राप्ति होती है। इसके साथ अन्य प्रकार की साधनायें आरंभ करने वालों की सुविधा एवं मनोवांछित फल प्राप्ति हेतु 'प्रयोगादि आरंभ चक्र' भी दिया है।

शिववास कारिका

तिथिं च द्विगुणीं कृत्य बाणैः संयोजयेत्तदा सप्तमिश्च हरेत्भागं शिववासं समुद्दिशेत्।।
एकेन वासः कैलासे द्वितीये गौरिसंन्निधौ तृतीये वृषमारूढः समायां च चतुष्टये।।
पंचमें भोजनेचैव क्रीड़ायां षण्मिते तथा श्मशाने सप्तशेषे च शिववास इतीरितः।।
कैलासे लमते सौख्यं गौर्यां च सुखसम्पदा वृषभेऽभीष्टसिद्धिः स्यात्सभा संतापकारिणी।।
भोजने च भवेत् पीड़ा क्रीड़ायां कष्टमेव च श्मशाने मरणं ज्ञेयं फलमेव विचारयेत्।।

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से वर्तमान तिथि की संख्या को दुगना कर दे। यदि कृष्ण पक्ष की तिथि हो तो उसमें 15 और जोड़ने के बाद दुगुना करें। उस संख्या में 5 और जोड़कर 7 का भाग दें। शेष वाले अंक के अनुसार शिववास का ज्ञान प्राप्त करें।

1. भगवान् शंकर प्रसन्न मुद्रा में कैलाश पर्वत पर बैठे है तथा उस समय जो उनकी उपासना करते हैं उसे वे सम्पूर्ण सौख्य आदि प्रदान करते हैं। इस शिववास से भोग–मोक्ष दोनों की प्राप्ति होती है। यह शिववास शुभ है।
2. माँ गौरी के समीप बैठे हैं। माता पार्वती जगत् के दीन–हीन पुत्रों के दुःखों की चर्चा कर रही हैं। यह सुनकर उनका चित् करुणार्द्र हो रहा है। ऐसे समय में पूजन करने से अतुल सम्पत्ति शालीनता आदि की कृपा सहज में कर देते हैं। यह भी शुभ है।
3. भगवान् शंकर वृषभ की सवारी पर बैठे आनंदित हो रहे हैं। यत्र–तत्र–सर्वत्र भ्रमण करते हुए याचना करने वालों की समस्त कामनाओं की पूर्ति करते हैं। यह भी शुभ है।
4. इस समय शिवजी सभा में बैठे हैं तथा विविध विषयों पर सभासदों के साथ विचार विमर्श कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में संतापदायक होते हैं। यह शिववास अशुभ है।
5. इस समय भगवान् शंकर भोजन करते रहते हैं। भोजन में विघ्न होने से रुष्ट होते हैं। पूजन करने वाले को पीड़ा देते हैं। उस समय जो दुनिया के पाप दोष खा रहे होते हैं वे कि प्रसाद रूप से दे देते हैं। यह शिववास अशुभ है।
6. इस समय शिव क्रीड़ारत हैं। इस समय विघ्न करने से पीड़ा, पराजय, हानि आदि फल प्राप्त होते हैं। यह शिववास भी अशुभ है।
7. इस समय भूतभावन श्मशान में वास कर रहे हैं। उस समय वे विनाशक शक्तियों से घिरे होते हैं। ऐसे सयम जो उनके पास जाता है उसे वे मृत्युदायक होते हैं। यह शिववास भी अशुभ है।

इस प्रकार का ज्ञान करने के बाद जो शिवपूजन आरंभ किया जाता है वह शुभ फलदायक होता है। शिवार्चन में यह अत्यावश्यक अंग है।

कृष्ण पक्ष में 1, 4, 5, 8 तथा शुक्ल पक्ष में 2, 5, 6, 9, 12, 13 को इसके अनुसार शिववास बनता है।

किसी भी अन्य अनुष्ठानादि का आरंभ इस मुहुर्त से करने से वह शीघ्र और अनुकूल फलदायक होता है। सुविधा के किए यही एक प्रयोगादि

आरंभ चक्र भी दे रहे हैं। इनकी गणना सूर्य के नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र (चन्द्र) तक गिनकर फल जानें।

।। अथवा प्रयोगादि आरंभ चक्रम्।।

नक्षत्र	सूर्य के नक्षत्र से फल	संख्या
3	हानि	3
3	सिद्धि	6
3	मृत्यु	9
4	शुत्रुभय	13
4	कामनापूर्ति	17
3	हानि	20
3	कामना पूर्ति	23
4	धनलाभ	27

||सामग्री रूद्राभिषेक की||

रोली	1 मी. सफेद वस्त्र	कमल के फूल
मोली (कलावा)	25 सेमी. लाल वस्त्र	कमल गट्टे
25 पान	1 धोती, 1 अगोछा	चन्दन(घिसा हुआ)
25 सुपारी	1 साड़ी ब्लाउज	केशर, कपूर
लौंग, इलायची	1 सुहाग पिटारी	1/2 कि. चावल
धूपबत्ती	पर्वतीजीके आमूषण	10 ग्रा. कालेतिल
250 ग्रा. घी	5 जनेऊ	10 ग्रा. जौ
रूई, माचिस	फूल, तुलसी, दूर्वा	गुलाबजल, इत्र
1 नारियल (पानी वाला)	धतूरा, अर्क पुष्प	केवड़ा जल
100 ग्रा. दही, शक्कर, शहद	शमीपत्र, बेलपत्र	25 मिट्टी केसिकोरे
रूद्राक्ष की माला	बिल्व फल	भस्म, भाँग
आसन बैठने के लिए	फूल की लड़ी	25 फल
ब्राह्मण वरण की सामग्री	1 ली. दूध	
ब्राह्मणवरण के वस्त्र आदि	1 कि. मिठाई	

सहस्रार्चन का समान

(फल, पुष्प, बिल्वपत्र, मेवा, नकद, सिक्के आदि कुछ भी हो सकता हैं)

नोट : पार्थिवेश्वर पर अभिषेक करने के लिए मिट्टी, 2 पट्टे, 1 चौकी, बाल्टी, लोटा, परात और जल की आवश्यकता होती है।

विषय–सूची

विषय	पृष्ठ

ॐ

।। श्री गणेशाय नमः ।।

शिव सपर्या पद्धति

एवं

श्री विश्वनाथ उपासना-विधिः

।। ॐ नमः शिवाय ।।

विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये ।।१।।
भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वास रूपिणौ ।।
याम्यां बिना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तस्थमीश्वरम् ।।२।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशी गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।।३।।

पूजन विधिः

भगवान आशुतोष देवाधिदेव महादेव जी का पूजन समस्त चराचर सृष्टि के लिए परम् कल्याण करने वाला होता है। इससे पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति होती है। आदिकाल से ही संसार में शिवोपासना के दो रूप चले आ रहे हैं। पहला रूप निराकार उपासना तथा दूसरा रूप साकार उपासना का है। यह दोनों विधियाँ एक ही तत्व की भिन्न-भिन्न उपासना विधियाँ हैं। निराकार उपासना लिंङ्गपूजा तथा साकार उपासना विग्रह पूजा है। लिंङ्गोपासना सर्वत्र प्रचलित है, विग्रहोपासना का भी अपना अलग स्थान है इसमें भी आगे जाकर दो रूप हो जाते हैं। पहला वैदिक तथा

दूसरा तांत्रिक है। इस पुस्तक में वैदिक उपासना की सामान्य रूप से प्रचलित विधि का संकलन किया गया है। जिससे श्रद्धालु शिवोपासकों को पूजा करने में सरलता एवं सुगमता हो तथा अवघड़ दानी भगवान शंकर की भक्ति एवं कृपा उन्हें दोनों ही प्राप्त हो।

आरम्भ में 'देवा भूत्वा देवं यजेत्' के अनुसार साधक शौच-स्नान-संध्योपासन आदि नित्यकर्मों से निवृत्त होकर मन-वाणी-बुद्धि का संयम करके पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके सुखासन पर बैठे। इसके बाद सदा-शिव का ऐसा ध्यान करे कि, वे शिव मेरे शरीर के भीतर और बाहर सर्वत्र व्याप्त हैं। मैं उनकी शरण में जा रहा हूँ और वे अपनी कृपा दृष्टि से मुझे कृतार्थ कर रहे हैं। इसके बाद शिखा बांधे तथा अनामिका अंगुली में सोना चाँदी, तांबा, पीतल, कांसा-कुशा आदि की पवित्री धारण करें और आगे लिखा मंत्र पाठ करे।

ॐ पवित्रेस्त्थोव्वैष्णव्व्यौसवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्म्यच्छिद्रेणपवित्रेणसूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्य यत्कामं पुनेतच्छकेयम्।। शु.य.१/१२

इसके बाद तीन आचमन करें -

'ॐ नारायणाय नमः' 'ॐ केशवाय नमः' 'ॐ माधवाय नमः' 'ॐ हृषीकेशाय नमः कह कर अंगुष्ठ मूल से ओठ पोंछे, इसके बाद अपने ऊपर जल छिड़कें :-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।।
यः स्मरेत् पुण्डीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तर शुचिः।।

इसके बाद हाथ में जल लेकर विनियोग छोड़ें :-

ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मोदेवता आसने विनियोगः।

फिर आगे लिखा मंत्र पढ़कर आसन पर जल छिड़कें :-

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोकाः देवि त्वं विष्णुनाधृता।।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम्।।

इसके बाद मस्तक पर भस्म का त्रिपुण्ड लगावें। बायें हाथ में भस्म रखकर जल से गीली करके बोलें :-

ॐ अग्निरिति भस्म, ॐ वायुरिति भस्म, ॐ जलमिति भस्म। ॐ स्थलमिति भस्म। ॐ व्योमिति भस्म। ॐ सर्व हवा इदं भस्म।

इसके बाद भस्म मस्तक पर लगावें :-

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने	ललाट पर
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं	ग्रीवा पर
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्	हृदय पर
ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्	भुजाओं पर

इसके बाद रुद्राक्ष धारण करें। रुद्राक्ष की माला का पंचोपचार पूजन करके नीचे लिखे मंत्र से धारण करें।

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपिता
नमस्तेऽअस्तुमामाहिᳬसीः। निर्वर्तयाम्म्या
युषेन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजा
स्त्वायसुवीर्य्याय।। शु.य.३/६३

इसके बाद प्राणायाम तथा विष्णु भगवान का स्मरण करें।

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्।।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

इसके बाद बायें हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से चारों तरफ छोड़ें तथा कहें :-

ॐ अपःसर्पन्तु ते भूताः ये भूता भूमि संस्थिता।।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानां पिशाचाः सर्वतो दिशः।।
सर्वेषामविरोधेन शान्तिकं तु करोम्यहम्।।

इसके बाद हाथ में पुष्पाक्षत लेकर आनोभद्रा आदि शान्तिपाठ अथवा स्वस्तिन इन्द्रो आदि मंत्रों से स्वस्तिवाचन करें :-

शान्तिपाठः

ॐ आनोभद्द्राः क्क्रतवोयन्तुव्विश्श्वतो
दब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः।। देवानो
यथासदमिद्वृधेऽअसन्नप्प्रायुवोरक्षितारोदिवे
दिवे।।१।। देवानाम्भद्द्रासुमतिर्ऋजूयतान्दे
वानाᳪरातिरभिनोनिवर्त्तताम्।। देवानाᳪ
सक्ख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुः प्प्रति
रन्तुजीवसे।।२।। तान्पूर्व्वयानिविदाहूमहे

व्वयम्भगमित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम् ।। अर्य्य
मणंव्वरूण ६ सोमम्मश्श्विनासरस्वतीन ‌ॅ सु
भगामयस्क्करत् ।।३।। तन्नोव्वातोमयो
भुव्वातुभेषजन्तन्मातापृथिवीतत्पिताद्यौ ?।।
तद्ग्रावाण ‌ॅ सोमसुतौमयोभुवस्तदश्श्विना
शृणुतन्धिष्ण्यासुवम् ।।४।। तमीशान
ञ्जगतस्तस्त्थुषस्प्पतिन्धियञ्जिन्न्वमवसे
हूमहेव्वयम् ।। पूषानोयथाव्वेदसामसंद्वृधे
रक्षितापायुरदब्ब्धः ‌ॅ स्वस्तये ।।५।। स्वस्ति
नऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवा ‌ॅ स्वस्तिनः पूषाव्विश्श्व
वेदा ‌ॅ ।। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमि ‌ॅ
स्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्द्दधातु ।।६।। पृषदश्श्वा
मरूत ‌ॅ पृश्श्निमातर ‌ॅ शुभंय्यावानोव्विद
थेषुजग्गमय ‌ॅ ।। अग्निर्जिह्वामनव ‌ॅ सूर
चक्षसोव्विश्श्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह
।।७।। भद्रङ्कर्णेभि ‌ॅ शृणुयामदेवाभद्र

म्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्रा ऽः ।। स्थिरैरङ्गैस्तु
ष्टुवा ऽँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः
।।८।। शतमिन्नुशरदो ऽअन्तिदेवा यत्रा
नश्चक्राजरसन्तनूनाम् ।। पुत्रासो यत्रपितरो
भवन्तिमानो मध्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोः ।।९।।
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्मातासपिता
सपुत्र ः ।। व्विश्वेदेवा ऽअदितिः पञ्चजना
ऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ।।१०।।
शु.य.२५/१४ से २३
द्यौ ः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवीशान्ति
रापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।। व्वनस्पत
यः शान्तिर्व्विश्श्वेदेवा ः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः
सर्व्व ँ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामा
शान्तिरेधि ।।१२।। ३६/१७ यतोयतः समीहसे
ततोनो ऽअभयङ्कुरु ।। शन्नः कुरुप्रजा
भ्योभयन्नः पशुभ्यः ।।१३।। ३६/२२

ॐ स्वस्तिन ऽइन्द्रोवृद्धश्श्रवा ꣳ स्वस्ति
न÷ पूषाविश्श्ववेदा ꣳ स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽ
अरिष्टनेमि ꣳ स्वस्तिनोबृहस्पतिर्द्दधातु ।।१।। २५/१९
ॐ पय÷ पृथिव्याम्पय ऽओषधीषुपयो
दिव्व्यन्तरिक्षेपयोधा ꣳ । पयस्वती ꣳ प्रदिश÷
सन्तुमह्यम् ।।२।। १८/३६ ॐ विष्णोरराटमसि
विष्णो ꣳ श्नप्त्रेस्थोविष्णो ꣳ स्यूरसिवि
ष्णोर्द्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसिविष्णवेत्त्वा
।।३।। ५/२१ ॐ अग्निर्द्देवताव्वातोदेवतासूर्य्यो
देवताचन्द्रमादेवताव्वसवोदेवतारुद्द्रादेवतादित्या
देवतामरुतोदेवताविश्श्वेदेवादेवताबृहस्पति
र्द्देवतेन्द्रोदेवताव्वरुणोदेवता ।।४।। १४/२० ॐ
द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्ति÷ पृथिवी
शान्तिराप ꣳ शान्तिरोषधय ꣳ शान्ति÷ ।।
व्वनस्प्पतय ꣳ शान्तिर्व्विश्श्वेदेवा ꣳ शान्तिर्ब्रह्म

शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्ति
सामाशान्तिरेधि ।।५।। ३६/१७ ॐ विश्श्वानिदेव
सवितर्द्दुरितानिपरासुव । यद्भद्रन्तन्नऽआसुव
।।६।। ३०/३ ॐ यतोयतः समीहसेततोनोऽ
अभयङ्कुरु ।। शन्नः कुरुप्प्रजाब्भ्योऽभय
न्नः पशुब्भ्यः ।।७।। ३६/२२ ॐ इमारुद्राय तवसे
कपर्द्दिनेक्षयद्वीरायप्प्रभरामहेमती? ।।
यथाशमसद्द्विपदेचतुष्पदेव्विश्श्वम्पुष्टङ्
ग्रामेऽअस्म्मिन्ननातुरम् ।।८।। १६/४८ ॐ एतन्ते।
देवसवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्बृहस्पतयेब्ब्रह्मणे। तेन
यज्ञमवतेनयज्ञपतिन्तेनमामव ।।९।। २/१२ ॐ
मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञ
मिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञꣳ समिमन्दधातु ।
विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ
।।१०।। २/१३ ॐ एषवैप्प्रतिष्ठान्नामयज्ञोयज्ञे
तेनयज्ञेनयजन्तेसर्व्वमेवप्रतिष्ठितम्भवति ।।११।।
शतपथ ब्राह्मण

ॐ गणानान्त्वागणपति ঌ हवामहेप्रियाणा न्त्वाप्रियपति ঌ हवामहेनिधीनान्त्वानिधि पति ঌ हवामहेव्वसोमम। आहमंजानि गर्ब्भधमात्वमंजासिगर्ब्भधम्।।१२।।२३/१९

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेम्बालिकेनमानयति कश्च्चन। ससस्त्यश्श्वक ঽसुभद्रिकाङ्का म्पीलवासिनीम्।।१३।।२३/१८

इसके बाद चावल छोड़ दें तथा हाथ जोड़ें।

ॐ सिद्धिबुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणधिपतये नमः । ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः । ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः । ॐ वास्तुमंडलोक्त देवताभ्यो नमः । ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः । ॐ क्षेत्रदेवताभ्यो नमः । ॐ कुलदेवताभ्यो नमः । ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः । ॐ एतत्कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । ॐ मातापितृगुरुचरणकमलेभ्यो नमः । ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक। धूम्रकेतु र्गणाध्यक्षोभालचन्द्रो गजानन।। द्वादशैतानि नामानि यः पठेत्छृणुयादपि।। विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तरस्य न जायते।। शुक्लाम्बर-

धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।। अभीप्सितार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।। वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।। अविघ्नं कुरू में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।। सर्वमङ्गल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।। सर्वेब्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनाद्रनः।। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।। वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानी मणिकर्णिकाम्।। लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजय।। येषामिंदीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दन।। अनन्याश्चिन्तयन्तोमां ये नरा पर्युपासते।। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। तदेव लग्नं सुबलं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽघ्रियुगं नमामि।।

संकल्प

इसके बाद दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प, सुपारी, दक्षिणा आदि लेकर एकाग्र मन से संकल्प करें।

ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोन्हि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे ब्रह्मावर्तैक देशे गंगायमुनयोर्मध्ये बौद्धावतारे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे कुमारिका क्षेत्रे जम्बूद्वीपे

भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तरे ततः प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये....नाम्निसम्वत्सरे....संख्यके.... अयने.... ऋतौ मासानां मासोत्तमे....मासे शुभे.... पक्षे.... वासरान्वितायां.... योगे.... करणे एवं पंचाङ्गशुद्धे..... राशि स्थिते श्रीसूर्ये..... राशि स्थिते चन्द्रे.... राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषुग्रहेषु यथा-यथा स्थानस्थितेषु एवं ग्रहे गुणगणविशेषेण विशिष्टानां जन्मान्तर पुण्यफलोदयस्वरूपेण प्राप्ते पुण्यावसरे.... गोत्रः...... शर्माहं सपत्नीकोऽहं सपरिवारोऽहं सकलशास्त्र श्रुति-स्मृति वेदोक्त पुराणोक्त शुभफल प्राप्तर्थं उत्तमायुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं स्थिर धनसुख सम्पत्ति प्राप्तये अस्थिर लक्ष्मीं चिरकालपर्यन्तं संरक्षार्थं सकल कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक सकल तापोपशम नार्थं राजभय चौरभय सर्पभय शत्रुभय अग्निभय रोगभय यानपातनादिभय अभिचारभय दुस्संगजन्य आकस्मिकभय तथा नानागतभय निवारणार्थं नवग्रहजन्य पीड़ा शान्त्यर्थं दैहिक दैविकाधिभौतिक त्रिविधता पोप शमनार्थं पुरुषार्थचतुष्टय सिद्ध्यर्थं उपस्थितानां सर्वेषां जनानां परम कल्याण कामः भगवद्भवानी शंकर देवता प्रीत्यर्थं.... लिङ्गोपरि यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारैः ध्यानन्यासादियुतं यथासंख्याकैः ब्राह्मणैः सह शिवपूजन रुद्राभिषेक कर्माऽहं करिष्ये। तदङ्गत्वेन शिवपरिवार स्थदेवानां पूजनमपि करिष्ये।

ॐ यज्जाग्ग्रतोदूरमुदैतिदैवन्तदु-
सुप्तस्य तथैवैति।। दूरङ्गमञ्ज्जयोतिषा
ञ्ज्योतिरेकन्तन्नमे मनः शिव
सङ्कल्प्पमस्तु।। शु.य.३४/१

इसके बाद कर्मपात्र की स्थापना करें। चन्दन अक्षत पुष्प आदि जल में छोड़कर हाथ ढकें तथा मंत्र बोलें :-

ॐ तत्वा यामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमान
स्तदाशास्तेयजमानोहविर्ब्भिः।। अहेडँ-
मानो व्वरुणे हबोध्युरुशꣳ समानऽ-
आयुꣳप्रमोषीꣳ।। १८/४६

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदाः नदाः।
आयान्तु मम शान्तर्थं दुरितक्षय कारकाः।।

इसके बाद उसी जल से अपना तथा सामग्री का प्रोक्षण करेः-

ॐ पुनन्तुमा देवजनाऽपुनन्तु मन
साधियः पुनन्तुव्विश्श्वा भूतानि जात
वेदꣳपुनीहिमा।। १९/३९

इसके बाद गंधादि से पृथ्वी का पूजन करें।

ॐ महीद्यौः पृथिवीचनइऽमंय्यज्ञ म्मिमिक्षताम्।। पिपृतान्नोभरीमभिः।। ८/३२

इसके बाद पृथ्वी पर औंधे हाथ रखकर बोलें :-

ॐ मानस्तोके तनयेमानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्श्वेषु रीरिषः।। मानो व्वीरान्नुद्र्भामिनो व्वधीर्ह- विष्म्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।। १६/१६

इसके बाद पंचोपचार विधि से दीप पूजन करें :-

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्श्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत।। श्श्रोत्राद्वायुश्श्च प्राणश्श्च मुखादग्निरजायत।। ३१/१२

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं अन्धकार निवारकः।।
इमां मया कृतापूजां गृह्णस्तेजः प्रबर्धय।।

ॐ कर्मसाक्षिणे दीपाय नमः।।

यदि दिवाकाल में पूजन हो तो सूर्य को तथा रात्रिकाल के पूजन में चन्द्रमा को अर्घदान एवं नमस्कार करें।

सूर्यार्घदान

ॐ आकृष्ष्णेन रजसा व्वर्तमानो

निवेशयन्न मृतम्मर्त्यञ्च ।। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।। $\frac{३३}{४३}$

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशि जगत्पते ।
अनुकम्पय मां भक्तया गृहणार्घं दिवाकर ।।

सूर्य नमस्कार

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तर सहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ।।

चन्द्रार्घ दान

ॐ इमन्देवाऽअसपत्नꣳ सुवद्धम्महते क्षत्रायमहतेज्ज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्ज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय । इममुमुष्य्यपुत्रममुष्यैपुत्रमष्यै व्विशऽएषवोमीराजासोमोस्म्माकम्ब्राह्मणाना ꣳ राजा । $\frac{९}{४०}$

समुद्र मथनोज्जातः शिवभालौ प्रभाकर ।
अनुकम्प मां देव गृहाणार्घं निशाकर ।।

चन्द्र नमस्कार

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम् ।।

शिवार्चन से समस्त यज्ञादि कर्मों का फल प्राप्त होता है। अतएव उसमें कहे हुए देवताओं का एकतन्त्री क्रम से पूजन अथवा स्मरण मात्र ही कर लेना चाहिये। उनके निमित्त एक दो पुष्प अर्पण करना चाहिए।

अभीप्सितार्थं सिद्ध्यर्थं पूजितो यःसुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।

ॐ नमोगणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्श्चवो नमोनमोव्व्रातेब्भ्योव्व्रातपतिब्भ्यश्श्चवोनमो नमोगृत्सेब्भ्योगृत्सपतिब्भ्यश्श्चवोनमोनमो व्विरूपेब्भ्योव्विश्श्वरूपेब्भ्यश्श्चवोनमो नमꣳ।। १६/२५

ॐ गणपतये नमः

हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकर प्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ समक्ख्ये। देव्व्या धिया सन्दक्षिणयो रुचक्षसा।। मामऽआयुꣳ प्प्रमोषीर्मोऽअहन्तव व्वीरंविदेय तवदेवि सन्दृशि।। ४/२३

ॐ अम्बिकायै नमः

शुद्ध स्फटिक संकाशं जलेशं-पादपां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कंभ सर्ज्जनीस्त्थो व्वरुणस्यऽऋत-सदन्न्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमसी व्वरुणस्यऽऋत सदनमासीद ।। ४/३६

ॐ अपांपतिवरुणाय नमः

वास्तोष्पतिं विदिकार्यं भूशय्याभिरतं प्रभुम् ।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्म फलप्रदम् ।।

ॐ व्वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्म्मान स्वावेशोऽअनमीवो भवानः ।। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदेशं चतुष्पदे ।।

ॐ वास्तुमण्डलोक्त देवताभ्यो नमः

योगिन्यः शक्तिसम्पन्नाः नानारूपाः सुमंगलाः ।
महाशक्ति धरादेव्यः मखरक्षां कुरुष्वमे ।।

ॐ योगे योगे तवस्तरं व्वाजेवाजे हवामहे । सखायऽइन्द्रमूतये ।। ११/१४

ॐ चतुष्षष्ठियोगिनीभ्यो नमः

भूतप्रेतपिशाचाद्यै आवृतं शूलपाणिनम् ।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः ।।

ॐ नहिस्प्पशमविदन्नन्न्यमस्म्माद्वै
श्श्वानरात्पुरऽएतारमग्ग्ने ऽ ।एमेँनमवृधन्न
मृताऽअमर्त्यंवैश्श्वानरक्षैत्रजियायदेवा ऽ ।। ३३/६०

ॐ क्षेत्राधिपतये नमः।

देवदेव जगन्नाथं भक्तानुग्रह कारकम्।।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुं आवाहयाम्यहम्।।

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुष ऽ सहस्राक्ष ऽ
सहस्त्रपात्।। सभूमिं ऽ सर्व्वतस्पृत्वा
त्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।। ३१/१

ॐ सर्वतोभद्रमंडलोक्तदेवताभ्योनमः।।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

ॐ आयङ्गौ ऽ पृश्निरक्रमीदसदन्न्मा
तरम्पुर ऽ ।। पितरञ्चप्प्रयंत्स्वः ।। ३/६

ॐ मातृभ्यो नमः।।

नमः सूर्य्याय चन्द्राय मंगलाय बुधाय च।
गुरू शुक्रश्च शनये राहवे केतवे नमः।।

ॐ ग्रहाऽऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो-
व्विप्प्रायमतिम्।। तेषां व्विशिप्प्रियाणां
व्वोहमिषमूर्ज्ज ऽ समग्ग्रभ मुपयामगृ-

हीतोऽसीन्द्रायत्त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्म्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।। $\frac{६}{४}$

ग्रहमण्डलोक्त देवताभ्यो नमः

इन सब देवताओं का आवाहन करके सामान्य रूप से पूजन करें एवं यह कहता हुआ जल छोड़ें

अनेनार्चेन सर्वे आवाहित देवा प्रीयन्ताम् न मम

इसके उपरान्त शिवार्चन आरंभ करें :-

न्यास मूलमिदं प्रोक्तं न्यास पूर्वं तु कारयेत्।।
न्यासेन रहितं कर्म अर्घं गृह्णन्ति राक्षसाः।।

इसके उपरान्त हाथ में जल लेकर :-

विनियोगः ॐ नमो भगवते रुद्रायेति दशाक्षर मन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः विराट् छन्दः श्रीरुद्रोदेवता न्यासे विनियोगः।।

जल छोड़ दें तथा अंगों का स्पर्श करें।

ॐ नमः मूर्ध्नि। ॐ नं नमः नासिकायाम्।
ॐ मों नमः ललाटे। ॐ भं नमः मुखे।
ॐ गं नमः कण्ठे । ॐ वं नमः हृदये।।
ॐ तें नमः दक्षिण हस्ते। ॐ रुं नमः वामहस्ते।
ॐ दां नमः नाभौ। ॐ यं नमः पादयोः।।

एवं न्यास विधानेन निष्पापोजायते नरः।।
आत्मानं रूद्ररूपं हि शरीरेण विचिन्तयेत्।।

ॐ मानो महान्तमुतमानो ऽअर्ब्भ कम्मान ऽउक्षन्त मुतमानऽ उक्षितम्।।

मानो व्वधी ᳪ पितरम्मोतमातरम्मान्नः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषᳪ ।। १६/१५

यह मन्त्र पढ़कर ज्योति स्वरूप शिव का ध्यान मस्तक पर करें।

भगवान शंकर के पूजन में उनके प्रधान आठ तत्वों की शिवजी के समान ही पूजा करें। ये शिवगण कहलाते हैं। गणेश, पार्वती, कुमार, वीरभद्र, कुबेर, कीर्तिमुख, सर्प, नन्दीश्वर और नवें स्वयं ज्योति आदिदेव महादेव हैं। इन गणों का पूजन पृथक रूप से अथवा शिव के साथ-साथ भी हो सकता है। इनका पूजन सुपारी, तंदुलपुंज, प्रतिमा, पार्थिवलिङ्ग आदि में भी कर सकते हैं। इनके पूजन के बिना शिवपूजन अपूर्ण रहता है।

गणपति आवाहन

दधानं भृङ्गालीमनिशममले गंडयुगले।
ददानं सर्वार्थान् निज चरण सेवा सुकृतिने।
दयाधारं सारं निखिल निगमानामनुदिनम्।
गजास्यं स्मेरास्यं तमिह कलये चित्तनिलये।

गणपति ध्यानम्

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

ॐ गणानान्त्वा गणपतिᳬ हवामहे प्रियाणान्त्वाप्रियपतिᳬ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिᳬ हवामहे व्वसोमम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।। २३/१९

ॐ गणपतये नमः। गणपतिं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि भो गणपते! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण मम सन्मुखो वरदोभव। गणपतये नमः।

पार्वती आवाहन

मुखे ते ताम्बूलं नयन युगले कज्जलकला।।
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक लता।।
स्फुरत्कांचीशाटी पृथु कटि तटे हाटकमयी।।
भजामस्त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।

पार्वती ध्यानम्

हेमाद्रि तनयां देवीं वरदां शंकर प्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्च्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।। २३/१८

ॐ पार्वत्यै नमः। पार्वतीं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। भो पार्वति इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण मम सन्मुखी वरदाभव। पार्वत्यै नमः।

अथषड्मुख आवाहन

शिखीवाहोदेवः समरभयकारी शिवसुतः।।
परमसेनानी त्वं षड्मुख तथा द्वादशभुजः।।
महाशक्तिः शोभा अमरगण सेवित सर्वदा।।
व्रजामः त्वां शरणं प्रणतभयहारी ते यशः।।

स्वामिकुमार ध्यानम्

शंकरस्तेज सम्भूतं कुमारं शिखिवाहनम्।।
षड्मुखं कृत्तिकासूनं गुहम् आवाहयाम्यहम्।।

ॐ यत्रबाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव। तन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतुविश्श्वाहाशर्मयच्छतु।। १७/४८

ॐ स्वामी कुमाराय नमः। स्वामि कुमारं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। भो कुमार! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण मम सन्मुखो वरदोभव। स्वामी कुमाराय नमः।

अथ वीरभद्र आवाहन

महावीरो भद्रः क्रतुफल प्रदाता वै पुराः।।
कृतः यज्ञः ध्वंसः क्रतुपति सदेवाः अधिगणाः।।
महाकोपाज्जातः शिवगण प्रधानो बलनिधिः।।
मखं रक्षो देव सकल समुदाये कुरू कृपा।।

वीरभद्र ध्यानम्

वीरभद्रो महातेजो शंकरस्य गणाग्रणी।।
इहागच्छ महावीर यज्ञरक्षां कुरूष्व मे।।

ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः।। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳪ सस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः।।८।। २५/२१

ॐ वीरभद्राय नमः। वीरभद्रं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। भो वीरभद्र! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण मम सन्मुखो वरदोभव। वीरभद्राय नमः।

अथ कुबेर आवाहन्

धनेशो यक्षेशो गिरिश प्रियदेवो निधिपतिः।।
नरोवाहः देवः सित ध्वज पताका विजयते।।
पुरी अलकाधीशो वृहत्तनुधारी कुरू दयाम्।।
नरेन्द्रानाम् नाथः कठिन दुःख दारिद्र्य दहनम्।।

कुबेर ध्यानम्

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्ष पूजितम्।।
दिव्यदेहं महाकायं नरयानगतिं विभुम्।।

ॐ व्वय ँ सोमव्व्रते तवमनंस्तनूषु
बिब्भ्रत ँ।। प्रजावन्त ँ सचेमहि।। ३/५६

ॐ कुबेराय नमः। कुबेरं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि भो। कुबेर! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण मम सन्मुखो वरदोभव। कुबेराय नमः।।

अथ कीर्तिमुख आवाहन

मुखे नैव कीर्तिः हुतवह सदेवाः नरवराः।।
त्वया दत्तं भोज्यं जगतफल दायी सुखकराः।।
कृते पूजायागे भवयुतभवानी सर्वदा।।
धनं धान्यं सौख्यं परम सायुज्यं देहि मे।।

कीर्तिमुख ध्यानम्

सर्वअङ्गमयमीशः विश्वरूपः कहाक्रतुः।।
इहागच्छ महादेव पूजां मे सफली कुरु।।

ॐ असवेस्वाहा व्वसवेस्वाहा व्विभुवे स्वाहा व्विवस्वतेस्वाहा गणश्श्रियेस्वाहा गणपतयेस्वाहा भिभुवेस्वाहाधिपतयेस्वाहा शूषायस्वाहा सꣳसर्प्पायस्वाहा चन्द्रायस्वाहा ज्ज्योतिषेस्वाहा मलिम्म्लुचायस्वाहा दिवा पतयते स्वाहा।। २२/३०

ॐ कीर्तिमुखाय नमः। कीर्तिमुखं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। भो कीर्तिमुख! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण मम सन्मुखो वरदोभव।। कीर्तिमुखाय नमः।

सर्प आवाहन

अनन्तद्याज्ञः नागाः विपुलफण युताः मणियुताः।
महादेव कण्ठे बलयकृत शोभा युत सदाः।।
महायोगी रूपान् जगतभयकारी अभयदान्।
नमामि तान् देवान् विरल सरलान् तान् विषधराम्।।

अथ सर्प ध्यानम्

अनन्ताद्यान् महाकायान् फणासप्तकमण्डितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान्, नानामणि विभूषितान्।।

ॐ नमोस्तु सर्प्पेब्भ्यो ये के च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवितेब्भ्यः सर्पेब्भ्यो नमः।। १३/६

ॐ सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। भो सर्पः! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण मम सन्मुखो वरदोभव।। सर्पेभ्यो नमः।

नन्दीश्वर आवाहन

सदानन्दी नन्दी जगतपति धारी सुरपतिः।
महा धर्मो रूपः जनमन विहारी पशुपतिः।।
सदा श्रद्धा भक्तिः भव युत भवानी पाहिमाम्।
मखेऽस्मिन् सांगंत्वं महत्पुण्यं दीयताम्।।

नन्दीश्वर ध्यानम्

नन्दीश्वर महायोगि धर्मरूपः शिवप्रियः।
इहागत्य महायज्ञे श्रद्धाभक्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ आशुᳪशिशानो व्वृषभोन भीमो घनाघनᳪक्षोभणश्चर्षणीनाम्।। सङ्कन्द नोनिमिषऽ एकवीरᳪशतꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः।। १७/३३

ॐ नन्दीश्वराय नमः। नन्दीश्वरं आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। भो नन्दिन्! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण मम सन्मुखो वरदोभव।। नन्दीश्वराय नमः।

शिव आवाहन

महोक्षः खट्वाङ्ग परशुरजिनं भस्मफणिनः।
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।।
सुरास्तां तां वृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां।
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।।

कैलाश पीठासन मध्य सस्थं
भक्ताः सनन्दादिभिरर्च्य मानम्।
भक्तार्तिदावानल प्रमेयं
ध्यायेदुमालिङ्गित विश्वभूषणम्।।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरि निभं चारुचन्द्रा वसंतं।।
रत्नाकल्पोज्जवलाङ्ग परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम्।।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैः व्याघ्रकृत्तिं वसानम्।।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।
कैलाशशिखरस्थं पार्वतीपतिमुत्तमम्।।
यथोक्तं रूपिणं शंभु निर्गुणंगुणरूपिणं।।
पंचवक्त्रं दशभुजं त्रिनेत्रं वृषभध्वजम्।।
कर्पूर गौरं दिव्याङ्ग चन्द्रमौलि कपर्दिनम्।।
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च गजचर्माम्बरं शुभम्।।
वासुक्यादि परीताङ्गं पिनाकाद्यायुधान्वितम्।।
सिद्धयौऽष्टौ च यस्याग्रे नृत्यन्ति निरन्तरम्।।
जयजयेतिशब्दैश्च सेवितं भक्तपुञ्जकैः।।
तेजसा दुस्सहैरेव दुर्लंघ्यं देवसेवितम्।।
शरण्यं सर्व सत्वानाम् प्रसन्नमुखपंकजम्।।
वेदैः शास्त्रैर्यथागीतं विष्णुब्रह्मनुतं सदा।।
भक्तवत्सलमानन्दं शिवं आवाहयाम्यहम्।।

(शिवपुराण)

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। $\frac{१६}{४१}$ ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्।। तेषा ँ

सहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ।। १६/५४

ॐ साम्ब सदाशिवाय नमः। साम्ब सदाशिवाय सपरिवाराय आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। भो जगदीश्वर! इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण मम सन्मुखो वरदोभव।। साम्ब सदाशिवाय नमः।

आद्याहि भगवान् शंभो शर्वस्तं गिरिजापते।।
प्रसन्नो भव देवेश नमस्तुभ्यं नमो नमः।।

इसके बाद वैदिक मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठा करें :-

ॐ अयम्पुरोभुवस्तस्यप्राणोभौवाय नोव्वसन्तः प्प्राणायनोगायत्रीव्वासन्ती गायत्र्यैगायत्रङ्गायत्रादुपाꣳ शुरूपाꣳशो स्त्रिवृत्त्रिवृतोरथन्तरंव्वसिष्ठ ऽऋषि÷प्रजापति गृहीतयात्त्वयाप्राणङ्गृह्णामिप्रजाभ्य÷ ।। १३/५४

ॐ अयन्दक्षिणा। व्विश्श्वकर्म्मातस्यमनो व्वैश्श्वकर्मणङ्ग्रीष्म्मोमानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्म्मी त्रिष्टुभ÷स्वारꣳस्वारादन्तर्य्यामोन्तर्य्यामा त्पञ्चदशः पञ्चदशाद्बृहद्भारद्वाज ऽऋषि÷प्र जापतिगृहीतयात्त्वयामनोगृह्णामिप्रजाभ्य÷ ।। १३/५५

ॐ अयम्पश्श्चाद्विश्श्वव्व्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्श्वव्व्यचसंव्वर्षाश्श्चाक्षुष्ष्योजगती व्वार्षीजगत्त्याऽऋक्क्खसमम्मृक्क्खसमाच्छुक्र॒ः शुक्रात्सप्तदश॒ः सप्तदशाद्वैरूपञ्जमदग्नि र्ऋषिः प्रजापतिगृहीतयात्त्वयाचक्षुर्ग्गृह्णामि प्रजाब्भ्यः ॥ १३/५६

ॐ इदमुत्तरात्त्स्वस्तस्यश्श्रोत्त्रꣳ सौवꣳ शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप्शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडान्मन्थी मन्थिनऽएकविꣳश ऽएकविꣳ शाद्वैराजं व्विश्श्वामित्त्रऽऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्त्वयाश्श्रोत्त्रङ्गृह्णामिप्रजाब्भ्यः ॥ १३/५७

ॐ इयमुपरिमतिस्तस्यैव्वाङ्मत्त्या हैमन्तोव्वाच्च्य॒ः पङ्क्तिर्हैमन्तीपङ्क्तय्यै निधनवन्निधनवत्ऽआग्ग्रयणऽआग्ग्रयणात्त्रि णवत्त्रयस्त्रिꣳ शौत्त्रिणवत्त्रयस्त्रिꣳ शाब्भ्याꣳ

शाक्करैवतेव्विश्श्वकर्मऽऋषिः प्रजापति गृहीतयात्त्वयाव्वाचङ्गृह्णामिप्रजाब्भ्यो लोकन्ताऽइन्द्रम् ।।५।। १३/५८

इसके बाद हाथ जोड़कर प्रार्थना करें :-

ॐ इमारुद्द्राय तवसेकपर्द्दिनेक्षयद्द्वीराय प्रभरामहेमती? । यथाशमसद्द्विपदेचतुष्प्प देव्विश्श्वम्पुष्ट्टंङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ।। १६/४८

भगवन् देवदेवेश यावत्पूजावसानकम् । तावत्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधोभव ।।
भगवन् देवदेवेश यावत्पूजावसानकम् । तावत्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधोभव ।।
भगवन् देवदेवेश यावत्पूजावसानकम् । तावत्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधोभव ।।

इसके बाद शिवपूजन आरम्भ करें :-

आसन

विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरप्रिय ।
आसनन्दिव्यमीशान दास्येऽहन्तुभ्यमीश्वर ।।

ॐ एतत्ते रुद्द्रावसन्तेनपरोमूजवतोतीहि ।। अवततधन्न्वापिनाकावस ँ कृत्तिवासाऽअहिँ सन्न ँ शिवोऽतीहि ।। ३/६१

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। दिव्यासनम् समर्पयामि ।।

पाद्य

महादेव महेशान शर्वस्त्वं गिरिजापते।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्षाय मीढुषे।। अथोयेऽअस्यसत्वानोहन्तेब्भ्यो करन्नमः।। १६/८

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। पादयोः पाद्यं समर्पयामि।।

अर्घ

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते करूणाम्बुधे।
करूणाकर मे देव गृहाणार्ध्यं नमोऽस्तुते।।

ॐ तत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।। तन्नो रूद्रः प्रचोदयात्।।

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। करयोरर्घं समर्पयामि।।

आचमन

सर्व तीर्थ समायुक्तं सुगंधं निर्मलंजलम्।
आचम्यतां मयादत्तं प्रसीद परमेश्वर।।

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात्।। ३/६०

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। आचमनीयम् समर्पयामि।।

मधुपर्क

कांस्ये कांसेनपिहितो दधिमध्वाज्य संयुतः ।
मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ यन्मधुनो मधव्यं परम७रूपमन्नाद्यम् ।।
तेनाऽहं मधुनो नधव्येन परमेणरूपेणान्नाद्येन
परमो मधव्योन्नादोऽसानि ।।

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। मधुपर्कं समर्पयामि ।।

निर्मलोदक स्नान

गंगासरस्वतीरेवा पयोष्णीनर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽसि मयादेव ग्रहशान्तिं कुरूष्वमे ।।

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्य
स्क्कम्भसर्ज्जनीस्त्थोव्वरुणस्य ऽऋतसदन्न्य
सिव्वरुणस्य ऽऋतसदनमसीव्वरुणस्य ऽऋत
सदनमासीद ।। ४/३६

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। निर्मलोदक स्नानं समर्पयामि ।।

पयः स्नानं

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ।।

ॐ पयः पृथिव्याम्पय ऽओषधीषुपयो

दिव्यन्तरिक्षेपयोधाः। पयस्वती ःप्रदिशः सन्तुमह्यम् ।। १८/३६

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। पय स्नानं समर्पयामि ।।

जलस्नान

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन। महेरणायचक्षसे। ११/५०

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। जल स्नानं समर्पयामि ।।

दधि स्नान

पयस्स्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ दधिक्क्राव्णोऽअकारिषञ्जिष्णोऽरश्वस्यवाजिनः। सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूꣳषितारिषत् ।। २३/३२

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। दधिस्नानं समर्पयामि ।।

जल स्नान

ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः। उशतीरिवमातरः ।। ११/५१

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। जल स्नानं समर्पयामि ।।

घृत स्नान

नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ घृतङ्घृतपावान ं पिबतव्वसांव्वसा
पावान ं पिबतान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा।
दिशः प्रदिश ऽआदिशोव्विदिश ऽउद्दिशो
दिग्भ्यः स्वाहा।। ६/१६

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। घृत स्नानं समर्पयामि।।

जल स्नान

ॐ तस्मा ऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयाय
जिन्वथ। आपोजनयथाचन ं।। ११/५२

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। जल स्नानं समर्पयामि।।

मधु स्नान

तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ मधुव्वाता ऽऋतायतेमधुक्षरन्ति
सिन्धव ं। माद्ध्वीर्न्न ं सन्त्वोषधी ं। मधुन
क्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौ

रस्तुनः पिता। मधुमान्नोव्वनस्प्पतिर्म्मधुमाँ २ अस्तुसूर्य्यः। माध्वीर्गावोभवन्तुनः।

१३/२७, २८, २९

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। मधुस्नानं समर्पयामि।

जल स्नान

ॐ इमम्मेव्वरुणश्श्रुधीहवमद्याचमृडय। त्वामवस्युराचके। २१/१

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। जल स्नानं समर्पयामि।।

शर्करा स्नान

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टि कारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ अपा रसमुद्वयस सूर्य्येसन्त समाहितम्। अपा रसस्ययोरसस्तंव्वो गृह्णाम्म्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्म्येषतेयोनिरिन्द्रायत्त्वाजुष्ट तमम्।। ९/३

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

जल स्नान

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु

पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तुनः ।। ३६/१२

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। जल स्नानं समर्पयामि।।

पंचामृत स्नान

पयोदधिघृतं चैव मधुशर्करया युतम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ ऊर्क्कर्चं मेसूनृताचमेपयश्चमे
रसश्चमेघृतञ्चमेमधुचमेसग्धिश्चमे
सपीतिश्चमेकृषिश्चमेवृष्टिश्चमे
जैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्। १८/९

अथवा

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्तिसस्रो
तसः। सरस्वतीतुपञ्चधासोदेशेभवत्सरित्। ३४/११

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। मिलितपञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।।

शुद्ध जल स्नान

कावेरी नर्मदावेणी तुङ्गभद्रा सरस्वती।।
गंगा च यमुना चैव ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्।।

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालोमणिवाल
स्तऽआश्विनाःश्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्रा

यपशुपतयेकर्ण्णायामाऽअवलिप्तारौद्द्रानभो
रूपाꣳपार्ज्जन्न्याः ।।२४/३

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।।

इसके बाद आगे लिखे १६ मंत्रों से अथवा शिवअथर्वशीर्ष से श्रृंग या किसी सछिद्रपात्र से शिव का अभिषेक करें।

ॐ नमस्तेरुद्द्रमन्न्यवऽउतोतइषवेनमः ।।
बाहुब्भ्यामुततेनमः ।।१।। यातेरुद्द्र
शिवातनूरघोरापापकाशिनी ।। तयानस्तन्न
वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ।।२।।
यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ।।
शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीꣳपुरुष
ञ्जगत् ।।३।। शिवेनव्वचसात्त्वागिरिशा
च्छाव्वदामसि ।। यथानꣳसर्व्वमिज्जगद
यक्ष्मꣳसुमनाऽअसत् ।।४।। अद्ध्यवोच
दधिवक्क्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक् ।। अँही
श्च्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च्चयातुधान्न्यो

धराचीः परासुव ।।५।। असौयस्ताम्म्रोऽ
अरुणऽउतबब्भ्रुः सुमंगलः ।। येचैनꣳ
रुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषाꣳ
हेडऽईमहे ।।६।। असौयोवसर्प्पतिनील
ग्ग्रीवोव्विलोहितः ।। उतैनङ्गोपाऽअदृ
श्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः
।।७।। नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्षाय
मीढुषे ।। अथोयेऽअस्यसत्वानोऽहन्तेब्भ्योऽ
करन्नमः ।।८।। प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयो
रात्क्न्योंर्ज्ज्याम् ।। याश्श्चतेहस्तऽइषवः
पराताभगवोव्वप ।।९।। व्विज्ज्यन्धनुः
कपर्द्दिनोव्विशल्ल्योबाणवाँ२उत ।। अनेे
शन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः
।।१०।। यातेे हेतिम्मीढुष्टमहस्तेेब
भूवतेधनुः ।। तयास्म्मान्न्विश्श्वतस्त्वम

यक्ष्म्मयापरिभुज ।।११।। परितेधन्न्वनोहे
तिरस्म्मान्न्वृणक्तुव्विश्श्वत÷ ।। अथोय ऽ
इषुधिस्तवारे ऽअस्म्मन्निधेहितम् ।।१२।।
अवतत्यधनुष्ट्वᳬ सहस्राक्षशतेषुधे ।।
निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोन÷सुमना
भव ।।१३।। नमस्त ऽआयुधायानाततय
धृष्ष्णवे ।। उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्त
वधन्न्वने ।।१४।। मानोमहान्तमुतमानो
ऽअब्र्भकम्मान ऽउक्षन्तमुतमान ऽउक्षि
तम् ।। मानोव्वधीᳬ पितरम्मोतमात
रम्मान÷ प्प्रियास्तन्न्वोरुद्द्ररीरिषᳬ।।१५।।
मानस्तोके तनयेमान ऽआयुषिमानो
गोषुमानो ऽअश्श्वेषुरीरिषᳬ ।। मानोव्वी
रान्नुद्द्र भामिनोव्वधीर्हविष्म्मन्तᳬसदमि
त्त्वाहवामहे ।।१६।।

।।अमृताभिषेकोस्तु ।।

अथ शिवोपनिषद्

ॐ नमश्शिवाय।। ॐ नमोस्तु शर्व्वा शंभो त्रिनेत्र चारूगात्र त्र्यैलोक्यनाथ उमापते दक्षयज्ञ विध्वंसकारक सकामांगनाशन घोर पाप प्रणाशन महापुरुष महोग्रमूर्ते सर्व्वसत्वक्षयंकर शुभंकर महेश्वर त्रिशूलधर स्मरारे गुहाधामन् दिग्वासः महाशंखशेखर जटाधर कपालमालाविभूषित शरीर वामचक्षुः क्षुभितदेव प्रजाध्यक्ष भगाक्ष्णोः क्षयंकर भीमसेननाथ पशुपते कामांगदहन चत्वरवासिन् शिव महादेवं ईशान शंकर भीमभववृषभध्वज कैटभ प्रौढ़ महानाथेश्वर भूतिरत अविमुक्तक रुद्ररुद्रेश्वर स्थाणों एकलिंग कालिन्दीप्रिय श्रीकण्ठ नीलकण्ठ अपराजित रिपुभयंकर सन्तोषपते वामदेव अघोर तत्पुरूष महाघोर अघोरमूर्ते शान्त सरस्वतीकान्त सहस्रमूर्ते महोद्भव विभो कालाग्रे रुद्र रौद्रहर महीधरप्रिय सर्व्वतीर्थाधिवास हंस कामेश्वर केदार अधिपते परिपूर्ण्ण मुचुकुन्द मधुनिवास कृपाणपाणे भयंकर विद्याराज सोमराज कामराज महीधरराज कन्या हदब्जवसते समुद्रशायिन् गयामुखगोकर्ण्ण ब्रह्मयोने सहस्रवक्त्राक्षि चरण हाटकेश्वर नमस्ते नमस्ते।।

।। शिवार्पणमस्तु।।

इसके उपरान्त सुगन्धयुक्त जल से स्नान करायें।

नाना सुगन्ध द्रव्याणि चन्दनं केशरान्वितं।।
स्नानं कुरु महादेव ग्रहशान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ अ६शुनातेऽअ६शु त्पृच्च्यताम्प रुषापरुः। गन्धस्तेसोममवतुमदायरसोऽ अच्च्युतः।। $\frac{२०}{२७}$

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।।

वस्त्र

सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रति गृह्यताम्।।

ॐ सुजातोज्जयोतिषा सहशर्म्मव्व रूथमासदत्त्स्वः।। व्वासोऽअग्ग्नेव्विश्श्व रूपाꣳ संव्व्ययस्वव्विभावसो।। ११/४०

ॐ शिवपरिवारदेवताभ्यो नमः। वासांसि परिधानापयामि।।

ॐ मानस्तोके तनयेमानऽआयुषि मानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः।। मानो व्वीरान्नुद्द्र भामिनोव्वधीर्हविष्म्मन्तः सद् मित्त्वाहवामहे।। १६/१६

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। कौपीनं परिधानापयामि।।

ॐ नमोधृष्णवे चप्प्रमृशायचनमो निषंङ्गिणेचेषुधिमतेचनमस्तीक्ष्णेषवेचायु धिनेचनमः स्वायुधायचसुधन्न्वनेच।। १६/३६

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।। अधोवस्त्रं परिधानापयामि।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ।।

ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमत ऽ सुरुचोव्वेन ऽआव ऽ ।। सबुध्न्या ऽउपमा ऽ अस्यव्विष्ठा ऽ सतश्च्चयोनिमसतश्च्चव्विव ÷ ।। १३/३

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। यज्ञोपवीतं परिधानापयामि ।।

।। जलाचमनीयम् ।।

इसके उपरांत शिव को उत्तरीय वस्त्र धारण करायें।

ॐ याते हेतिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवते धनु ÷ ।। तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्म्म यापरिभुज ।। १६/११

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। उत्तरीयम् परिधानापयामि ।।

।। पुनः आचमनीयं जलम् ।।

ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽआपोभवन्तु पीतये ।। शंय्योरभिस्त्रवन्तुन ऽ ।। ३६/१२

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। पुनःआचमनीयम् समर्पयामि ।।

।। इत्र ।।

ॐ अहिरिवभोगैः। पर्य्येतिबाहुञ्ज्याया
हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नोविश्वाव्वयुना
निव्विद्वान्पुमान्पुमा ᳪ सम्परिपातुव्विश्वतः ।।
२९/५१

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि ।।

इसके उपरान्त भगवती पार्वती को कुंकुम, सिन्दूर, मेहंदी, वस्त्र, सौभाग्य मंजूषा, आभूषण आदि यजमान पत्नी द्वारा, पत्नी के हाथ में जल देकर संकल्प पूर्वक देवी जी को अर्पण करायें।

ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्राया अमुकी देव्यमहं मंगलागौरी शिवप्रिया जगत्माता भगवती पार्वती प्रीत्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरेवा अखण्ड सुख सौभाग्य संतान समृद्धि प्राप्त्यर्थं इमां सौभाग्य मंजूषां जग्दम्बार्पणं अस्तु।

इसके बाद शिव पार्वती एवं सभी गणों को रोली, चंदन आदि चढ़ावें।

।। कुंकुम/रोली ।।

कुंकुमं कामनादिव्यं कामिनी काम सम्भवम् ।।
सिन्दूरेनार्चितः देव तेजोवृद्धिं कुरूष्व मे ।।

ॐ गंधर्व्वस्त्त्वा व्विश्श्वावसुः परि
दधातुव्विश्श्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरि
धिरस्यग्ग्निरिडऽईडितः । इन्द्रस्यबाहुर
सिदक्षिणोव्विश्श्वस्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरि

धिरस्यग्गिनरिड ऽईडित ऽ ।। मित्त्रावरुणौ त्त्वोत्तरत ऽपरिधत्तान्ध्रुवेणधर्म्मणाव्विश्श्व स्यारिष्ट्यैयजमानस्यपरिधिरस्यग्गिन रिड ऽईडित ऽ ।। २/३

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। कुंकुम समर्पयामि ।।

।। चन्दन ।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं केशरादि सुवासितं ।।
विलेपने सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ नम ँश्श्वब्भ्य ँश्श्वपतिब्भ्यश्श्चवो नमोनमो भवायचरुद्द्रायचनम ÷ शर्व्वाय चपशुपतयेचनमोनीलग्ग्रीवायचशिति कण्ण्ठायच ।। १६/२८

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। चन्दनं विलेपयामि ।।

।। सिन्दूर ।।

अबीरं च गुलालं च चोवा, चन्दन मेव च ।
सिन्दूरार्चितो देवः मतः शान्तिं प्रयच्क्ष मे ।।

ॐ सिन्धोरिवप्प्राद्ध्वनेशूघनासोव्वात प्प्रमिय ँपतयन्तियह्व्वा ऽ ।। घृतस्यधारा ऽ अरुषोनव्वाजीकाष्ट्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभि ँपिन्न्व मान ँ ।। १७/९५

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। सौभाग्यकरणार्थं सिन्दूरं विलेपयामि ।।

।। भस्म ।।

ॐ त्र्यायुषञ्जमदग्ग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।। यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ।। ३/६२

ॐ सदाशिवाय नमः ।। भस्मं विलेपयामि ।।

अक्षत

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकमालाः सुशोभिताः ।।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।।

ॐ नमस्तक्षभ्भ्योरथकारेभ्भ्यश्श्चवो नमोनमः कुलालेभ्भ्यः कर्म्मारेभ्भ्यश्श्चवो नमोनमोनिषादेभ्भ्यः पुञ्जिष्ठेभ्भ्यश्श्चवो नमोनमः श्श्वनिभ्भ्योमृगयुभ्भ्यश्श्चवो नमोनमः ।। १६/२७

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। अक्षतान् समर्पयामि ।।

सप्तधान्य

ॐ व्रीहयश्श्च मेयवाश्च्चमेमाषाश्च्चमे तिलाश्च्चमेमुद्गाश्च्चमेखल्ल्वाश्च्चमेप्रियङ्गवश्च्चमेणवश्श्चमेश्यामाकाश्श्चमेनीवाराश्च्चमेगोधूमाश्च्चमेमसूराश्च्चमेयज्ञेन कल्प्पन्ताम् ।। १८/१२

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः ।। धान्यानि समर्पयामि ।।

पुष्प

मल्लिकादि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रति गृह्यताम्।।

ॐ नमꣳ पार्य्यायचावार्य्यायचनमः
प्प्रतरणायचोत्तरणायचनमस्तीर्त्थ्यायच
कूल्ल्यायचनमꣳ शष्प्यायचफेन्न्यायच। १६/४२

पुष्पान्त पूजा करने के बाद आवरण पूजा करें।

आवरण पूजा

एकादश रुद्र पूजाः ॐ अघोराय नमः। ॐ पशुपतये नमः। ॐ शर्व्वाय नमः। ॐ विरुपाक्षाय नमः। ॐ विश्वरूपिणे नमः। ॐ त्र्यम्बकाय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महेश्वराय नमः।

शक्ति पूजा

ॐ उमायै नमः। ॐ शंकरप्रियायै नमः। ॐ पार्वत्यै नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कालिन्द्यै नमः। ॐ कोटिदेव्यै नमः। ॐ विश्वधारिण्यै नमः। ॐ ह्रां नमः। ॐ ह्रीं नमः। ॐ गंगादेव्यै नमः।

गण पूजा

ॐ गणपतये नमः। ॐ कार्तिकेयाय नमः। ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ कपर्द्दिने नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईश्वराय नमः। ॐ दण्डपाणये नमः। ॐ नन्दिने नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ कीर्तिमुखाय नमः।

अष्टमूर्ति पूजा

ॐ शर्व्वाय क्षितिमूर्तये नमः। ॐ भवाय जलमूर्तये नमः। ॐ उग्ग्राय वायुमूर्तये नमः। ॐ रुद्राग्निमूर्तये नमः। ॐ भीमायाकाशमूर्तये नमः। ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः। ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः। ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः।

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः।।

आवरण देवताओं की प्रतिष्ठा एवं पञ्चोपचार पूजन करें।

ॐ एष वै प्रतिष्ठानाम् यज्ञो यत्रै तेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठतम् भवति।

शतपथ ब्राह्मण

ॐ आवरणदेवताभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

पुष्पमाला

पुष्पैः नानाविधैः दिव्यै कुमदैरथ चम्पकैः।।
कर्णिकारैः सधत्तूरैः मन्दारैश्च मनोहरैः।।
नानापंकजपुष्पैश्च ग्रथिता पल्लवैरपि।।
बिल्वपत्रयुतां मालां ग्रहाण परमेश्वरं।।

ॐ ओषधीः प्रति मोदद्ध्वम्पुष्पवतीः प्रसूवरीः।। अश्वाऽइवसजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ष्णवः।। १२/७७

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहतानि पुष्पाणि पूणार्थं प्रतिगृहताम्।।

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। पुष्पमालां परिधानापयामि।।

दूर्वा

त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरासरैः।
सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकाम करीभव।।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानोदूर्व्वेप्रतनुसहस्त्रेणशतेनच।। १३/२०

ॐ गणपतये नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। सदाशिवाय दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

शमीपत्र

अमंगलानां च शमनी शमनी दुष्कृतस्य च।
दुस्वप्ननाशिनी धन्यां प्रपद्येऽहं शर्मीं शुभाम्।।

ॐ अग्निम्मूर्द्धा दिव ऽककुत्पतिः
पृथिव्याऽअयम्।। अपाᳪरेताᳪसि
जिन्वति।। ३/१२

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। शमीपत्रान् समर्पयामि।

तुलसीपत्र

तुलसीपत्र पावित्रानि हरिप्रीति कराणि च।
भक्त्या समर्पयेतुभ्यं मोक्षज्ञान प्रदोभव।।

ॐ इदंव्विष्णुर्व्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्।
समूढमस्यपाᳪसुरेस्वाहा।। ५/१५

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। तुलसीपत्राणि समर्पयामि।

बिल्वपत्र

त्रिदलं त्रिगुणकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधं।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१।।

काशीवासनिवासी च कालभैरव पूजनम्।
प्रयागे माघमासे च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।२।।

दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोर पापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।३।।

अखण्डैः बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशंकरं।
कोटिकन्या महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४।।

ग्रहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पानि महेश्वर।
सुगन्धीनि भवानीय शिवस्त्वं कुसुमप्रिय।।५।।

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च अछिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि ग्रहाण परमेश्वर।।६।।

श्रीवृक्षामृतसम्भूतं शंकरस्य सदाप्रियं।
पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर।।७।।

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च कोमलैः चातिसुन्दरैः।
त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नो भव सर्वदा।।८।।

अमृतोद्भव श्रीवृक्षं शंकरस्य सदाप्रियं।
तत्ते शंभो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर।।९।।

ॐ नमोबिल्मिनेचकवचिनेचनमो
व्वर्म्मिणेचव्वरूथिनेचनमः श्श्रुतायचश्श्रुत
सेनायचनमोदुन्दुब्भ्यायचाहनन्यायच।। १६/३५

ॐ नमःपर्ण्णायचपर्ण्णशदायचनमऽ
उद्गुरमाणायचाभिघ्नतेचनमऽआखिदते
चप्प्रखिदतेचनमऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्य
श्श्चवोनमोनमोवः किरिकेभ्योदेवाना
हृदयेब्भ्योनमोव्विचिन्वत्केब्भ्योनमोव्वि
क्षिणत्केब्भ्योनमऽआनिर्हतेब्भ्यः।। १६/४६

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय। बिल्वपत्राणि समर्पयामि।।

अर्क-धत्तूर-आदि

अर्कधत्तूरपुष्पाणि सफलानि महेश्वर।
भक्त्या तुभ्यं प्रदास्यामि भोगमोक्ष प्रदोभव।।

ॐ उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्तिकेत
वः दृशेव्विश्श्वायसूर्य्यम्।।७/४१

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। अर्कपुष्पाणि समर्पयामि।।

ॐ धामन्तेव्विश्श्वम्भुवनमधिश्रि
तमन्तः समुद्रेत्दृद्यन्तरायुषि।। अपामनी
केसमिथेयऽआभृतस्तमश्यामममधुमन्तन्तऽ
ऊर्म्मिम्।।१७/६६

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। धत्तूर फलानि समर्पयामि।।

कमल

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गगतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्।।

ॐ काशी विश्वनाथाय नमः। पद्म पुष्पाणि समर्पयामि।।

विजया

विजया विजयदात्री चेतानन्द प्रदायिनी।
आशुतोष महादेव सर्वत्र विजयं कुरु।।

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनोविशल्ल्यो बाणवाँ२उत। अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआ भुरस्यनिषङ्गधिः।। १६/१०

ॐ सगण सदा शिवाय नमः। विजयापानं समर्पयामि।।

धूप

वनस्पतिरसोद्भूतं गन्धाढ्यं गन्धमुत्तमम्।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ नमः कपर्द्दिने चव्व्युप्तकेशायच नमः सहस्राक्षायचशतधन्न्वनेचनमो गिरिशयायचशिपिविष्टायचनमोमीढुष्ट्टमायचेषुमतेच।। १६/२९

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। प्रत्यक्षं धूपमाघ्रापयामि।।

दीपक

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं ग्रहाण देवेश त्र्योलेक्य तिमिरापहम्।।

ॐ नमऽआशवे चाजिरायचनमः शीग्घ्यायचशीब्भ्यायचनमऽऊम्म्यायचावस्वन्न्यायचनमो नादेयायचद्वीप्प्यायच।। १६/३१

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि।। हस्तप्रक्षालनं।।

नैवेद्य

शर्कराघृतसंयुक्तं मधुरं सुस्वादुचोत्तमम्।
उपाहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ नमोज्ज्येष्ठाय चकनिष्ठायचनमः पूर्व्वजायचापरजायचनमोमद्ध्यमायचापगल्भायचनमोजघन्न्यायचबुध्न्यायच।। १६/३२

ॐ प्राणाय स्वाहाः। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ स्वादिष्ठयामदिष्ठयापवस्वसोम धारया।। इन्द्रायपातवेसुतः।। २६/२५

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। नैवेद्यं सुभोजयामि।।

आचमन

अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धं च पिबेच्छया।।
त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यं तृप्ते महात्मनि।।

ॐ नमः सोब्भ्याय चप्प्रतिसर्य्यायच नमोयाम्म्यायचक्षेम्म्यायचनमः श्लोक्क्याय चावसान्न्यायचनमऽउर्व्वर्य्यायचखल्ल्यायच।। १६/३३

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। आचमनीयजलं समर्पयामि।।

ऋतुफल

फलेन फलितं सर्वं त्र्यैलोक्यं स चराचरं।
तस्मात्फल प्रदानेन सफला सन्तु मनोरथाः।।

ॐ इमारुद्द्राय तवसेकपर्द्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमती। यथाशमसद्विपदेचतुष्पदेविश्श्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्म्मिन्ननातुरम्।
१६/४८

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। कालोद्भवानि फलानि समर्पयामि।।

सफल ताम्बूल

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
खदिरेण समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ पातन्नोऽअश्श्विनादिवापाहिनक्त्तङ्सरस्वती। दैव्व्याहोताराभिषजापातमिन्द्रङ्सचासुते।। २०/६२

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। सफलताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा-दान

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमवीजं विभावसो।
अनन्तपुण्य फलदः अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ यद्दत्तंय्यत्परादानंय्यत्पूर्त्तंय्याश्श्च दक्षिणाः। तदग्निर्व्वैश्श्वकर्म्मणः स्वर्द्देवेषु नौदधत्। १८/६४

ॐ सगण सदाशिवाय सपरिवाराय नमः। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

हाथ में पुष्पफलादि लेकर स्तुति करें।

मन्दारमाला कुलितालिकायै कपालमालाङ्कित शेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टाङ्गः प्रणामो हि प्रयत्नेन मयाकृतः।।
शिवतत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरः।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः।।

ॐ ओजश्श्च मेसहश्श्चमऽआत्माच मेतनूश्श्चमेशर्म्मचमेव्वर्म्मचमेङ्गानिचमे स्थीनिचमेपरूंषिचमेशरीराणिचमऽआयुश्श्चमेजराचमेयज्ञेनकल्पन्ताम्।। १८/३

।। षड्वक्त्रपूजा ।।

ॐ प्रालेयामलमिन्दुकुन्दधवलं गोक्षीरफेनप्रभम्।
भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहनं ज्वालवलीलोचनम्।।
ब्रह्मेन्द्राग्नि मरुद्गणैः स्तुतिपरैरभ्यर्चितं योगिभिः।
वन्देऽहं सकलं कलंकरहितं स्थाणोर्मुखम् पश्चिमम्।।
।। ॐ पश्चिमवक्त्राय शिवाय नमः।।

ॐ गौरं कुंकुम पिंगल सुतिलकं व्यापाण्डु गण्डस्थलम्।
भ्रू विक्षेप कटाक्ष वीक्षणलसत्संसक्त कर्णोत्पलम्।।
स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालं कृतम्।
वन्दे पूर्णशशांकमण्डलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम्।।
।। ॐ उत्तरवक्त्राय शिवाय नमः।।

ॐ कालभ्रभ्रमराञ्जनाचलनिभं व्यादीप्त पिंगेक्षणम्।।
खण्डेन्दुद्युति मिश्रदोग्रदशनं प्रोद्भिन्न दंष्ट्रांकुरम्।।
सर्पप्रोत कपालशक्ति सुलभं व्याकीर्ण तच्छेखरम्।
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य जटिलं भ्रूभंगरौद्रं मुखं।।

।। ॐ दक्षिणवक्त्राय शिवाय नमः।।

ॐ संवर्त्ताग्नितडित्प्रदीप कनक प्रस्पर्द्धितेजोरुणम्।
गम्भीरस्मित निःसृतोग्रदर्शनं प्रोद्भासिताम्राधरम्।।
बालेन्दुद्युतिलोलपिंङ्गलजटा भारं प्रबद्धोरगम्।
वन्दे सिद्ध सुरासुरेन्द्र नमितं पूर्वं मुखं शूलिनः।।

।। ॐ पूर्ववक्त्राय शिवाय नमः।।

ॐ व्यक्ताव्यक्त गुणोत्तरं सुवदनं षड्विंशतत्वाधिकम्।
वेदाद्यक्षरमन्त्रशास्त्रनिलयं ध्येयं सदायोगिभिः।।
वन्दे तामसवर्जितेन मनसा सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम्।
शान्तं पंचममीश्वरस्यवदनं खव्याप्त तेजोमयमं।

।। ॐ ऊर्ध्ववक्त्राय शिवाय नमः।।

ॐ यद्वेदाद्यमनन्तशास्त्रमगुणं सम्पूजितं चामरैः।
पुण्याङ्गाम्बुज नागपुष्पवकुल नागासुराद्यर्चितम्।।
नित्यं भानुसहस्त्रदीप्तकिरणं कालज्ञतेजोऽमयम्।
तत्कल्याणकरं नमामि सततं पाताल षष्ठं मुखम्।।

।।ॐ पातालवक्त्राय शिवाय नमः।।

अथ द्वादश ज्योतिर्लिंगपूजा

ॐ सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकला वतंसम्।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णतं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये।।1।।
।। श्री सोमनाथाय नमः।।

ॐ श्री शैलशृंगे विबुधातिसंगे तुलाद्रितुंगेऽपि मुदा वसन्तम्।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसार समुद्रसेतुम्।।2।।
।। श्री मल्लिकार्जुनाय नमः।।

ॐ अवन्तिकायां विहितावतारं भक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्यो परिरक्षणार्थवन्देमहाकाल महासुरेशम्।।3।।
।। श्री महाकालेश्वराय नमः।।

ॐ कावेरिकानमर्दयोः पवित्रे समागमे सज्जन तारणाय।
सदैव मान्धातृपदे वसन्तमोकारमीशं शिवमेकमीडे।।4।।
।। श्री ओंकारेश्वराय नमः।।

ॐ पूर्वोत्तरे प्रज्वलिका निधाने सदा वसन्तं गिरजासमेतम्।
सुरासुराराधित पादपद्मं श्रीवैद्यनाथं शरणं प्रपद्ये।।5।।
।। श्री वैद्यनाथाय नमः।।

ॐ याम्ये सदंगे नगरेऽतिरम्ये विभूषितांग विविधैश्च भोगैः।
सदभक्तिमुक्तिं प्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये।।6।।
।। श्री नागनाथाय नमः।।

ॐ महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रै।
सुरासुरैयक्षमहोरगाद्यै केदारमीशं शिवमेकमीडे।।7।।
।। श्री केदारनाथाय नमः।।

ॐ सह्याद्रिशीर्षे विमलेवसन्तं गोदावरीतीरं पवित्र देशे।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे।।8।।
।। श्री त्र्यम्बकेश्वराय नमः।।

ॐ सुताम्रपर्णी जलराशियोगे निवद्धसेतुं विशिखैरसंख्यैः।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि।।9।।
।। सेतुबन्ध श्री रामेश्वराय नमः।।

ॐ यं डाकिनी शाकिनिका समाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च।
सदैव भीमादिपद प्रसिद्धं तं शंकरं भक्तहितं नमामि।।10।।
।। श्री भीमशंकराय नमः।।
ॐ सानन्दमानन्दवने वसन्तं आनन्दकन्दं हृतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।11।।
।। श्री काशीविश्वनाथाय नमः।।
ॐ इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यं।
वन्दे महोदारतर स्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शिवमेकमीडे।।12।।
।। श्री घृष्णेश्वराय नमः।।
ॐ ज्योतिर्मयं द्वादश लिङ्गकां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोति भक्त्या फलं तदालोक्य निजंभवेच्च।।
।। श्री द्वादशज्योतिर्लिंग देवताभ्यो नमः।।

शिवपंचाक्षर स्तोत्र

ॐ नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै न काराय नमः शिवाय।।१।।
ॐ मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै म काराय नमः शिवाय।।२।।
ॐ शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शि काराय नमः शिवाय।।३।।
ॐ वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानर लोचनाय तस्मै व काराय नमः शिवाय।।४।।
ॐ यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै य काराय नमः शिवाय।।५।।
पंचाक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।६।।

श्री रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेद स्वरूपं।।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।।१।।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं। गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं।।
करालं महाकालकालं कृपालं। गुणाकार संसारवारं नतोऽहं।।२।।
तुषाराद्रि संकाशगौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगंगा। लसद्भाल बालेन्दु कंठे भुजंगा।।३।।
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं।।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।४।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखण्डं अजं भानुकोटि प्रकाशं।।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणि। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं।।५।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदासज्जनानन्द दाता पुरारी।।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।६।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।।
न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं।।७।।
न जानामि योगं जपं नैवपूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।।
जराजन्मदुःखौघ तातप्यमानं। प्रभोपाहि आपन्नमामीश शंभो।।८।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति।।९।।

ॐ नमः शिवाय

इसके बाद तिलक आशीर्वाद आदि करें। ब्राह्मणों को दक्षिणा दें। इसके बाद विसर्जन तथा अभिषेक करें।

।। सदा शिवार्पणमस्तु।।

इसके बाद भगवान शंकर की मूर्ति पर सछिद्रकलश तिपाई पर रखें या रस्सी के सहारे लटका दें तथा उसमें दूध-दही-घी शक्कर-शहद आदि जल में मिलाकर एक या एकाधिक पदार्थों से अविछिन्न धारा चलावें। कामनाभेद से अन्य वस्तुओं से भी अभिषेक कर सकते हैं। जैसे गन्धोदक-इक्षुरस इत्यादि।

इसके बाद रुद्राभिषेक (रुद्राष्टाध्यायी का पूरा पाठ) शतरुद्री से (केवल १०० मंत्रों से) अथवा नमकचमकात्मक सम्पूर्ण रुद्राभिषेक अपनी श्रद्धा के अनुसार कर सकते हैं। यह अनेक प्रकार से होता है। इसके बाद यथा संख्य ब्राह्मणों का वरण कर उन्हें तिलक कर वस्त्र दक्षिणा आदि दें।

-: यजमान द्वारा रक्षा बन्धन :-

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

-: यजमान द्वारा तिलक :-

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दा नामे नमः।।

-: आचार्य द्वारा रक्षा बन्धन :-

ॐ यदा बध्नन् दाक्षायणा हिरण्य७ँशतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।
ये बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

-: आचार्य द्वारा तिलक :-

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

षडंग न्यासः :- मनोजूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पति-र्ऋषिः बृहतीछन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे जपे पाठे विनियोगः।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य-बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टंय्यज्ञ ६ समिमन्दधातुव्विश्श्वेदेवास ऽइहमादयन्ता मो३म्प्रतिष्ठ ।। ॐ हृदयायनमः। २/१३

अबोद्ध्यग्निरितिमंत्रस्य बुधगविष्ठिराऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः शिरोन्यासे जपे विनियोगः।

ॐ अबोद्ध्यग्नि ? समिधाजनानाम्प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वा ऽइवप्प्रवया मुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्त्रतेनाकमच्छ।। ॐ शिरसे स्वाहा। १५/२४

मूर्द्धानमितिमंत्रस्य भरद्वाजऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः शिखान्यासे जपे विनियोगः।।

ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिम्पृथिव्या-व्वैश्श्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कवि ६ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनय न्तदेवाः। ॐ शिखायै वषट्।। ३३/८

मर्म्माणितइतिमंत्रस्य अप्रतिरथऋषिः मर्म्माणि देवता विराट्छंदः कवचन्यासे जपे विनियोगः।।

ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु।।

ॐ कवचायहुम्।। १७/३३

विश्वतश्चक्षुरितिमंत्रस्य विश्वकर्माभौवनऋषिः विश्वकर्मादेवता त्रिष्टुप्छन्दः नेत्रन्यासे जपे विनियोगः।।

ॐ व्विश्श्वतश्चक्षुरुतव्विश्श्वतोमुखोव्विश्वतोबाहुरुतव्विश्श्वतस्पात्। सम्बाहुब्भ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः।।

ॐ नेत्रत्रयायवौषट्।। १७/१९

मानस्तोकइतिमन्त्रस्य परमेष्ठीऋषिः एकरुद्रो देवता जगतीछन्दः अस्त्रन्यासे जपे विनियोगः।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः।। मानोव्वीरान्रुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे। ॐ अस्त्रायफट्। १६/१६

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

अथ प्रथमोऽध्याय

श्री गणेशाय नमः।। हरिः ॐ।।

गणानान्त्वागणपतिꣳ हवामहेप्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपतिꣳ हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳ हवामहेव्वसोमम।। आहमजानि गब्भधमात्त्वमजासिगब्भधम्।।१।। २३/१९

गायत्रीत्रिष्टुप्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह।। बृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा।।२।। २३/३३ द्विपदायाश्च्चतुष्प्पदास्त्रिपदायाश्च षट्पदाꣳ।। व्विच्छन्दायाश्च्चसच्छन्दाꣳ सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा।।३।। २३/३४ सहस्तोमाꣳ सहच्छन्दसऽआवृतः सहप्प्रमाऽऋषयꣳ सप्प्तदैव्व्याꣳ। पूर्व्वेषाम्पन्थामनुदृश्यधीराऽ

अन्वालेभिरेरत्थ्योनरश्म्मीन् ।।४।।२३/४६ ॐ
यज्जाग्ग्रतोदूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवै
ति। दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्त
न्न्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु ।।५।। येन
कर्म्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्तिव्विद
थेषुधीराः ।। यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्रजा
नान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु ।।६।।
यत्त्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्चयज्ज्योतिरन्तर
मृतम्प्रजासु ।। यस्म्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्म
क्रियतेतन्न्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु ।।७।।
येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेन
सर्व्वम् ।। येन यज्ञस्त्रायतेसप्तहोतातन्न्मे
मनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु ।।८।। यस्म्मिन्नृ
चः सामयजूᳬषियस्म्मिन्न्प्रतिष्ठितारथना
भाविवाराः ।। यस्म्मिँश्चित्तᳬ सर्व्वमोतम्प्रजा
नान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु ।।९।।

सुषारथिरश्श्वानिवयन्न्मनुष्ष्यान्नेनीयतेभी
शुभिर्वाजिनऽइव ।। हृत्प्रतिष्ठन्न्यदजिरञ्ज
विष्ठन्तन्न्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु ।।१०।।
शु.य.अध्याय-३४
इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ।।१।। (१ से ६ तक)

अथ द्वितीयोऽध्यायः

हरिः ॐ ।। सहस्स्रशीर्षापुरूषः सहस्स्राक्षः
सहस्स्रपात् ।। सभूमि ँ सर्व्वतस्पृत्त्वात्यति
ष्ठद्दशाङ्गुलम् ।।१।। पुरूषएवेद ँ सर्व्वय्य
द्भूतंय्यच्चभाव्व्यम् ।। उतामृतत्त्वस्स्येशानोयदन्नै
नातिरोहति ।।२।। एतावानस्स्यमहिमातो
ज्जयायाँश्श्चपूरुषः ।। पादोस्स्यव्विश्श्वा
भूतानित्रिपादस्स्यामृतन्दिवि ।।३।। त्रिपादूर्द्ध्वऽ
उदैत्पुरुषः पादोस्स्येहाभवत्पुनः ।। ततो
व्विष्ष्वङ्व्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि
।।४।। ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधि
पूरुषः ।। सजातोऽअत्त्यरिच्च्यतपश्श्चा

द्भूमिमथोपुर ः ।।५।। तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ः
सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ।। पशूँस्ताँश्चक्रेव्वाय
व्यानारण्ण्याग्राम्म्याश्च्चये ।।६।। तस्माद्य
ज्ञात्सर्व्व हुत ऽऋच ः सामानिजज्ञिरे ।।
छन्दा ँ सिजज्ञिरे तस्मा द्यजुस्तस्म्माद
जायत ।।७।। तस्मादश्श्वा ऽअजायन्त
येकेचोभयादत ः ।। गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्त
स्म्माज्जाता ऽअजावय ः ।।८।। तंय्यज्ञम्ब
र्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रत ः।। तेनदेवा ऽ
अयजन्तसाद्ध्या ऽऋषयश्श्चये ।।९।।
यत्पुरुषंव्व्यदधु ः कतिधाव्व्यकल्प्पयन् ।।
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादा ऽ
उच्च्येते ।।१०।। ब्ब्राह्मणोस्यमुखमासी
द्बाहूराजन्न्य ः कृत ः ।। ऊरूतदस्ययद्वैश्य ः
पद्भ्या ँ शूद्रो ऽअजायत ।।११।। चन्द्रमा

मनसोजातश्श्चक्षोः सूर्य्योअजायत ।।
श्श्रोत्राद्वायुश्श्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत
।।१२।। नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्ष ꣳशीर्ष्णो
द्यौः समवर्त्तत ।। पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्त
थालोकाँर ऽअकल्प्पयन् ।।१३।। यत्पुरूषेण
हविषादेवायज्ञमतन्वत ।। व्वसन्तोऽस्यासी
दाज्ज्यङ्ग्रीष्म्मइध्मः शरद्धविः ।।१४।।
सप्प्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिः सप्प्तसमिधः
कृताः ।। देवायद्यज्ञन्तन्न्वाना ऽअबध्नन
न्न्पुरूषम्पशुम् ।।१५।। यज्ञेनयज्ञमयजन्त
देवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन् ।। तेहना
कम्महिमानःसचन्तयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याःसन्ति
देवाः ।।१६।। अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै
रसाच्चविश्श्वकर्म्मणः समवर्त्तताग्ग्रे। तस्य
त्त्वष्टाविदधद्रूपमेतितन्न्मर्त्यस्यदेवत्वमा

जानमग्ग्रे।।१७।। व्वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्त
मादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्।। तमेवव्वि
दित्वातिमृत्युमेतिनान्न्यऽपन्थाव्विद्यतेयनाय
।।१८।। प्रजापतिश्श्चरतिगर्ब्भेऽअन्तर
जायमानोबहुधाव्विजायते।। तस्ययोनिम्परि
पश्यन्तिधीरास्तस्मिन्न्हतस्त्थुर्ब्भुवनानिव्वि
श्श्वा।।१९।। योदेवेब्भ्यऽआतपतियोदेवा
नाम्पुरोहितः।। पूर्व्वोयोदेवेब्भ्योजातोनमो
रुचायब्ब्राह्मये।।२०।। रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तो
देवाऽअग्ग्रेतदब्ब्रुवन्।। यस्त्वैवम्ब्राह्मणो
व्विद्यात्तस्यदेवाऽअसन्न्वशे।।२१।। श्रीश्श्च
तेलक्ष्मीश्श्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्श्वेनक्षत्राणि
रूपमश्श्विनौव्यात्तम्।। इष्णन्निषाणामुम्मऽ
इषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण।।२२।।

शु.यजुर्वेद अध्याय-३१ (१ से २१ तक)

इति रुद्रे द्वितीयोऽध्यायः।।२।।

हरिः ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।। सङ्क्रन्दनो निमिष एकवीरः शत ँ सेना अजयत्साकमिन्द्रः ।।१।। सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।। तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ।।२।। स इषुहस्तै ँ सनिषङ्गिभिर्व्वशी स ँ स्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन ।। स ँ सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ।।३ ।। बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँ२ अपबाधमान ँ ।। प्रभञ्जन्त्सेना ँ प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ।।४ ।। बलविज्ञाय स्थविर ँ प्रवीर ँ सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः । अभिवीरो अभिसत्त्वा सहोजा जैत्र

मिन्द्ररथमातिष्ठगोवित् ।।५।। गोत्रभि
दङ्गोविदंव्वज्ज्रबाहुञ्जयन्तमज्जमप्प्रमृ
णन्तमोजसा ।। इमꣳ सजाताऽअनुवीर
यद्ध्वमिन्द्रꣳ सखायोऽअनुसꣳ रभद्ध्वम्
।।६।। अभिगोत्त्राणिसहसागाहमानो
दयोवीरः शतमन्न्युरिन्द्रः ।। दुश्च्यवनः
पृतनाषाडयुद्ध्योस्माकꣳसेनाऽअवतुप्रयुत्सु
।।७।। इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणा
यज्ञः पुरऽएतुसोमः ।। देवसेनानामभि
भञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम्
।।८।। इन्द्रस्यव्वृष्ष्णोव्वरुणस्यराज्ञऽ
आदित्यानाम्मरुताꣳशुर्द्धऽउग्ग्रम् ।। महा
मनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जय
तामुदस्त्थात् ।।९।। उद्धर्षयमघवन्नायु
धान्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनाꣳसि ।।
उद्वृत्रहन्वाजिनांव्वाजिनान्न्युद्रथानाञ्ज

यंताख्यन्तुघोषा॑ः ।।१०।। अस्म्माकमिन्द्र॒ः समृ॑तेषुद्ध्वजेष्ष्वस्म्माकंय्या ऽइषवस्ताजय न्तु। अस्म्माकंवीरा ऽउत्तरेभवन्त्वस्म्माँ२ऽ उदेवा ऽअवताहवेषु ।।११।। अमीषाञ्चि त्तम्प्रतिलोभयन्तीगृहाणाङ्गान्न्यप्प्वेपरेहि। अभिप्प्रेहिनिर्द्दहहृत्सुशोकैरन्धेनामित्रास्त मसासचन्ताम् ।।१२।। अवसृष्ट्टापरापत शरव्व्येब्रह्मसंशिते ।। गच्छामित्त्रान्प्रप द्यस्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिष॑ः ।।१३।। प्रेताजयतानर ऽइन्द्रोव॒ःशर्म्मयच्छतु ।। उग्ग्रावः सन्तुबाहवोनाधृष्य्यायथासथ ।।१४।। असौयासेनामरुत॒ःपरेषामब्भ्यै तिन ऽओजसास्पर्द्धमाना ।। ताङ्गूहततम सापव्व्रतेनयथामी ऽअन्न्यो ऽअन्न्यन्नजानन् ।।१५।। यत्रबाणाःसम्पतन्तिकुमाराविवि शिखा ऽइव ।। तन्न ऽइन्द्रोबृहस्प्पतिरदितिः

शर्म्मयच्छतुव्विश्श्वाहाशर्म्मयच्छतु ।।१६ ।।
मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वा
राजामृतेनानुवस्ताम् ।। उरोर्व्वरीयोव्वरूण
स्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ।।१७ ।।

शु.यजुर्वेद अध्याय-१७ (३३ से ४६ तक)

इति रुद्रे तृतीयोऽध्याय ।।३ ।।

अथ चतुर्थोऽध्यायः

हरिः ॐ ।। व्विभ्राड्बृहत्पिबतुसो
म्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविर्हुतम् ।। व्वात
जूतोयोऽअभिरक्षतित्त्मनाप्प्रजाः पुपोष
पुरुधाव्विराजति ।।१ ।। उदुत्त्यञ्जातवेद
सन्देवंवहन्तिकेतवः ।। दृशेव्विश्श्वायसूर्य्यम्
।।२ ।। येनापावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्जनाँ२ऽ
अनु ।। त्वंव्वरुणपश्यसि ।।३ ।। दैव्व्यावद्ध्
वर्य्यूऽआगतᳬ रथेनसूर्य्यत्वचा ।। मद्ध्वायज्ञ ᳬ
समञ्जाथे ।। तम्प्रत्क्कथायंव्वेनश्चित्रन्दे
वानाम् ।।४ ।। तम्प्रत्क्कथापूर्व्वथाविश्श्वथेम

थाज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदꣳस्वर्व्विदम् ।। प्रतीची
नंवृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्तमनुयासुव्व
र्द्धसे ।।५।। अयंव्वेनश्चोदयत्पृश्निग
र्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसोव्विमाने ।। इमम
पाꣳसङ्गमेसूर्य्यस्यशिशुन्नविप्प्रामतिभीरि
हन्ति ।।६।। चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्च
क्षुर्म्मित्रस्यव्वरुणस्याग्ग्नेः ।। आप्प्राद्यावा
पृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्माजगतस्त
स्थुषश्च ।।७।। आनऽइडाभिर्व्विदथेसुश
स्तिव्विश्श्वानरꣳसवितादेवऽएतु ।। अपि
यथायुवानोमत्सथानोव्विश्वञ्जगदभिपित्त्वे
मनीषा ।।८।। यदद्यकच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽअभि
सूर्य्य ।। सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे ।।९।। तरणि
र्व्विश्श्वदर्शतोज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ।।
व्विश्श्वमाभासिरोचनम् ।।१०।। तत्सूर्य्यस्य
देवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्व्विततꣳ

सञ्जभार ।। यदेदयुक्तहरितः सधस्त्थादा
द्रात्रीव्वासंस्तनुतेसिमस्मै ।।११।। तन्मित्र
स्यव्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्योरूपङ्कृणुतेद्यौ
रुपस्त्थे ।। अनन्तमन्न्यद्रुशदस्यपाजः कृष्ण
मन्न्यद्धरितꣳ सम्भरन्ति ।।१२।। बण्महाँ२
असिसूर्य्यबडादित्त्यमहाँ२असि ।। मह
स्तेसतोमहिमापनस्यतेद्धादेवमहाँ२असि
।।१३। बट्सूर्य्यश्रवसामहाँ२असिसत्रा
देवमहाँ२असि ।। मन्न्हादेवानामसुर्य्यः पुरो
हितोव्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम् ।।१४।।
श्रायन्त ऽइवसूर्य्यंव्विश्श्वेदिन्द्रस्यभक्षत ।।
व्वसूनिजातेजनमान ऽओजसाप्रतिभागन्न
दीधिम ।।१५।। अद्यादेवा ऽउदितासूर्य्यस्य
निरꣳहसꣳ पिपृतानिरवद्यात् ।। तन्नोमित्रो
व्वरुणोमामहन्तामदितिꣳ सिन्धुः पृथिवी
ऽउतद्यौः ।।१६।। आकृष्ष्णेनरजसाव्वर्त्त

मानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।। हिरण्ययेन
सवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ।।१७।।
शु.यजुर्वेद अध्याय-३३ (३० से ४३ तक)

इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

अथ पञ्चमोऽध्यायः

हरिः ॐ ।। नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽ
इषवेनमः ।। बाहुब्भ्यामुततेनमः ।।१।।
यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी ।।
तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाक
शीहि ।।२।। यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभ
र्ष्यस्तवे ।। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳ
सीꣳ पुरुषञ्जगत् ।।३।। शिवेनव्वचसात्त्वा
गिरिशाच्छावदामसि ।। यथानꣳ सर्व्वमिज्ज
गदयक्ष्मꣳ सुमनाऽअसत् ।।४।। अद्ध्य
वोचदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक् ।। अँही
श्श्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्श्चयातुधान्न्यो
धराचीꣳ परासुव ।।५।। असौयस्ताम्रोऽ

अरुण ऽउतबब्भ्रु ऽ सुमङ्गल÷ ।। येचैन ६ः
रुद्रा ऽअभितोदिक्षुश्रिता ऽ सहस्त्रशोवैषा ७
हेडऽईमहे ।।६ ।। असौयोवसर्प्पतिनीलग्ग्री
वोव्विलोहित ८ं ।। उतैनङ्गोपा ऽअदृश्श्रन्न
दृश्श्रन्नुदहार्य्य ८ं सदृष्ट्टोमृडयातिन ८ं ।।७ ।।
नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्त्राक्षायमीढुषे ।।
अथोये ऽअस्यसत्वानोहन्तेब्भ्योकरन्नम÷
।।८ ।। प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरात्त्न्योर्
ज्ज्याम् ।। याश्श्चतेहस्त ऽइषव ८ं पराता
भगवोव्वप ।।६ ।। व्विज्ज्यन्धनु÷कपर्द्दिनो
व्विशल्ल्योबाणवाँ २उत ।। अनेशन्नस्य
या ऽइषव ऽआभुरस्यनिषङ्गाधि ऽ ।।१० ।।
याते। हेतिम्मींढुष्टमहस्तेबभूवंतेधनु÷ ।
तयास्म्मान्न्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्म्मयापरिभुज
।।११ ।। परितेधन्न्वनोहेतिरस्म्मान्न्वृणक्तु
व्विश्श्वत÷ ।। अथोय ऽइषुधिस्तवारे ऽ

अस्म्मन्निधेहितम् ।।१२।। अवतत्त्य
धनुष्ट्वᳬ सहस्स्राक्षशतेषुधे ।। निशीर्य्य
शल्ल्यानाम्मुखाशिवोन÷सुमनाभव ।।१३।।
नमस्त्त ऽआयुधायानाततायधृष्ष्णवे ।।
उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्न्व
ने ।।१४।। मानोमहान्तमुतमानोऽअब्र्भ
कम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ।। मानो
व्वधीᳬ पितरम्मोतमातरम्मान÷प्प्रियास्त्त
न्न्वोरुद्द्ररीरिषᳬ ।।१५।। मानस्त्तोके तनये
मानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरी
रिषᳬ ।। मानोव्वीरान्रुद्द्रभामिनोव्वधीर्ह
विष्म्मन्तᳬ सदमित्त्वाहवामहे ।।१६।। नमो
हिरण्ण्यबाहवे सेनान्न्येदिशाञ्चपतये
नमोनमोव्वृक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्यᳬ पशूना
म्पतयेनमोनम÷शष्प्पिञ्जरायत्त्विषीमते
पथीनाम्पतयेनमोनमोहरिकेशायोपवीतिने

पुष्टानाम्पतयेनमोनमोबब्भ्लुशाय ।।१७।।
नमोबब्भ्लुशाय व्याधिनेन्नानाम्पतयेनमो
नमोभवस्यहेत्यैजगताम्पतयेनमोनमोरुद्रायो
ततायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः सूतायाहन्त्यै
व्वनानाम्पतयेनमोनमोरोहिताय ।।१८।।
नमोरोहिताय स्थपतयेव्वृक्षाणाम्पतयेनमो
नमोभुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये
नमोनमोमन्त्रिणेव्वाणिजायकक्षाणाम्पतयेनमो
नमऽउच्चैर्ग्घोषायाक्क्रन्दयतेपत्तीनाम्पतये
नमोनमः कृत्स्नायतया ।।१९।। नमः
कृत्स्नायतया । धावतेसत्त्वनाम्पतयेनमो
नमः सहमानायनिव्व्याधिनऽआव्व्याधिनी
नाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणेककुभायस्तेना
नाम्पतयेनमोनमोनिचेरवेपरिचरायारण्ण्या
नाम्पतयेनमोनमोव्वञ्चते ।।२०।। नमोव्व
ञ्चते परिव्वञ्चतेस्तायूनाम्पतयेनमोनमो

निषङ्गिण ऽइषुधिमतेतस्कराणाम्पतये
नमोनमः सृकायिब्भ्योजिघा ᳪ सद्भ्यो
मुष्णताम्पतयेनमोनमोसिमद्भ्योनक्तक्त
ञ्चरद्भ्योविकृन्तानाम्पतयेनमः ।।२१।।
नम ऽउष्णीषिणे गिरिचरायकुलुञ्चा
नाम्पतयेनमोनम ऽइषुमद्भ्यो धन्वायि
भ्यश्च वोनमोनम ऽआतन्वानेभ्यः
प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमोनम ऽआयच्छ
द्भ्योस्यद्भ्यश्चवोनमोनमोविसृजद्भ्यः
।।२२।। नमोविसृजद्भ्योविद्ध्यद्भ्यश्च
वोनमोनमः स्वपद्भ्योजाग्रद्भ्यश्चवो
नमोनम ᳪ शयानेभ्य ऽआसीनेभ्यश्चवो
नमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्चवोनमो
नमः सभाभ्यः ।।२३।। नमः सभाभ्यः
सभापतिभ्यश्चवोनमोनमोश्वेभ्यो
श्वपतिभ्यश्चवो नमोनम ऽआव्या

धिनीब्भ्योव्विविद्ध्यन्तीब्भ्यश्श्चवोनमो
नमऽउगणाब्भ्यस्तृꣳहतीब्भ्यश्श्चवो नमो
नमोगणेब्भ्य÷ ।।२४।। नमोगणेब्भ्यो
गणपतिब्भ्यश्श्चवोनमोनमोव्व्रातेब्भ्यो
व्व्रातपतिब्भ्यश्श्चवोनमोनमोगृत्सेब्भ्यो
गृत्सपतिब्भ्यश्श्चवोनमोनमोव्विरूपेब्भ्यो
व्विश्श्वरूपेब्भ्यश्श्चवोनमोनमꣳसेनाब्भ्यꣳ
।।२५।। नमꣳसेनाब्भ्यꣳ सेनानिब्भ्यश्श्च
वोनमोनमोरथिब्भ्योऽअरथेब्भ्यश्श्चवो
नमोनम÷क्षत्तृब्भ्य÷सङ्गृहीतृब्भ्यश्श्च
वोनमोनमोमहद्भ्योऽअर्ब्भकेब्भ्यश्श्चवो
नम÷ ।।२६।। नमस्तक्षब्भ्योरथकारेब्भ्य
श्श्चवोनमोनमꣳकुलालेब्भ्यꣳकर्म्मारेब्भ्य
श्श्चवोनमोनमोनिषादेब्भ्य÷पुञ्जिष्ठे
ब्भ्यश्श्चवोनमोनम÷श्श्वनिब्भ्योमृग
युब्भ्यश्श्चवोनमोनमꣳश्श्वब्भ्य÷ ।।२७।।

नमᳲ श्वब्भ्य ᳲ। श्वपतिब्भ्यश्श्चवोनमो नमौभवायचरूद्द्रायचनम÷शर्व्वायचपशु पतयेचनमोनीलग्ग्रीवायचाशितिकण्ण्ठा यचनम÷कपर्द्दिने ।।२८।। नम÷कपर्द्दिने चव्युप्तकेशायचनम÷सहस्राक्षायचशत धन्न्वनेचनमोगिरिशयायचाशिपिविष्ट्टाय चनमोमीढुष्ट्टमायचेषुमतेचनमोह्रस्वाय ।।२९।। नमोह्रस्वाय चव्वामनायचनमो बृहतेचव्वर्षीयसेचनमोवृद्धायचसवृधेचनमो ग्ग्रायचप्प्रथमायचनमऽआशवे ।।३०।। नमऽआशवे चाजिरायचनमᳲशीग्घ्याय चशीब्भ्यायचनमऽऊम्म्योयचावस्वन्न्याय चनमोनादेयायचद्वीप्प्यायच ।।३१।। नमों ज्ज्येष्ठाय चकनिष्ठायचनम÷पूर्व्वजायच परजायचनमोमद्ध्यमायचापगल्भायचनमों जघन्न्यायचबुध्न्यायचनमᳲसोभ्भ्याय

।।३२।। नमः सोब्भ्याय चप्प्रतिसर्य्याय च नमोयाम्म्याय चक्षेम्म्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्न्याय च नमऽउर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च नमोव्वन्न्याय ।।३३।। नमोव्वन्न्याय च कक्क्ष्याय च नमः श्रवाय च प्प्रति श्रवाय च नमऽआशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च नमो बिल्म्मिने ।।३४।। नमो बिल्म्मिने चकवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च नमो धृष्ष्णवे ।।३५।। नमो धृष्ष्णवे चप्प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्न्वने च ।।३६।। नमः स्स्रुत्त्याय च पत्थ्याय च नमः काट्याय च नीप्प्याय च नमः कूल्ल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च नमः कूप्प्याय

।।३७।। नमꣳ कूप्प्याय चावट्ट्यायचनमौ
व्वीद्ध्र्यायचातप्प्यायच नमोमेग्घ्यायच
व्विद्युत्यायचनमोव्वर्ष्यायचावर्ष्यायचनमो
व्वात्याय।।३८।। नमोव्वात्याय चरेष्म्याय
चनमौव्वास्तव्व्यायचवास्तुपायचनमꣳ
सोमायचरूद्द्रायचनमस्ताम्म्रायचारुणायच
नमः शङ्गवे।।३९।। नमः शङ्गवे चपशु
पतयेचनमऽउग्ग्रायचभीमायचनमोग्ग्रेव
धायचदूरेवधायचनमौहन्त्रेचहनीयसेचनमो
व्वृक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्योनमस्ताराय।।४०।।
नमः शम्भवाय चमयोभवायचनमः
शङ्करायचमयस्करायचनमः शिवायचाशिव
तरायच।।४१।। नमꣳ पार्य्याय चावार्य्याय
चनमः प्रतरणायचोत्तरणायचनमस्तीर्त्थ्या
यचकूल्ल्यायचनमꣳ शष्प्यायचफेन्न्यायच
नमः सिकत्त्याय ।।४२।। नमः सिक

त्याय चप्रवाह्याय चनम ÷ कि ६ शिलाय
चक्षयणायचनमं ÷ कपर्द्दिनेचपुलस्तयेच
नमंऽइरिण्यायचप्रपत्थ्यायचनमोव्व्रज्ज्याय
।।४३।। नमोव्व्रज्ज्याय चगोष्ठ्याय च
नमस्तल्प्प्यायचगेह्यायचनमोहृदय्य्यायच
निवेष्प्यायचनमःकाट्यायचगह्वरेष्ठायच
नमःशुष्क्क्याय ।।४४।। नमःशुष्क्क्याय
चहरित्यायचनमं ÷ पाᳫसव्यायचरजस्याय
चनमोलोप्प्यायचोल्लप्प्यायचनमऽऊर्व्व्याय
चसूर्व्व्यायचनम ÷ पर्ण्णाय ।।४५।। नमं ÷
पर्ण्णाय चपर्णशदायचनमऽउद्गुरमाणाय
चाभिघ्नतेचनमऽआखिदतेचप्रखिदतेच
नमंऽइषुकृद्भयोधनुष्कृद्भयᳫश्चवोनमोनमो
वःकिरिकेब्भ्योदेवाना ६ हृदयेब्भ्योनमो
विचिन्न्वत्केब्भ्योनमोविक्षिणत्केब्भ्यो
नमंऽआनिर्हतेब्भ्य ÷ ।।४६।। द्रापेऽ

अन्धसस्प्पतेदरिद्रनीललोहित ।। आ
साम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मो
चनꣳकिञ्चनाममत् ।।४७।। इमारुद्राय
तवसेकपर्द्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमती ।।
यथाशमसद्द्विपदेचतुष्पदेव्विश्श्वम्पुष्टङ्
ग्रामेऽअस्म्मिन्ननातुरम् ।।४८।। यातेरुद्र
शिवातनूः शिवाव्विश्श्वाहाभेषजी ।। शिवा
रुतस्यभेषजीतयानोमृडजीवसे ।।४९।।
परिनोरुद्रस्यहेतिव्वृर्णक्तुपरित्त्वेषस्यदुर्म्मति
रघायोः ।। अवस्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्ष्व
मीढ्वस्तोकायतनयायमृड ।।५०।। मीढुष्ट
मशिवतम शिवोनꣳसुमनाभव ।। परमे
व्वृक्षऽआयुधन्निधायकृत्तिंव्वसानऽआचरपि
नाकम्बिबभ्रदागहि ।।५१।। व्विकिरिद्रव्वि
लोहितनमस्तेऽअस्तुभगवः ।। यास्तेसहस्रꣳ
हेतयोन्न्यमस्म्मन्निवपन्तुताः ।।५२।। सहस्रा

णिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतय÷ ।। तासामीशा नोभगवꣳ पराचीनामुखाकृधि ।।५३ ।। असङ्ख्यातासहस्राणि येरुद्रा ऽअधि भूम्म्याम् ।। तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्न्वानित न्न्मसि ।।५४ ।। अस्म्मिन्न्महत्त्यण्णवेन्त रिक्षेभवा ऽअधि ।। तेषाꣳ सहस्रयोजने वधन्न्वानितन्नमसि ।।५५ ।। नीलग्ग्रीवाꣳ शितिकण्ठादिवꣳ रुद्रा ऽउपश्श्रिता ऽ ।। तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ।।५६ ।। नीलग्ग्रीवाꣳ शितिकण्ठाꣳ शर्व्वा अध ऽ क्षमाचरा ऽ ।। तेषाꣳ सहस्रयोजने वधन्न्वानितन्न्मसि ।।५७ ।। येव्वृक्षेषु शष्प्पिञ्जरानीलग्ग्रीवाव्विलोहिताꣳ ।। तेषांꣳ सहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ।।५८ ।। येभूतानामधिपतयोव्विशिखा स÷कपर्द्दिन÷ । तेषाꣳ सहस्रयोजनेवध

न्वानितन्नमसि ।।५९।। येपथाम्पथिरक्षय
ऽऐलवृदाऽआयुर्य्युध÷ ।। तेषा॑सहस्त्रयोज
नेवधन्नवानितन्नमसि ।।६०।। येतीर्त्था
निप्प्रचरन्तिसृकाहस्तानिषङ्गिण÷ ।। तेषा॑
सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानितन्नमसि ।।६१।।
येन्नेषु । व्विविद्ध्यन्तिपात्रेषुपिबतोजनान् ।।
तेषा॑सहस्त्रयोजनेवधन्न्वानितन्नमसि
।।६२।। यऽएतावन्तश्च्चभूया॑सश्च्च
दिशोरुद्द्रावितस्त्थिरे ।। तेषा॑सहस्त्रयोजने
वधन्न्वानितन्नमसि ।।६३।। नमोस्तु रुद्द्रे
ब्भ्योयेदिवियेषांव्वर्षमिषव॑ ।। तेब्भ्योदश
प्प्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्द
शोर्द्धर्वा÷ ।। तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुते
नोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्च्चनोद्वेष्ट्तिमे
षाञ्जम्भेदध्म॑ ।।६४।। नमोस्तुरुद्द्रे
ब्भ्योयेन्तरिक्षेयेषांव्वातऽइषव॑ ।। तेब्भ्यो

दशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदी
चीर्द्दशोद्ध्वर्वा ऽ ।। तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोव्व
न्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोयश्च्चनोद्द्वेष्ट्टित
मेषाञ्जम्भेदध्ध्म ᳲ ।।६५।। नमोस्तुरुद्द्रे
ब्भ्योयेपृथिव्व्यांय्येषामन्नमिषवᳲ । तेब्भ्यो
दशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदी
चीर्द्दशोद्ध्वर्वा ऽ । तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनो
वन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोयश्च्चनो
द्द्वेष्ट्टितमेषाञ्जम्भेदध्ध्म ᳲ ।।६६।।

शु.यजुर्वेद अध्याय-१६ (१ से ६६ तक)

इति रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः ।।५।।

अथ षष्ठोऽध्यायः

हरिः ॐ ।। व्वय ᳲ सोमव्व्रतेतवमन
स्तनूषुबिब्भ्रत ᳲ ।। प्रजावन्त ᳲ सचेमहि
।।१।। एषते रुद्द्रभाग ᳲ सहस्वस्राम्बिकया
तञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्द्र भाग ऽआखुस्ते
पशुः ।।२।। अवरुद्द्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्ब

कम् ।। यथानोव्वस्यसस्क्करद्यथान ॆ श्श्रेय
सस्क्करद्यथानोव्व्यवसाययर्यात् ।।३।। भेषज
मसिभेषजङ्ग्गवे श्श्वायपुरुषायभेषजम् ।।
सुखम्मेषायमेष्ष्यै ।।४।। त्र्यम्बकंय्यजामहे
सुगन्धिम्पुष्ट्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव
बन्धनान्न्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ।। त्र्यम्बकं
य्यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् ।। उर्व्वारु
कमिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुत ॆ ।।५।।
एतत्ते रुद्द्रावसन्तेनपरोमूजवतोतीहि ।।
अवततधन्न्वापिनाकावस ॆ कृत्तिवासाऽअ
हिंꣳसन्न ॆ शिवोतीहि ।।६।। त्र्यायुषञ्ज
मदग्ग्ने ॆ कश्यपस्यत्र्यायुषम् । यद्देवेषुत्र्या
युषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् ।।७।। शिवोनामा
सिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳ
सी ॆ ।। निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्यायप्प्रजननना
यरायस्पोषायसुप्प्रजास्त्वायसुवीर्य्याय ।।८।।

शु.यजुर्वेद अध्याय-३ (५६ से ६३ तक)

इति रुद्रेषष्ठोऽध्यायः ।।६।।

अथ सप्तमोऽध्यायः

हरिः ॐ उग्रश्श्च भीमश्श्चध्ध्वान्त श्श्चधुनिश्श्च। सासव्हाँश्श्चाभियुग्वाच विक्षिपः स्वाहा॥१॥ अग्नि हृदयेनाश निं हृदयाग्ग्रेणपशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेनभवं य्यक्ना॥ शर्व्वम्मतस्नाभ्यामीशानम्म न्युनामहादेवमन्तः पर्शव्व्येनोग्ग्रन्देवंव्व निष्ठुनाव्विसिष्ठहनुः शिङ्गीनिकोश्या भ्याम्॥२॥ उग्रंल्लोहितेनमित्त्रं सौव्रत्त्ये नरुद्द्रन्दौर्व्रत्येनेद्द्रम्प्रक्रीडेनमरुतोबलेन साद्धयान्प्रमुदा॥ भव्वस्यकण्ठं रुद्द्र स्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्ययकृच्छर्व्वस्यव्व निष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥३॥ लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहात्त्वचेस्वाहा त्त्वचेस्वाहालोहितायस्वाहालोहितायस्वा मेदोभ्यः स्वाहामेदोभ्यः स्वाहा। मा

सेभ्य ँ स्वाहामा ँ सेभ्य ँ स्वाहास्नाव
भ्य ँ स्वाहास्नावभ्य ँ स्वाहास्थभ्य ँ
स्वाहास्थभ्य ँ स्वाहामज्जभ्य ँस्वाहामज्ज
भ्य ँ स्वाहा ।। रेतसेस्वाहापायवेस्वाहा
।।४।। आयासायस्वाहा प्रायासायस्वाहा
संय्यासायस्वाहाव्वियासायस्वाहोद्यासाय
स्वाहा ।। शुचेस्वाहाशोचतेस्वाहाशोच
मानायस्वाहाशोकायस्वाहा ।।५।। तपसे
स्वाहातप्यतेस्वाहातप्यमानायस्वाहा
तप्तायस्वाहाघर्म्मायस्वाहा । निष्कृत्यै
स्वाहाप्रायश्चित्त्यै स्वाहाभेषजाय
स्वाहा ।।६।। यमायस्वाहान्तकायस्वाहा
मृत्यवेस्वाहा ।। ब्रह्मणेस्वाहाब्रह्महत्यायै
स्वाहाव्विश्वेभ्योदेवेभ्य ँ स्वाहाद्यावा
पृथिवीभ्या ँ स्वाहा ।।७।।

शु.यजुर्वेद अध्याय-३९ (७ से १३ तक)

इति रुद्रे सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

हरिः ॐ व्वाजश्च । मे प्रसवश्चमे प्रयतिश्चमेप्रसितिश्चमेधीतिश्चमेक्क्रतुश्चमेस्वरश्चमेश्लोकश्चमेश्श्रवश्चमेश्श्रुतिश्चमेज्ज्योतिश्चमेस्वश्चमेयज्ञेन कल्प्पन्ताम् ।।१।। प्राणश्चे । मेपानश्चमे व्यानश्चमेसुश्चमेचित्तञ्चमऽआधीतञ्चमे व्वाक्चमे मनश्चमे चक्षुश्चमे श्श्रोत्रञ्चमेदक्षश्चमेबलञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।।२।। ओजश्च । मेसहश्चमऽआत्त्माचमेतनूश्चमेशर्म्मचमेव्वर्म्मचमेङ्गानिचमेस्थीनिचमेपरूꣳषिचमेशरीराणिचमऽआयुश्चमेजराचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।।३।। ज्ज्यैष्ठ्यञ्च । मऽआधिपत्त्यञ्चमे मन्न्युश्चमेभामश्चमेमश्चमेम्भश्च मेजेमाचमेमहिमाचमेव्वरिमाचमेप्रथिमाचमे

व्वर्षिमाचमेद्द्राघिमाचमेव्वृद्धञ्चमेव्वृद्धिश्श्च
मेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।।४।। (नं.१)। सत्त्य
ञ्चं। मेश्रद्धाचमेजगच्चमेधनञ्चमेव्विश्श्वञ्च
मेमहश्श्चमेक्क्रीडाचमेमोदश्श्चमेजातञ्चमे
जनिष्ष्यमाणञ्चमेसूक्त्तञ्चमेसूकृतञ्चमे
यज्ञेनकल्प्पन्तानम् ।।५।। ऋतञ्चं। मेमृतञ्च
मेयक्ष्मञ्चमेनामयच्चमेजीवातुश्श्चमेदीर्घायु
त्वञ्चमेनमित्त्रञ्चमेभयञ्चमेसुखञ्चमेशय
नञ्चमेसूषाश्च्चमेसुदिनञ्चमेयज्ञेनकल्प्प
न्ताम् ।।६।। यन्ताचं। मेधर्त्ताचमेक्षेमं
श्श्चमेधृतिश्श्चमेव्विश्श्वञ्चमेमहश्श्च
मेसंव्विच्चमेज्ञात्त्रञ्चमेसूश्श्चमेप्रसूश्श्चमे
सीरञ्चमेलयश्श्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ।।७।।
शञ्चं। मेमयश्श्चमेप्प्रियञ्चमेनुकामश्श्च
मेकामश्श्चमेसौमनसश्श्चमेभगश्श्चमे
द्द्रविणञ्चमेभद्द्रञ्चमेश्श्रेयश्श्चमेव्वसीयश्च्चमे

यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥८॥(नं.२)॥
ऊर्क्च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च
मे घृतञ्च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीति
श्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रञ्च मऽ
औद्भिद्यञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥९॥ रयि
श्च मे रायश्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च मे
विभु च मे प्रभु च मे पूर्णञ्च मे पूर्णतरञ्च मे
कुयवञ्च मेक्षितञ्च मेन्नञ्च मेक्षुच्च मे यज्ञेन
कल्पन्ताम् ॥१०॥ वित्तञ्च मे वेद्यञ्च
मे भूतञ्च मे भविष्यच्च मे सुगञ्च मे सुपत्थ्य
ञ्च मऽऋद्धञ्च मऽऋद्धिश्च मे क्लृप्त
ञ्च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च
मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥११॥ व्रीहयश्च
मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे
मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च
मेणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे

गोधूमाश्श्चमेमसूराश्श्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ता
म्।।१२।। (नं.३)। अश्माच। मेमृत्तिकाच
मेगिरयश्श्चमेपर्व्वताश्श्चमेसिकताश्श्चमेव्वन
स्प्पतयश्श्चमेहिरण्ण्यञ्चमेयश्श्चमेश्यामञ्चमे
लोहञ्चमेसीसञ्चमेत्रपुचमेयज्ञेनकल्प्पन्ता
म्।।१३।। अग्निश्श्च। मऽआपश्श्चमेव्वी
रुधश्श्चमऽओषधयश्श्चमेकृष्टपच्च्याश्श्च
मेकृष्टपच्च्याश्श्चमेग्राम्म्याश्श्चमेपशवआर
ण्याश्श्चमेव्वित्तञ्चमेव्वित्तिश्श्चमेभूतञ्चमे
भूतिश्श्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।१४।। व्वसुच।
मेव्वसतिश्श्चमेकर्म्मचमेशक्तिश्श्चमेर्थश्श्च
मऽएमश्श्चमऽइत्याचमेगतिश्श्चमेयज्ञेनकल्प्प
न्ताम्।।१५।।(नं.४)।। अग्निश्श्च। मइन्द्र
श्श्चमेसोमश्श्चमऽइन्द्रश्श्चमेसविताचमऽ
इन्द्रश्श्चमेसरस्वतीचमऽइन्द्रश्श्चमेपूषा
चमऽइन्द्रश्श्चमेबृहस्प्पतिश्श्चमऽइन्द्रश्श्चमे

यज्ञेनकल्पन्ताम् ।।१६।। मित्रश्च्च । मऽइन्द्र
श्च्चमेव्वरुणश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेधाताचमऽ
इन्द्रश्च्चमेत्त्वष्टाचमऽइन्द्रश्च्चमेमरुतश्च्च
मऽइन्द्रश्च्चमेव्विश्श्वेचमेदेवाऽइन्द्रश्च्चमे
यज्ञेनकल्पन्ताम् ।।१७।। पृथिवीच । मऽइन्द्र
श्च्चमेन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्च्चमेद्यौश्च्चमऽइन्द्र
श्च्चमेसमाश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमेनक्षत्राणि
चमऽइन्द्रश्च्चमेदिशश्च्चमऽइन्द्रश्च्चमे
यज्ञेनकल्पन्ताम् ।।१८।। (नं.५) ।। अ६
शुश्च्च । मेरश्मिश्च्चमेदाब्भ्यश्च्चमेधि
पतिश्च्चमउपा६शुश्च्चमेन्तर्य्यामश्च्चम
ऽऐन्द्रवायवश्च्चमेमैत्रावरुणश्च्चमऽआ
श्श्विनश्च्चमेप्प्रतिप्प्रस्थानश्च्चमेशुक्रश्च्च
मेमन्थीचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ।।१६।। आ
ग्रयणश्च्च । मेव्वैश्श्वदेवश्च्चमेद्ध्रुवश्च्च
मेवैश्श्वानरश्च्चमऽऐन्द्राग्ग्नश्च्चमेमहा

वैश्श्वदेवश्च्चमेमरुत्वतीयाश्श्चमेनिष्क्कै
वल्ल्यश्च्चमेसावित्रश्श्चमेसारस्वस्तश्च्चमे
पात्न्कीवतश्च्चमेहारियोजनश्च्चमेयज्ञेन
कल्प्पन्ताम्।।२०।। स्रुचश्श्च। मेचमसा
श्श्चमेव्वायव्व्यानिचमेद्रोणकलशश्श्चमे
ग्ग्रावाणश्श्चमेधिषवणेचमेपूतभृच्चम ऽआ
धवनीयश्च्चमेव्वेदिश्श्चमेबर्हिश्श्चमे ऽव
भृथश्श्चमेस्वगाकारश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ता
म्।।२१।।(नं.६) अग्निश्श्च। मेघर्म्मश्श्च
मेक्कर्श्च्चमेसूर्य्यश्च्चमेप्प्राणश्च्चमेश्श्व
मेधश्चमेपृथिवीचमेदितिश्च्चमेदितिश्च्च
मेद्यौश्श्चमेङ्गुलय ंशक्क्वरयोदिशश्श्चमे
यज्ञेनकल्प्पन्ताम्।।२२।। व्व्रतञ्च। मऽ
ऋतवश्च्चमेतपश्च्चमेसंव्वत्सरश्च्चमेहो
रात्रेऽउर्व्वष्ठ्ठीवेबृहद्रथन्तरेचमेयज्ञेनकल्प्प
न्ताम्।।२३।। (नं.७)। एकाच। मेतिस्र

श्चमेतिस्रश्चमेपञ्चचमेपञ्चचमेसप्त
चमेसप्तचमेनवचमेनवचमऽएकादशचमऽ
एकादशचमेत्रयोदशचमेत्रयोदशचमेपञ्च
दशचमेपञ्चदशचमेसप्तदशचमेसप्तदश
चमेनवदशचमेनवदशचमऽएकविꣳशति
श्चमऽएकविꣳशतिश्चमेत्रयोविꣳशति
श्चमेत्रयोविꣳशतिश्चमेपञ्चविꣳशति
श्चमेपञ्चविꣳशतिश्चमेसप्तविꣳशति
श्चमेसप्तविꣳशतिश्चमेनवविꣳशतिश्च
मेनवविꣳशतिश्चमऽएकत्रिꣳशच्चमऽ
एकत्रिꣳशच्चमेत्रयस्त्रिꣳशच्चमेयज्ञेनकल्प
न्ताम्।।२४।।(न.८)।। चतस्रश्च। मेष्टौ
चमेष्टौचमेद्वादशचमेद्वादशचमेषोडशचमे
षोडशचमेव्विꣳशतिश्चमेव्विꣳशतिश्च
मेचतुर्व्विꣳशतिश्चमेचतुर्विꣳशतिश्च
मेष्टाविꣳशतिश्चमेष्टाविꣳशतिश्चमे

द्वात्रि꣫ शच्चमेद्वात्रि꣫ शच्चमेषड्त्रि꣫ श
च्चमेषड्त्रि꣫ शच्चमेचत्त्वारि꣫ शच्चमेचत्त्वा
रि꣫ शच्चमेचतु꣡श्चत्वारि꣫ शच्चमेचतु
श्चत्वारि꣫ शच्चमेष्टाचत्त्वारि꣫ शच्चमे
यज्ञेनकल्पन्ताम् ।।२५।।(नं.९)।। त्र्य
विश्च्च। मेत्र्यवीचमेदित्त्यवाट्चमेदित्त्यौही
चमेपञ्चाविश्चमेपञ्चावीचमेत्रिवत्सश्च्च
मेत्रिव्वत्साचमेतुर्य्यवाट्चमेतुर्य्यौहीचमेयज्ञेन
कल्पन्ताम् ।।२६।। पष्ठवाट्च। मेपष्ठौ
हीचमऽउक्षाचमेव्वशाचमऽऋषभश्च्च
मेव्वेहश्च्चमेनड्वाँश्च्चमेधेनुश्च्चमेयज्ञेन
कल्पन्ताम् ।।२७।।(नं.१०) व्वाजायस्वाहा।
प्रसवायस्वाहापिजायस्वाहाक्क्रतवेस्वाहा
व्वसवेस्वाहाहर्प्पतयेस्वाहान्न्हेमुग्ग्धाय
स्वाहामुग्ग्धायवैन꣫ शिनायस्वाहाव्विन꣫
शिनऽआन्त्यायनायस्वाहान्त्यायभौवनाय

स्वाहाभुवनस्यपतयेस्वाहाधिपतयेस्वाहा
प्रजापतयेस्वाहा ।। इयन्तेराण्मित्राययन्ता
सियमन ऽऊर्ज्जेत्वावृष्ट्यैत्वाप्रजानान्त्वा
धिपत्याय ।।२८।। आयुर्य्यज्ञेन । कल्पता
म्प्राणोयज्ञेनकल्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेनकल्प
ताꣳश्रोत्रंयज्ञेनकल्पतांव्वाग्यज्ञेनकल्प
ताम्मनोय्यज्ञेनकल्पतामात्मायज्ञेनकल्प
ताम्ब्रह्मायज्ञेनकल्पताञ्ज्योतिर्य्यज्ञेनकल्प
ताꣳस्वर्य्यज्ञेनकल्पताम्पृष्ठंय्यज्ञेनकल्प
तांयज्ञोयज्ञेनकल्पताम् ।। स्तोमश्चयजुश्च
ऋक्चसामचबृहच्चरथन्तरञ्च ।। स्वर्
देवा ऽअगन्मामृता ऽअभूमप्रजापतेः
प्रजा ऽअभूमव्वेट्स्वाहा ।।२९।। शु.य.अध्याय १८ (१ से २९ तक)

इति रुद्रे अष्टमोऽध्यायः ।।८।।

अथ रुद्रशान्त्याध्यायः ।।९।।

हरिः ॐ । ऋचंव्वाचम्प्रपद्येमनोयजुः
प्रपद्येसामप्राणाम्प्रपद्येचक्षुः श्रोत्रम्प्रपद्ये ।।

व्वागोर्ज÷सहौजोमयिप्प्राणापानौ ।।१।।
यन्न्मेछिद्द्रञ्चक्षुषोहृदयस्यमनसोव्वाति
तृणम्बृहस्प्पतिर्म्मेतद्दधातु ।। शन्नोभवतुभुव
नस्ययस्प्पति÷ ।।२।। भूर्ब्भुवꣳस्व÷ ।
तत्त्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि ।।
धियोयोन÷प्प्रचोदयात् ।।३।। कयानश्चित्र
त्रऽआभुवदूतीसदावृधꣳसखा ।। कयाश
चिष्ट्ठयाव्वृता ।।४।। कस्त्वा सत्त्योमदा
नाम्मꣳहिष्ट्ठोमत्सदन्धसꣳ ।। दृढाचिदारुजे
व्वसु ।।५।। अभीषुणꣳ सखीनामविता
जरितृट्णाम् ।। शतम्भवास्यूतिभि÷ ।।६।।
कयात्वन्नऽऊत्याभिप्प्रमन्दसेव्वृषन् ।। कया
स्तोतृब्भ्यऽआभर ।।७।। इन्द्रोव्विश्श्वस्य
राजति ।। शन्नोऽअस्तुद्विपदेशञ्चतुष्प्पदे
।।८।। शन्नोमित्त्र꣡शंव्वरुणꣳशन्नोभवत्त्वर्य्य
मा ।। शन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पति꣡शन्नोव्विष्णु

रुरुक्रमः ।।९।। शन्नोव्वातः पवता ँ
शन्नस्तपतुसूर्य्यः ।। शन्नं कनिक्क्रदद्दे
वं पर्ज्जन्न्यो ऽअभिवर्षतु ।।१०।। अहा
निशम्भवन्तुनं शं रात्री ं प्प्रतिधीयताम् ।।
शन्न ऽइन्द्राग्ग्नी भवतामवोभि ं शन्न ऽइन्द्रा
वरुणारातहव्व्या ।। शन्न ऽइन्द्रापूषणाव्वाज
सातौशमिन्द्रासोमासुवितायशंय्योः ।।११।।
शन्नोदेवी रभिष्ट्टय ऽआपोभवन्तुपीतये ।।
शंय्योरभिस्स्रवन्तुनः ।।१२।। स्योनापृथिवि
नोभवान्नृक्षरानिवेशनी ।। यच्छानं शर्म्मस
प्रथाः ।।१३।। आपोहिष्ठामयोभुवस्तान ऽ
ऊर्ज्जेदधातन ।। महेरणायचक्षसे ।।१४।।
योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः ।।
उशतीरिवमातरः ।।१५।। तस्म्मा ऽअर
ङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ ।। आपोज
नयथाचनं ।।१६।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ

शान्ति÷पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति÷ ।। व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्श्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वं शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ।।१७।।

दृतेदृं हमामित्त्रस्यमाचक्षुषासर्व्वाणिभूतानिसमीक्षन्ताम् ।। मित्त्रस्याहञ्चक्षुषा सर्व्वाणिभूतानिसमीक्षे ।। मित्त्रस्यचक्षुषा समीक्षामहे ।।१८।। दृतेदृं हमा ।। ज्योक्त्ते सन्दृशिजीव्व्यासञ्ज्योक्त्तेसन्दृशिजीव्यासम् ।।१९।। नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे ।। अन्न्यांस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तुहेतय÷ पावको ऽअस्म्मभ्यं शिवोभव ।।२०।।

नमस्ते । ऽअस्तुव्विद्युतेनमस्तेस्तनयित्नवे ।। नमस्तेभगवन्नस्तुयतः स्व÷समीहसे ।।२१।। यतोयतः समीहसेततोनो ऽअभयङ्कुरु ।। शन्न÷कुरुप्रजाभ्भ्योभयन्नः पशुभ्भ्य÷

।।२२।। सुमित्रियान ऽआप ऽओषधय ꣳ
सन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्म्मैसन्तुयोस्म्मान्द्वेष्टि
यञ्चवंयन्द्विष्म्मः ।।२३।। तच्चक्षुर्देवहि
तम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत् ।। पश्येमशरदः
शतञ्जीवेमशरदः शत ꣳ श्रृणुयामशरदः
शतम्प्रब्ब्रवामशरदः शतमदीना ꣳ स्याम
शरदः शतम्भूयश्च्चशरदः शतात् ।।२४।।

शुक्ल यजुर्वेद अध्याय ३६ (१ से २४ तक)

इति रुद्रे शान्त्याध्यायः ।।

अथ रुद्रे स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राऽध्यायः ।।

हरिः ॐ। स्वस्तिन ऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्र
वाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्श्ववेदा ꣳ ।। स्वस्ति
नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमि ꣳ स्वस्तिनोबृहस्प्पति
र्द्दधातु ।।१।।२५/१६ ॐ पयः पृथिव्याम्पय ऽओ
षधीषुपयोदिव्व्यन्तरिक्षेपयोधा ꣳ ।। पयस्वती ꣳ
प्प्रदिशः सन्तुमह्यम् ।।२।।१८/३६ ॐ व्विष्ण्णो
रराटमसिव्विष्ण्णोः श्नप्त्रेस्त्थोव्विष्ण्णा ꣳ
स्यूरसिव्विष्ण्णोर्ध्रुवोसि ।। व्वैष्ण्णवमसि

व्विष्ण्वेत्त्वा ।।३।।५/२१ ॐ अग्निर्द्देवताव्वातो देवतासूर्य्योदेवताचन्द्रमादेवताव्वसवोदेवता रुद्द्रादेवतादित्यादेवतामरुतोदेवताव्विश्श्वे देवादेवताबृहस्प्पतिर्द्देवतेन्द्रोदेवताव्वरुणो देवता ।।४।।१४/२० ॐ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजा तायवैनमोनमः ।। भवेभवेनातिभवेभवस्व मांभवोद्भवायनमः ।।५।। वामदेवायनमो ज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमःकालाय नमःकलविकरणायनमोबलविकरणाय नमो ।।६।। बलायनमोबलप्रमथनायनमः सर्व्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः ।।७।। अघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ।। सर्व्वेभ्यःसर्व्वशर्वेभ्योनमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ।।८।। तत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि ।। तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ।।६।। ईशानःसर्व विद्यानामीश्वरःसर्व्वभूतानाम् ।। ब्रह्माधि

पतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेअस्तुसदा
शिवोम् ।।१०।। ॐ शिवोनामासिस्वधि
तिस्तेपितानमस्तेअस्तुमामाहि ६ सी ँ ।
निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्यायप्रजननायरायस्पो
षायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय ।।११।। ३/६३ ॐ
व्विश्श्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ।।
यद्भद्रन्तन्न ऽआसुव ।।१२।। ३०/३ ॐ द्यौ ः शान्ति
रन्तरिक्ष ६ शान्तिः पृथिवीशान्तिराप ँ
शान्तिरोषधय ँ शान्तिः ।। व्वनस्प्पतय ँ
शान्तिर्व्विश्श्वेदेवा ँ शान्तिर्ब्रह्मशान्ति ँ सर्व्व ६
शान्ति ँ शान्तिरेवशान्ति ँ सामाशान्तिरे
धि ।।१३।। ३६/१७ ॐ सर्वेषांवाएषव्वेदाना ७
रसोयत्सामसर्वेषामेवैनमेतद्वेदाना ७ रसे
नाभिषिञ्चति ।।१४।।

इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः ।।१०।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।। सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ।।

अनेनकृतेन रुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रः । प्रीयतान्नमम ।।

ॐ साम्बसदाशिवार्पणमस्तु ।। इति ।।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य-
बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञ ᳬ
समिमन्दधातु विश्श्वेदेवास ऽइहमादयन्ता
मो३म्प्रतिष्ठ।। ॐ हृदयायनमः। २/१३

ॐ अबोद्ध्यग्नि॒ समिधाजनानाम्प्रति
धेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वा ऽइवप्प्रवया
मुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रतेनाकमच्छ।।
ॐ शिरसे स्वाहा। १५/२४

ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिम्पृथिव्या-
व्वैश्श्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कवि ᳬ
सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनय
न्तदेवा॒। ॐ शिखायै वषट्।। ३३/८

ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसो
मस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयो
व्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु।।
ॐ कवचायहुम्।। १७/३३

ॐ व्विश्श्वतश्चक्षुरुतव्विश्श्वतोमुखोव्विश्व तोबाहुरुतव्विश्श्वतस्पात्। सम्बाहुब्भ्या न्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः।। ॐ नेत्रत्रयायवौषट्।।$\frac{१७}{१६}$

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः।। मानोव्वीरान्रुद्र भामिनोव्वधीर्हविष्मन्तःसदमित्त्वाहवा महे। ॐ अस्त्रायफट्।$\frac{१६}{१६}$

ॐ वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर हर।।

।। तर्पण ।।

ॐ भवं देवं तर्पयामि। शर्व देवं तर्पयामि। ईशानं देवं तर्पयामि। पशुपतिं देवं तर्पयामि। उग्रम देवं तर्पयामि। रुद्रम देवं तर्पयामि। भीमं देवं तर्पयामि। महान्तं देवं तर्पयामि। भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि।

शतरूद्री विधान

षडंग न्यासः :- मनोजूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहतीछन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे जपे पाठे विनियोगः।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंय्यज्ञ ꣳ समिमन्दधातुव्विश्श्वेदेवास ऽइहमादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ ।। ॐ हृदयायनमः।

अबोद्ध्यग्निरितिमंत्रस्य बुधगविष्ठिराऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः शिरोन्यासेजपेविनियोगः।

ॐ अबोध्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम्। यह्वा ऽइवप्प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रतेनाकमच्छं।। ॐ शिरसे स्वाहा।

मूर्द्धानमितिमंत्रस्य भरद्वाजऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः शिखान्यासेजपेविनियोगः।।

ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिम्पृथिव्यावैश्श्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कविꣳ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः। ॐ शिखायै वषट्।।

मर्म्माणितइतिमंत्रस्य अप्रतिरथऋषिः मर्म्माणिदेवता विराट्छंदः कवचन्यासेजपेविनियोगः।।

ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु।। ॐ कवचायहुम्।।

विश्वतश्चक्षुरितिमंत्रस्यविश्श्वकर्मा भौवनऋषिः विश्श्वकर्मा देवता त्रिष्टुप्छन्दः नेत्रन्यासेजपेविनियोगः।।

ॐ विश्श्वतश्चक्षुरुतविश्श्वतोमुखोविश्श्वतोबाहुरुत विश्श्वतस्पात्। सम्बाहुब्भ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः।। ॐ नेत्रत्रयायवौषट्।।

मानस्तोकइतिमन्त्रस्य परमेष्ठीऋषिः एकरुद्रोदेवता जगती छन्दः अस्त्रन्यासेजपेविनियोगः।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः।। मानोव्वीरान्नुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे। ॐ अस्त्रायफट्।

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

हरिः ॐ।। नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः।। बाहुब्भ्यामुततेनमः।।१।। यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी।। तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।। यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे।। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिंसीः पुरुषञ्जगत्।।३।। शिवेनव्वचसात्त्वागिरिशाच्छाव्वदामसि।। यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मः सुमनाऽअसत्।।४।। अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्रथमोदैव्व्योभिषक्।। अहींश्श्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्श्चयातुधान्न्योधराचीः परासुव।।५।। असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः।। येचैनः रुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्त्रशो

वैषा॑ᳫहेड॑ऽईमहे ।।६ ।। असौयो॑ऽव्वसर्प्पतिनील॑ग्ग्रीवो
विलो॑हित ᳪ।। उतैनङ्गोपा ऽअ॑दृश्श्रन्नदृ॑श्श्रन्नुदहार्य्य ᳪ सदृष्टो
मृ॑डयातिन ᳪ।।७ ।। नमो॑ऽस्तुनील॑ग्ग्रीवाय॑सहस्त्राक्षायमीढुषे॑।
अथोये ऽअ॑स्यसत्वा॑नोहन्तेब्भ्यो॑करन्नम॑ः ।।८ ।। प्रमुञ्च
धन्न्वं॑नस्त्वमुभयोरार्त्न्यो॑ज्ज्यार्म् ।। याश्श्चं॑तेहस्त ऽइषं॑व ᳪ
पराताभ॑गवोव्वप ।।९ ।। व्विज्ज्यन्धनु॑ःकपर्द्दिनोव्विशल्ल्यो
बाणवाँ२ ऽउत ।। अनेशन्नस्ययाऽइषं॑वआभुर॑स्यनिषङ्ग
धिᳪ ।।१० ।। याते॑ हेतिम्मी॑ढुष्टम ऽहस्ते॑बभूवं॑तेधनु॑ः ।
तयास्म्मान्न्विश्श्वतस्त्वम॑यक्ष्म्मयापरि॑भुज ।।११ ।। परि॑ते
धन्न्वं॑नोहेतिरस्म्मान्न्वृणक्तुव्विश्श्वत॑ः ।। अथोय ऽइषु
धिस्तवारे ऽअस्म्मन्निधे॑हितम् ।।१२ ।। अवतत्त्यधनुष्ट्व ᳪ
सह॑स्त्राक्षशते॑षुधे ।। निशीर्य्य॑शल्ल्यानाम्मुखा॑शिवो॑न ः
सुमना॑भव ।।१३ ।। नम॑स्त ऽआयु॑धायाना॑ततायधृष्ष्णवे॑ ।।
उभाब्भ्या॑मुततेनमो॑बाहुब्भ्यान्तवधन्न्वं॑ने ।।१४ ।। मानो॑
महान्तमुतमानो॑ऽअर्ब्भ॑कम्मान ऽउक्षन्तमुतमान॑ऽउक्षितम् ।।
मानो॑व्वधी ᳪ पितरम्मोत॑मातरम्मान॑ःप्प्रियास्तन्न्वोरुद्द्र
रीरिषᳪ ।।१५ ।। मान॑स्तोके । तन॑येमान ऽआयु॑षिमानो
गोषुमानो ऽअश्श्वे॑षुरीरिषᳪ ।। मानो॑व्वीरान्न्रु॑द्द्रभामिनोव्व॑
धीर्हविष्म॑न्त ᳪ सदमित्त्वा॑हवामहे ।।१६ ।। नमोहिर॑ण्य
बाहवे ।। सेनान्न्येदिशाञ्चपत॑येनमोनमो॑व्वृक्षेब्भ्योहरि॑
केशेब्भ्य ᳪ पशूनाम्पत॑येनमोनम ःशष्प्पिञ्जरा॑यत्त्विषीमते

पथीनाम्पतयेनमोनमोहरिकेशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतये
नमोनमोबब्लुशाय ।।१७।। नमोबब्भ्लुशाय। व्याधिनेत्रा
नाम्पतयेनमोनमोभवस्यहेत्त्यैजगताम्पतयेनमोनमोरुद्रायात
तायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः सूतायाहन्त्येव्वनानाम्पतये
नमोनमोरोहिताय ।।१८।। नमोरोहिताय। स्थपतयेव्वृक्षा
णाम्पतयेनमोनमोभुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये
नमोनमोमन्त्रिणेव्वाणिजायकक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैर्घो
षायाक्क्रन्दयतेपत्तीनाम्पतयेनमोनमः कृत्स्नायतया ।।१९।।
नमः कृत्स्नायतया ।। धावतेसत्त्वनाम्पतयेनमोनमः सहमा
नायनिव्व्याधिनऽआव्याधिनीनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गि
णेककुभायस्तेनानाम्पतयेनमोनमोनिचेरवेपरिचरायारण्या
नाम्पतयेनमोनमोव्वञ्चते ।।२०।। नमोव्वञ्चते। परिव्वञ्चते
स्तायूनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणऽइषुधिमतेतस्क्कराणाम्पतयेनमोनमः सृकायिब्भ्योजिघांसद्भ्योमुष्ण
ताम्पतयेनमोनमोसिमद्भ्योनक्तञ्चरद्भ्योव्विकृन्तानाम्प
तयेनमः ।।२१।। नमऽउष्णीषिणे ।। गिरिचरायकुलु
ञ्चानाम्पतयेनमोनमऽइषुमद्भ्योधन्न्वायिब्भ्यश्श्चवो
नमोनमऽआतन्न्वानेब्भ्यः प्रतिदधानेब्भ्यश्श्चवोनमो
नमऽआयच्छद्भ्योस्यद्भ्यश्श्चवोनमोनमोव्विसृजद्भ्यः
।।२२।। नमो व्विसृजद्भ्योव्विद्ध्यद्भ्यश्श्चवोनमोनमः
स्वपद्भ्योजाग्ग्रद्भ्यश्श्चवोनमोनमः शयानेब्भ्यऽआसीने

ब्भ्यश्श्चवोनमोनमस्तिष्ठ्ठद्भ्यौधावद्भ्यश्श्चवोनमोनमः
सभाब्भ्यः ।।२३।। नमःसभाब्भ्यः। सभापतिब्भ्यश्श्च
वोनमोनमोश्श्वेब्भ्योश्श्वपतिब्भ्यश्श्चवोनमोनमऽआ
व्याधिनीब्भ्योव्विविद्धयन्तीब्भ्यश्श्चवोनमोनमऽउगणा
ब्भ्यस्तृꣳहतीब्भ्यश्श्चवोनमोनमोगणेब्भ्यः ।।२४।।
नमोगणेब्भ्यो। गणपतिब्भ्यश्श्चवोनमोनमोव्व्रातेब्भ्यो
व्व्रातपतिब्भ्यश्श्चवोनमोनमो गृत्सेभ्योगृत्सपतिब्भ्यश्श्च
वोनमोनमोव्विरूपेब्भ्योव्विश्श्वरूपेब्भ्यश्श्चवोनमोनमꣳ
सेनाब्भ्यꣳ ।।२५।। नमꣳसेनाब्भ्यꣳ। सेनानिब्भ्यश्श्चवो
नमोनमोरथिब्भ्योऽअरथेब्भ्यश्श्चवोनमोनमःक्षत्तृब्भ्यः
सङ्गृहीतृब्भ्यश्श्चवो नमो नमो महद्भ्योऽअर्ब्भकेब्भ्य
श्श्चवोनमः ।।२६।। नमस्तक्षब्भ्यꣳ।। नमस्तक्षब्भ्योरथ
कारेब्भ्यश्श्चवोनमोनमꣳकुलालेब्भ्यꣳकर्मारेब्भ्यश्चवोनमो
नमोनिषादेब्भ्यःपुञ्जिष्ठेब्भ्यश्चवोनमोनमःश्श्वनिब्भ्यो
मृगयुब्भ्यश्चवोनमोनमꣳश्श्वब्भ्यः ।।२७।। नमꣳश्श्वब्भ्यꣳ।
श्श्वपतिब्भ्यश्चवोनमोनमोभवायचरूद्रायचनमःशर्व्वायच
पशुपतयेचनमोनीलग्ग्रीवायचशितिकण्ठायचनमःकपर्द्दिने
।।२८।। नमःकपर्द्दिने। चव्व्युप्तकेशायचनमःसहस्राक्षाय
चशतधन्न्वनेचनमोगिरिशयायचशिपिविष्टायचनमो
मीढृष्ट्टमायचेषुमतेचनमोह्रस्वाय ।।२९।। नमोह्रस्वाय।
चव्वामनायचनमोबृहतेचव्वर्षीयसेचनमोव्वृद्धायचस

वृधेचनमोग्ग्र्यायचप्रथमायचनमऽआशवे ।।३०।। नमऽ
आशवे । चाजिरायचनमꣳशीग्घ्र्यायचशीब्भ्यायचनमऽ
ऊर्म्म्यायचावस्वन्न्यायचनमोनादेयायचद्वीप्प्यायच ।।३१।।
नमोज्ज्येष्ठाय । चकनिष्ठायचनमः पूर्व्वजायचपरजायचनमो
मद्ध्यमायचाप्रगल्भायचनमोजघन्न्यायचबुध्न्यायचनमꣳ
सोब्भ्याय ।।३२।। नमꣳसोब्भ्याय । चप्रतिसर्य्यायचनमो
याम्म्यायचक्षेम्म्यायचनमꣳश्लोक्यायचावसान्न्यायचनमऽ
उर्व्वर्य्यायचखल्ल्यायचनमोव्वन्न्याय ।।३३।। नमोव्वन्न्याय
चकक्ष्यायचनमः श्रवायचप्रतिश्रवायचनमऽआशुषेणाय
चाशुरथायचनमꣳशूरायचावभेदिनेचनमोबिल्म्मिने ।।३४।।
नमोबिल्म्मिने । चकवचिनेचनमोव्वर्म्मिणेचव्वरूथिनेचनमः
श्रुतायचश्रुतसेनायचनमोदुन्दुब्भ्यायचाहनन्न्यायचनमो
धृष्ष्णवे ।।३५।। नमोधृष्ष्णवे । चप्प्रमृशायचनमोनिष
ङ्गिणेचेषुधिमतेचनमस्तीक्ष्णेषवेचायुधिनेचनमः स्वायु
धायचसुधन्न्वनेच ।।३६।। नमꣳस्रुत्यायच । पत्थ्यायचनमꣳ
काट्यायचनीप्प्यायचनमꣳकूल्ल्यायचसरस्यायचनमोनादे
यायचव्वैशन्तायचनमꣳकूप्प्याय ।।३७।। नमꣳकूप्प्याय ।
चावट्यायचनमोव्वीद्ध्र्यायचातप्प्यायचनमोमेग्घ्यायचव्विद्यु
त्यायचनमोव्वर्ष्यायचावर्ष्यायचनमोव्वात्याय ।।३८।। नमो
व्वात्याय । चरेष्म्यायचनमोव्वास्तव्व्यायचवास्तुपायचनमꣳ
सोमायचरुद्रायचनमस्ताम्म्रायचारुणायचनमः शङ्गवे ।।३९।।

नमः॑ शङ्गवे॑। चपशुपतये॑चनम॑ऽउग्राय॑चभीमाय॑चनमो॑ग्रेव
धायचदूरेवधायचनमो॑हन्त्रेचहनीयसेचनमो॑वृक्षेभ्योहरि
केशेभ्योनमस्ताराय॑।।४०।। नमः॑ शम्भवाय॑। चमयोभवाय॑
चनमः॑ शङ्कराय॑चमयस्कराय॑चनमः॑ शिवाय॑चशिवतराय च
।।४१।। नमः पार्य्याय॑। चावार्य्यायचनमः॑ प्रतरणाय
चोत्तरणायचनमस्तीर्त्थ्याय॑चकूल्ल्यायचनमः शष्प्याय॑च
फेन्न्यायचनमः॑ सिकत्त्यायनमः॑।।४२।। नमः॑ सिकत्याय।
चप्रवाह्यायचनमः किᳬशिलाय॑चक्षयणायचनमः॑ कपर्द्दिने॑च
पुलस्तये॑चनम॑ऽइरिण्यायचप्रपत्थ्यायचनमो॑व्व्रज्ज्याय
।।४३।। नमो॑व्व्रज्ज्याय। चगोष्ठ्याय॑चनमस्तल्प्प्याय॑चगेह्या
यचनमोहृदय्यायचनिवेष्प्यायचनमः काट्याय॑चगह्वरेष्ठाय
चनमः शुष्क्याय।।४४।। नमः शुष्क्याय। चहरित्यायच
नमः॑ पाᳬसव्व्यायचरजस्यायचनमोलोप्प्यायचोल्लप्प्याय
चनमऽऊर्व्व्याय॑चसूर्व्व्याय॑चनमः पर्णाय॑।।४५।। नमः॑
पर्णाय॑। चपर्णशदाय॑चनमऽउद्गुरमाणायचाभिघ्नेतचनम॑ऽ
आखिदतेच॑प्रखिदतेचनम॑ऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्य॑श्श्चवो
नमोनमो॑वः किरिकेभ्योदेवानाᳬहृदयेभ्योनमो॑व्विचिन्न्व
त्केभ्योनमो॑व्विक्षिणत्केभ्योनम॑ऽआनिर्हतेभ्यः॑।।४६।।
द्रापेऽअन्धसस्प्पतेदरिद्रनीललोहित।। आसाम्प्रजानामेषा
म्प्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोच॑नः किंचनाममत्।।४७।। इमा
रुद्राय। तवसे॑कपर्द्दिने॑क्षयद्वीराय॑प्रभरामहेमतीः।। यथा

शमसद्द्विपदेचतुष्पदेव्विश्श्वम्पुष्टङ्ग्रामे ऽअस्म्मिन्ननातुरम्
।।४८।। यातेरुद्द्रशिवातनूः शिवाव्विश्श्वाहाभेषजी ।।
शिवारुतस्यभेषजीतयानोमृडजीवसे ।।४९।। परिनोरुद्द्रस्य
हेतिव्वृर्णक्तुपरित्त्वेषस्यदुर्म्मतिरघायोः ।। अवस्त्थिराम
घवद्भ्यस्तनुष्ष्वमीढ्वस्तोकायतनयायमृड ।।५०।। मीढुष्टम
शिवतम । शिवोनः सुमनाभव ।। परमेव्वृक्ष ऽआयुधन्त्रि
धायकृत्तिंव्वसान ऽआचरपिनाकम्बिभ्रदागहि ।।५१।।
व्विकिरिद्द्रविलोहितनमस्ते ऽअस्तुभगवः ।। यास्तेसहस्रꣳ
हेतयोन्न्यमस्म्मन्निवपन्तुताः ।।५२।। सहस्राणिसहस्र
शोबाह्वोस्तवहेतयः ।। तासामीशानोभगवः पराचीना
मुखाकृधि ।।५३।। असङ्ख्यातासहस्राणि । येरुद्द्रा ऽ
अधिभूम्याम् ।। तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि
।।५४।। अस्म्मिन्न्महत्त्यर्ण्णवेन्तरिक्षेभवा ऽअधि ।।
तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्नमसि ।।५५।। नील
ग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिवꣳ रुद्द्रा ऽउपश्श्रिताः ।। तेषाꣳसहस्र
योजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ।।५६।। नीलग्ग्रीवाःशितिकण्ठाः
शर्व्वाअधः क्षमाचराः ।। तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्न्वा
नितन्न्मसि ।।५७।। येव्वृक्षेषुशष्प्पिञ्जरानीलग्ग्रीवाव्वि
लोहिताः ।। तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ।।५८।।
येभूतानामधिपतयोव्विशिखासः कपर्द्दिनः ।। तेषाꣳ
सहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ।।५९।। येपथाम्पथिरक्षय ऽ

ऐलवृदाऽआयुर्ष्युध÷ ।। तेषाँ सहस्रयोजनेवधन्नवानितन्न
मसि ।।६०।। येतीर्त्थानिप्रचरन्तिसृकाहस्तानिषङ्गिण÷ ।।
तेषाँ सहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्मसि ।।६१।। येन्नेषु ।
व्विविद्ध्यन्तिपात्रेषुपिबतोजनान् ।। तेषाँ सहस्रयोजने
वधन्न्वानितन्नमसि ।।६२।। यऽएतावन्तश्श्चभूयाँ
सश्श्चदिशोरुद्द्रावितस्त्थिरे ।। तेषाँ सहस्रयोजनेवधन्न्वा
नितन्मसि ।।६३।। नमोस्तु । रुद्द्रेब्भ्योयेदिवियेषांव्वर्ष
मिषव ।। तेब्भ्योदशप्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्द्दशोदी
चीर्दशोद्ध्वर्वा ।। तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृड
यन्तुतेयन्द्विष्मोयश्श्चनोद्द्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्ध्म ।।६४।।
नमोस्तु रुद्द्रेब्भ्योयेन्तारिक्षेयेषांव्वातऽइषव ।। तेब्भ्यो
दशप्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वर्वा ।।
तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोव्वन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोय
श्श्चनोद्द्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्ध्म ।।६५।। नमोस्तुरुद्द्रे
ब्भ्योयेपृथिव्व्यांय्येषामन्नमिषव । तेब्भ्योदशप्राचीर्द्दश
दक्षिणादशप्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वर्वा । तेब्भ्योनमोऽ
अस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्म्मोयश्श्चनोद्द्वेष्टित
मेषाञ्जम्भेदध्ध्म ।।६६।।(शु.य.१६ १ से ६६) नमस्तेरुद्द्रमन्न्यवऽ
उतोतऽइषवेनम÷ ।। बाहुब्भ्यामुततेनम÷ ।।६७।। यातेरुद्द्र
शिवातनूरघोरापापकाशिनी ।। तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरि
शन्ताभिचाकशीहि ।।६८।। यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबि

भष्ष्र्यस्तवे ।। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳसीꣳ पुरुष
ञ्जगत् ।।६९।। शिवेनव्वचसात्त्वागिरिशाच्छाव्वदामसि ।।
यथानꣳ सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना ऽअसत् ।।७०।।
अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक् ।। अहींश्श्च
सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वांश्श्चयातुधान्न्योधराचीꣳपरासुव ।।७१।।
असौयस्ताम्म्रो ऽअरुण ऽउतबब्भ्रुꣳ सुमङ्गल÷ ।। येचैनꣳ
रुद्द्रा ऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्स्रशोवैषाꣳहेड ऽईमहे ।।७२।।
असौयो ऽवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोव्विलोहितꣳ ।। उतैनङ्गोपा ऽ
अदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यꣳ सदृष्ट्टोमृडयातिनꣳ ।।७३।।
नमो ऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्स्राक्षायमीढुषे ।। अथोये ऽअस्य
सत्वानोहन्तेब्भ्योकरन्नम÷ ।।७४।। प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमु
भयोरात्न्योज्ज्याम् ।। याश्श्चतेहस्त ऽइषवꣳ पराता
भगवोव्वप ।।७५।। विज्ज्यन्धनु÷कपर्द्दिनोव्विशल्ल्यो
बाणवाँ२ ऽउत ।। अनेशन्नस्यया ऽइषव ऽआभुरस्य
निषङ्गधि? ।।७६।। याते । हेतिम्मीढुष्टम ऽहस्तेबभूवते
धनु÷ । तयास्म्मान्न्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्म्मयापरिभुज ।।७७।।
परितेधन्न्वनोहेतिरस्म्मान्न्वृणक्तुविश्श्वत÷ ।। अथोय ऽइषु
धिस्तवारे ऽअस्म्मन्निधेहितम् ।।७८।। अवतत्त्यधनुष्ट्वꣳ
सहस्स्राक्षशतेषुधे ।। निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोन÷
सुमनाभव ।।७९।। नमस्त ऽआयुधायानाततायधृष्ष्णवे ।।
उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने ।।८०।। मानो

महान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मान ऽउक्षन्तमुतमान ऽउक्षितम् ।।
मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मान ÷ प्प्रियास्तन्न्वोरुद्द्र री
रिषः ।।८१।। मानस्तोके । तनयेमान ऽआयुषिमानोगोषु
मानो ऽअश्श्वेषुरीरिषः ।। मानोव्वीरान्रुद्द्रभामिनोव्वधीर्ह
विष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे ।।८२।। (शु.य.१६ / १ से १६) ॐ एषते ।
रुद्द्रभागः सहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्द्रभाग
आखुस्तेपशुः ।।८३।। अवरुद्द्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ।।
यथानोव्वस्यसस्क्करद्यथानः श्श्रेयसस्क्करद्यथानोव्व्यवसाय
यात् ।।८४।। (शु.य.३ / ५७,५८) नमस्तेरुद्द्रमन्न्यव ऽउतोत ऽइषवेनमः ।।
बाहु ब्भ्यामुततेनमः ।।८५।। १६/१ यातेरुद्द्रशिवातनूरघोरा
पापकाशिनी ।। तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाक
शीहि ।।८६।। १६/२ नतंव्विदाथय ऽइमाजजानान्यद्युष्म्माक
मन्तरम्बभूव । नीहारेणप्रावृताजल्प्याचासुतृप ऽउक्थशा
सश्चरन्ति ।।८७।। व्विश्श्वकर्माह्यजनिष्टदेव ऽआदिद्गन्ध
र्व्वोऽअभवद्द्वितीयः । तृतीयः पिताजनितौषधीनामपाङ्गर्ब्भं
व्व्यदधात्पुरुत्रा ।।८८।। १७/३१,३२ मीढुष्टमशिवतम । शिवोनः
सुमनाभव ।। परमेव्वृक्ष ऽआयुधन्निधायकृत्तिंव्वसान ऽ
आचरपिनाकम्बिभ्रदागहि ।।८९।। व्विकिरिद्द्रविलोहित
नमस्ते ऽअस्तुभगवः ।। यास्तेसहस्रः हेतयोन्न्यमस्म्मन्निव
पन्तुताः ।।९०।। सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतयः ।।
तासामीशानोभगवः पराचीनामुखाकृधि ।।९१।। असङ्ख्या

तासहस्राणि । येरुद्रा ऽअधिभूम्याम् ।। तेषां सहस्रयोजने
वधन्वानितन्मसि ।।६२ ।। (शु.य.१६ ५१ से ५४) व्वय सोमव्रतेतव
मनस्तनूषुबिभ्रत ।। प्रजावन्त सचेमहि ।।६३ ।। एषते ।
रुद्रभाग सहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्रभाग ऽ
आखुस्तेपशु ।।६४ ।। अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ।।
यथानोव्वस्यसस्करद्यथान श्रेयसस्करद्यथानोव्यव
साययात् ।।६५ ।। भेषजमसि भेषजङ्गवेश्वायपुरुषाय
भेषजम् ।। सुखम्मेषायमेष्यै ।।६६ ।। त्र्यम्बकंय्यजामहे
सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय
मामृतात् ।। त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् ।। उर्वारु
कमिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुत ।।६७ ।। एतत्ते । रुद्रा
व्वसन्तेनपरोमूजवतोतीहि ।। अवततधन्वापिनाकाव्वस
कृत्तिवासा ऽअहि सन्न शिवोतीहि ।।६८ ।। त्र्यायुषञ्ज
मदग्ने कश्यपस्स्यत्र्यायुषम् ।। यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नों ऽ
अस्तुत्र्यायुषम् ।।६९ ।। शिवोनामासिस्वधितिस्तेपिता
नमस्ते ऽअस्तुमामाहि सी ।। निर्वर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्याय
प्प्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय ।।१०० ।। (शु.य.३ ५६ से ६३)

।। उत्तर न्यासान्विधाय ।।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो।
त्वरिष्टंय्यज्ञ समिमन्दधातुव्विश्वेदेवास ऽइहमादयन्तामो३
म्प्रतिष्ठ ।। ॐ हृदयायनमः ।

ॐ अबोध्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायती मुषासम्। यह्वा ऽइवप्रवयामुज्जिहाना ᳪ प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ।। ॐ शिरसे स्वाहा।

ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिम्पृथिव्यावैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम्। कविᳯ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्तदेवाः। ॐ शिखायै वषट्।।

ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृते नानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानु देवामदन्तु।। ॐ कवचायहुम्।।

ॐ व्विश्श्वतश्चक्षुरुतव्विश्श्वतोमुखोव्विश्श्वतोबाहुरुत व्विश्श्वतस्पात्। सम्बाहुब्भ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीज नयन्देव ऽएकः।। ॐ नेत्रत्रयायवौषट्।।

ॐ मानस्तोकेतनयेमान ऽआयुषिमानोगोषुमानो ऽअश्श्वेषुरीरिषः।। मानोव्वीरान्रुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्म्मन्तःसदमित्त्वाहवामहे। ॐ अस्त्रायफट्।

ॐ वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।

ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर हर।।

श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।।१।।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।।२।।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथन पुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।।३।।

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणाभिन्नासुतनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।।४।।

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।

अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽय कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।।५।।

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।।६।।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।७।।

महोक्षः ख़ट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणाम्।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।।८।।

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथनतैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।।९।।

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनिलस्कन्धवपुषः।

ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।।१०।।

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्।।११।।

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतो विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।।१२।।

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो
र्नकस्या उन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः।।१३।।

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽसीद् यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः।।१४।।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।

स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः।।१५।।

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता।।१६।।

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयंतेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः।।१७।।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्को रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिः
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः।।१८।।

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्।।१९।।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।

अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ़परिकरः कर्मसुजनः।।२०।।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः।।२१।।

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तंतेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः।।२२।।

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन! पुष्पायुधमपि।
यदिस्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटन-
दवैति त्वामद्धा बत वरद! मुग्धा युवतयः।।२३।।

श्मशानेष्वाक्रीड़ा स्मरहर! पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि।।२४।।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्संगितदृशः।

यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्।।२५।।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योमस्त्वमु धरणिरात्मा त्वमितिच।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता विभ्रति गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि।।२६।।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमयो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिः।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमितिपदम्।।२७।।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देवः श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते।।२८।।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिशर्वाय च नमः।।२९।।

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।

जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तो मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।।३०।।

कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्।।३१।।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमूर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।३२।।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमरुलघवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार।।३३।।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्तया शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान्कीर्तिमांश्च।।३४।।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।३५।।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनूपमं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्।।३६।।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।।३७।।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स गुरुनिजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षी द्दिब्यदिब्यं महिम्नः।।३८।।

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्।।३९।।

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः।।४०।।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः।।४१।।

।। इति श्री पुष्पदन्तप्रणीत श्री शिवमहिम्नः स्तोत्रं समाप्तम्।।

।। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।।

अथ शिवताण्डवस्तोत्र प्रारम्भः

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजगंतुगंमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्।।१।।
जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी-
विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम।।२।।
धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर
स्फुरद्दृगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि।।३।।
जटाभुजंगपिगंलस्फुरत्फणामणिप्रभा-
कदम्बकुंकुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरासुरत्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि।।४।।
ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिंगया
निपीतपंचसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखरेखया विराजमानशेखरं
महः कपालि संपदे सरिज्जटालमस्तु नः।।५।।
सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलिधोरणीविधूसरांघ्रिपीठभूः।

भुजंगराजमालया निबद्ध जाटजूटकः
श्रिये चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ।।६ ।।
करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनंजयाहुतीकृतप्रचण्डपन्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक-
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ।।७ ।।
नवीनमेघमण्डलीनिरूद्धदुर्धरस्फुरत्
कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धुरः ।।८ ।।
प्रफुल्लनीलपकंजप्रपन्चकालिमप्रभा-
बलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ।।९ ।।
अखर्वसर्वमंगलाकलाकदम्बमन्जरी-
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणीमधुव्रतम् ।
स्मरान्तकंपुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ।।१० ।।
जयत्यदभ्रविभ्रमभ्रमद्धुजंगमश्वसद्
विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिंधिमिंधिमिध्वनन्मृदंगतुंगमंगल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ।।११ ।।
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजंगमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्ष पक्षयोः

तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ।।१२।।
कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुंजकोटरे वसन्
विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्थमंजलिं वहन् ।
विलोललोललोचनाललामभाललग्नकं
शिवेति मन्त्रमुच्चरन्सदा सुखी भवाम्यहम् ।।१३।।
निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका-
निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं
परश्रियः परं पदं तदंगजत्विषां चयः ।।१४।।
प्रचण्डवाडवानलप्रभाशुभप्रचारिणी
महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ।
विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः
शिवेति मन्त्रभूषणं जगज्जयाय जायताम् ।।१५।।
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन् नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम् ।।१६।।
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरंगयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ।।१७।।

।। इति रावणकृत शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

।। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः ।।

पार्वतीलास्यम्

(आचार्य बृहस्पति विरचितम्)

शशाङ्क शेखरज्ज्वलस्मितांशुमालिकालसद्
विनोदमोद सिन्धुमज्जनोत्सुकाऽपराजिता।
मदालसाङ्ग भङ्गिमाऽङ्गनाविलासदेशिका
महेश मोहिनी महेश्वरी जयेदमंगलम्।।१।।

लसल्लटिका विलोल मौक्तिकालि शोभना
लयोर्मिलालिताङ्गहार मालिका मनोहरा।
दिगन्नगिन्दिगिन्नन्दिगिन्न गिन्निति ध्वज-
न्मृदङ्ग सङ्गिनी सनोतु पार्वती सदा शिवम्।।२।।

हिरण्यमयील्लसत् किरीटिनी सुवर्णवर्णिनी
मणिप्रभामयूखजाल लालिताङ्ग दीपिनी।
चलत्का स्थ काञ्चिदामिनी द्युति प्रवर्षिणी
सुहासिनी गिरीश नन्दिनी करोतु मंगलम्।।३।।

अनङ्ग सङ्गिनी मनस्तरङ्ग भङ्गि नन्दिता-
ङ्गहार कल्पनाकलाप कौशलान्विता।
रुनुञ्झुनुन् रुनुञ्झुनुन् रुनुञ्झुनुन् नादिनी
शिवाविमुक्तताण्डवं शिवञ्चिरायु पश्यतु।।४।।

सितस्मिताधरप्रवाल निन्दितेन्दु लेखया
विमुक्त बेणिसर्पिणी हताहि मण्डल श्रिया।

शुभाङ्ग भङ्गिनिर्जितौ तरङ्गजाह्नवीत्विषा
प्रमाद्यतामहर्निशं शिवः प्रसन्नयो मया।।५।।

चलत्पदाम्बुजार्पिते रलक्तकाङ्कितैः परा
म्प्रफुल्लपङ्कजच्छविं समर्प्यदर्पण प्रभम्।
हिमावृतावनीत लङ्कटिस्थ किङ्किणी क्वण
प्रवीणया विनोद्यताममन्दमिन्दु शेखरः।।६।।

महेश मौलि मल्लिका मिलन्मिलिन्द गुञ्जित
म्प्रकल्प्य मध्यमस्वरं सुमध्यमाभि रैशकम्।
प्रगीयमानमालिभिः प्रबन्धमङ्गभङ्गिभिः
र्व्यनक्तु शैलजा मनोजवैरिणोऽनिशंमुदे।।७।।

अपाङ्ग मङ्गिमेङ्गिता भिषङ्म्हर्षितो हरः
पदारविन्द नूपुर क्वणेन मन्द हासया।
सलीलमालिवृन्दवन्दनोल्लसद्विलासया
निमन्त्र्यतामनङ्गगर्वभञ्जकोऽनुवृत्तये।।८।।

पुराविशाल बाहुदण्ड मण्डनैभुजङ्गभै
र्मृदङ्गवेणुवल्लकी निनाद मैहितैस्ततः।
श्लघाङ्गबन्धनच्युतैरचञ्चलैश्शनैश्शनैः
सरद्भिरन्तरान्तरा विरम्यतामितस्ततः।।९।।

मदोल्लसन्महेश मानसोर्मिजालमीलितम्
महानलस्फुलिङ्गवर्जितं ललाट लोचनम्।

जटाभुजङ्गराजये शिरः स्वजह्नु सूनवे
निरन्तरं सुखावहं सखी जनाय जायताम्।।१०।।
उमापद क्रमोल्लसन्मना मानगधीश्वरो
हिलन् स्फुरैश्चलन्मिलन् हसन्ध्वनन्समन्ततः।
सखीजनोतवीणितो विनोद भाजनं शिवो
हिमाद्रिजा मृणालबाहुवेष्टितो विलोक्यताम्।।११।।
हिलत्सुवर्ष कुण्डलोल्लसत्कपोल दर्पणा
लुठद्विलोल मौक्तिका वलील सत्पयोधरा।
झनञ्झनञ्झनञ्झनेति कास्य तालक-
स्वनानुवर्तिनी गिरीन्द्रजाश्रयेत्फणीन्द्रिणम्।।१२।।

।। शमिति ।।

कर्पूरार्तिः

इसके बाद कपूर अथवा दीपक (एक या अनेक) द्वारा आरती करें तथा इन मंत्रों को पढ़ें -

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳ रज॑ꣳपितुरप्रायि धामभिः।। दिवꣳसदाꣳसिबृहतीव्वितिष्ठस ऽआत्वेषंवर्त्ततितमः।। ॐ इदꣳ हविꣳप्प्रजननम्मे ऽअस्तुदशवीरꣳ सर्वगणꣳस्वस्तये। आत्मसनिप्प्रजासनीपशुसनिलोकसन्न्यभयसनि। अग्निꣳप्रजाम्बहुलाम्मेकरोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्मासुधत्त।।

जय गंगाधर आरती

जयगंगाधर हर शिव जय गिरजाधीशा ।। शिव जय० ।।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।१।।

कैलासे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने ।। शिव० ।।
गुंजति मधुकर पुंजे कुंज वने गहने ।। ॐ हर० ।।२।।

कोकिल कूजति खेलति हंसावलि ललितां ।। शिव० ।।
रचयति कला कलापं नृत्यति मुद सहिता ।। ॐ हर० ।।३।।

तस्मिल्ललित सुदेशे शालामणि रचिता ।। शिव० ।।
तन्मध्ये हर निकटे गौरी मुद सहिता ।। ॐ हर० ।।४।।

क्रीडां रचयति भूषां रंजित निजमीशं ।। शिव० ।।
ब्रह्मादिक सुरसेवित प्रणमति ते शीर्षं ।। ॐ हर० ।।५।।

विबुधवधूबहुनृत्यति हृदये मुद सहिता ।। शिव० ।।
किन्नरगानं कुरुते सप्तस्वर सहिता ।। ॐ हर० ।।६।।

धिनकत थै थै धिनकत मृदंगं वादयते ।। शिव० ।।
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नादयते ।। ॐ हर० ।।७।।

रुण रुण चरणे रचयति नुपरमुज्वलिता ।। शिव० ।।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां ।। ॐ हर० ।।८।।

तां तां लुप चुप तालं मधुरं नादयते ।। शिव० ।।
अंगुष्ठांगुलि नादं लास्यकतां कुरुते ।। ॐ हर० ।।९।।

कर्पूरद्युति गौरं पंचानन सहितम् ।। शिव० ।।
त्रिनयन शशधर मौले विषधर कण्ठयुतम् ।। ॐ हर० ।।१०।।

सुन्दर जटाकलापं पावक युत भालं ।। शिव० ।।
डमरू त्रिशूलपिनाकं कर धृत नृकपालम् ।। ॐ हर० ।।११।।

शंख निनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।। शिव०।।
नीराजयते ब्रह्मा वेद ऋचां पठते।। ॐ हर०।।१२।।

इति मृदुचरण सरोजे हृति कमले धृत्वा।। शिव०।।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा।। ॐ हर०।।१३।।

मुण्डरचित उर माला पन्नग उपवीतम्।। शिव०।।
वाम विभागे गिरजा रूपं अति ललितम्।। ॐ हर०।।१४।।

सकल शरीरे मनसिज कृत भस्माभरणम्।। शिव०।।
इति वृषभध्वजरूपे तापत्रय हरणम्।। ॐ हर०।।१५।।

ध्यानं आरति समये हृदये इति कृत्वा।। शिव०।।
रामं त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा।। ॐ हर०।।१६।।

आरतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।। शिव०।।
शिव सायुज्यं गच्छति भक्त्या या श्रृणुते।। ॐ हर०।।१७।।

।। ॐ नमः शिवाय।।

आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा,
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगी धारा।। ॐ हर हर हर महादेव।।

एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।। शिव पंचानन०।।
हंसासन गरुड़ासन, वृषवाहन राजै।। ॐ हर हर हर महादेव।।

दोयभुज चार चतुर्भुज, दशभुज ते सोहै।। शिव दश०।।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहै।। ॐ हर हर हर महादेव।।

अक्षमाला वनमाला, मुण्डमाला धारी।। शिव मुण्ड०।।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी।। ॐ हर हर हर महादेव।।

नन्दीवाहन खग वाहन शिव चक्रत्रिशूलधारी।। शिव चक्र०।।
त्रिपुरारी शुभकारी कर कमलाधारी।। ॐ हर हर हर महादेव।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।। शिव बाघा०।।
ब्रह्मादिक सनकादिक भूतादिक संगे।। ॐ हर हर हर महादेव।।

लक्ष्मीवर सावित्री गंगा पारवती संगे।। शिव पार०।।
बाघाम्बर आसन पर उमया अर्धंगे।। ॐ हर हर हर महादेव।।

करमध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धर्ता।। शिव चक्र०।।
जगकर्ता जगभर्ता जन पालन कर्ता।। ॐ हर हर हर महादेव।।

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका।। शिव जानत०।।
प्रणवाक्षर सनुमध्ये ये तीनों एका।। ॐ हर हर हर महादेव।।

काशी में विश्वनाथ विराजे नन्दी ब्रह्मचारी।। शिव नन्दी०।।
नित उठि दरसन पावत महिमा अति भारी।। ॐ हर हर हर महादेव।।

साम्ब सदाशिव की आरती जो कोई नर गावै।। शिव जो०।।
कहत शिवानन्द स्वामी, इच्छा फल पावै।। ॐ हर हर हर महादेव।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामी।।

कदलीगर्भ संभूतं कर्पूरेण प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

इसके बाद आरती जल द्वारा शीतल करें। सभी भक्तजन आरती लें। हाथ धोकर भगवान को प्रणाम करें। हाथ में पुष्प-बिल्वपत्र आदि लेकर पुष्पांजलि करें।

पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेनयज्ञमयजयन्तदेवास्तानिधर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।। तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्रपूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः।।१।। ३१/१६

ॐ व्विश्श्वतश्चक्षुरुतव्विश्श्वतोमुखो व्विश्श्वतोबाहुरुतव्विश्श्वतस्प्पात् ।। सम्बाहुब्भ्यान्धमतिसम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देव ऽ एकः ।।२।। $\frac{१७}{१६}$

ॐ तत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि । तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ।।३।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय्ग कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय। महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यंताया एकराडिति ।।

तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।।

ॐ मानस्तोकेतनयेमान ऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिष ं। मानोव्वीरान्रुद्र

भाभिनोव्वधीर्हविष्म्मन्त ँ सदमित्त्वा हवामहे ।। १६/१६

सेवन्तिकाबकुलचम्पकपाटलाब्जैः पुन्नागजातिकर वीररसाल पुष्पैः।
विल्व प्रवाल तुलसीदल मंजरीभिः त्वां पूजयामि विश्वेश्वर मे प्रसीद ।।

मंत्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि

इसके बाद अपने स्थान पर खड़े होकर एक प्रदक्षिणा करें।

ॐ येतीर्थानिप्प्रचरन्तिसृकाहस्ता निषङ्गिगणः। तेषां ँ सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानितन्न्मसि ।। १६/६१

ॐ सप्तास्यासन्न्परिधयस्त्रि ँ सप्त समिधः कृताः ।। देवायद्यज्ञन्तन्न्वानाऽ अबध्नन्न्पुरुषम्पशुम् ।। ३१/१५

इसके बाद आसन पर बैठकर शिवादि सभी देवताओं का उत्तर पूजन करें।

ॐ नमः शम्भवाय। चमयोभवायच नमः शङ्करायचमयस्क्करायचनमः शिवायचशिवतरायच ।। १६/४१

गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यं निवेदयामि

इसके बाद सब शान्त होकर भगवान शंकर के स्तोत्र का श्रद्धा से पाठ करें।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणाविधिः स्तोत्राणि सर्वागिरो,
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।१।।

करचरणकतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करूणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।२।।

इसके बाद सदाशिव की प्रसन्नता के लिए एक **वृषभ दान** की दक्षिणा का संकल्प करें। सपत्नीक दाहिने हाथ में जलाक्षत, पुष्प, पूगीफल, दक्षिणा रखकर आगे लिखा संकल्प बोलें :-

ॐ विष्णु-३ अमुक गोत्राः शर्माहं भवानी शंकर देवता प्रीत्यर्थं कृतैदत् रुद्राभिषेक कर्माणि न्यूनारिक्त दोष परिहारार्थं सांगोपांग फलावाप्तये मनसः कल्पित वृषभ दान निष्क्रिय भूतं रजतं चन्द्र दैवतं द्रव्यं सदा शिवार्पणमस्तु।

कायेन वाचा मन्सेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पये तत्।।

इसके बाद आचार्य एवं पाठकर्ता द्विजजनों को संकल्पपूर्वक दक्षिणा दान करें। अनुष्ठान पूर्ति हेतु सभी ब्राह्मणों को स्वर्णदान एवं भूयसी दक्षिणा का दान करना चाहिए।

इसके उपरान्त ४ अविधुर ब्राह्मण एवं यजमान एवं उपस्थित जन समुदाय का अभिषेक करें।

व्वसो ꣳ पवित्रमसिशतधारम्व्वसो ꣳ पवित्रमसिसहस्त्रधारम्।।
देवस्त्वासवितापुनातुव्वसो ꣳपवित्रेणशतधारेणसुप्वाकामधुक्ष ꣳ।।

इस मंत्र सबको तिलक आशीर्वाद रक्षा बन्धन आदि करें। रत्न लिंग नमर्देश्वर पार्थिवेश्वर ज्योतिर्लिंग का चढ़ा हुआ निर्माल्य ग्रहण कर सकते हैं। यदि किसी शिवाले में अभिषेक हो रहा हो तो वहाँ चण्ड का वास होने से प्रसाद ग्रहण करना निषेध है।

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव विसर्जनम्।।

शिवाऽष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् (१)

देवा ऊचुः

जय शम्भो विभो रुद्र स्वयम्भो जय शंकर।।
जयेश्वर जयेशान जय सर्वज्ञ कामद! ।।१।।

नीलकण्ठ जय श्रीद श्रीकंठ जय धूर्जटे! ।
अष्टमूर्तेऽनन्तमूर्ते महामूर्ते जयानघ! ।।२।।

जय पापहरानङ्ग - निःसङ्गाभङ्ग - नाशन! ।
जय त्वं त्रिदशाधार त्रिलोकेश त्रिलोचन! ।।३।।

जय त्वं त्रिपथाधार त्रिमार्ग त्रिभिरूर्जित! ।
त्रिपुरारे त्रिधामूर्ते जयैक-त्रिजटात्मक! ।।४।।

शशिशेखर शूलेश पशुपाल शिवाप्रिय! ।
शिवात्मक शिव श्रीद सुहृच्छ्रीशतनो जय! ।।५।।

सर्व सर्वेश भूतेश गिरीश त्वं गिरीश्वर! ।
जयोग्ररूप भीमेश भव भर्ग जय प्रभो! ।।६।।

जय दक्षाऽध्वर - ध्वंसिन्नन्धक - ध्वंसकारक! ।
रुण्डमालिन् कपालिंस्त्वं भुजङ्गनिजभूषण! ।।७।।

दिगम्बर दिशांनाथ व्योमकेश चितांपते! ।
जयाधार निराधार भस्माधार धराधर! ।।८।।

देवदेव महादेव देवतेशादिदैवत ।
बह्विवीर्य जय स्थाणो जयायोनिजसम्भव ।।९।।

भव शर्व महाकाल भस्माङ्ग सर्पभूषण ।
त्र्यम्बकस्थपते वाचांपते भो जगतांपते ।।१०।।

शिपिविष्ट विरूपाक्ष जय लिङ्ग वृषध्वज ।

नीललोहित पिङ्गाक्ष जय खट्वाङ्गमण्डन ।।११।।

कृत्तिवास अहिर्बुध्न्य मृडानीश जटाम्बुभृत् ।
जगद्भ्रातर्जगन्मातर्जगत्तात जगद्गुरो ।।१२।।

पञ्चवक्त्र महावक्त्र कालवक्त्र गजास्यभृत् ।
दशबाहो महाबाहो महावीर्य महाबल् ।।१३।।

अघोरघोरवक्त्र त्वं सद्योजात उमापते ।
सदानन्द महानन्द नन्दमूर्ते जयेश्वर ।।१४।।

एवमष्टोत्तरशतं नाम्नां देवकृतं तु ये ।
शम्भोर्भक्त्या स्मरन्तीह श्रृणवन्ति च पठन्ति च ।।१५।।

न तापास्त्रिविधास्तेषां न शोको न रुजादयः ।
ग्रहगोचरपीडा च तेषां क्वाऽपि न विद्यते ।।१६।।

श्रीः प्रज्ञा-ऽऽरोग्यमायुष्यं सौभाग्यं भाग्यमुन्नतिम् ।
विद्यां धर्मं मतिः शम्भोर्भक्तिस्तेषां न संशयः ।।१७।।

इति श्रीस्कन्दपुराणे शिवाष्टोत्तरशतनामस्तात्रं सम्पूर्णम् ।।

हिमालयकृतं शिवस्तोत्रम्(२)

हिमालय उवाच

त्वं ब्रह्मा सृष्टिकर्ता च त्वं विष्णुः परिपालकः ।
त्वं शिवः शिवदोऽनन्तः सर्वसंहारकारकः ।।१।।

त्वमीश्वरो गुणातीतो ज्योतीरूपः सनातनः ।
प्रकृतिः प्रकृतीशश्च प्राकृतः प्रकृतेः परः ।।२।।

नानारूपविधाता त्वं भक्तानां ध्यानहेतवे ।
येषु रूपेषु यत्प्रीतिस्तत्तद्रूपं बिभर्षि च ।।३।।

सूर्यस्त्वं सृष्टिजनक आधारः सर्वतेजसाम् ।
सोमस्त्वं सस्यपाता च सततं शीतरश्मिना ।।४।।

वायुस्त्वं वरुणस्त्वं च विद्वांश्च विदुषां गुरुः ।
मृत्युञ्जयो मृत्युमृत्युः कालकालो यमान्तकः ।।५।।

वेदस्त्वं वेदकर्ता च वेदवेदाङ्गपारगः ।
विदुषां जनकस्त्वं च विद्वांश्च विदुषां गुरुः ।।६।।

मन्त्रस्त्वं हि जपस्त्वं हि तपस्त्वं सत्फलप्रदः ।
वाक् त्वं रागाधिदेवी त्वं तत्कर्ता तद्गुरूः स्वयम् ।।७।।

अहो सरस्वतीबीजं कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ।
इत्येवमुक्त्वा शैलेन्द्रस्तस्थौ धृत्वा पादाम्बुजम् ।।८।।

तत्रोवास तमाबोध्य चावरुह्य वृषाच्छिवः ।
स्तोत्रमेतन्महापुण्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।।९।।

मुच्यते सर्वपापेभ्यो भयेभ्यश्च भवार्णवे ।
अपुत्रो लभते पुत्रं मासमेकं पठेद्यदि ।।१०।।

भार्याहीनो लभेद् भार्या सुशीलां सुमनोहराम् ।
चिरकालगतं वस्तु लभते सहसा ध्रुवम् ।।११।।

राज्यभ्रष्टो लभेद्राज्यं शंकरस्य प्रसादतः ।
कारागारे श्मशाने च शत्रुग्रस्तेऽतिसंकटे ।।१२।।

गम्भीरेऽतिजलाकीर्णे भग्नपोते विषादने ।
रणमध्ये महाभीते हिंस्रजन्तुसमन्विते ।
सर्वतो मुच्यते स्तुत्वा शंकरस्य प्रसादतः ।।१३।।

इति ब्रह्मवैवर्ते श्रीकृष्णजन्मखण्डे हिमालयकृतं शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्री शिव अष्टोत्तरशत नामावलि

१. श्री शिवाय नमः।
२. श्री महेश्वराय नमः।
३. श्री शम्भवे नमः।
४. श्री पिनाकिने नमः।
५. श्री शशि शेखराय नमः।
६. श्री वामदेवाय नमः।
७. श्री विरूपाक्षाय नमः।
८. श्री कपर्द्दिने नमः।
९. श्री नीललोहिताय नमः।
१०. श्री शंकराय नमः।
११. श्री शूलपाणये नम :
१२. श्री खट्वांगधारिणे नमः।
१३. श्री विष्णुवल्लभाय नमः।
१४. श्री शिपिविष्टाय नमः।
१५. श्री अम्बिकानाथाय नमः।
१६. श्री श्रीकण्ठाय नमः।
१७. श्री भक्तवत्सलाय नमः।
१८. श्री भवाय नमः।
१९. श्री शर्वाय नमः।
२०. श्री त्रिलोकेशाय नमः।
२१. श्री शितिकण्ठाय नमः।
२२. श्री शिवाप्रियाय नमः।
२३. श्री उग्राय नमः।
२४. श्री कपालिने नमः।
२५. श्री कामारये नमः।
२६. श्री अन्धकासुरसूदनाय नमः।
२७. श्री गंगाधराय नमः।
२८. श्री ललाटाक्षाय नमः।
२९. श्री कालकालाय नमः।
३०. श्री कृपानिधये नमः।
३१. श्री भीमाय नमः।
३२. श्री परशुहस्ताय नमः।
३३. श्री मृगपाणये नमः।
३४. श्री जटाधराय नमः।
३५. श्री कैलासवासिने नमः।
३६. श्री कवचये नमः।
३७. श्री कठोराय नमः।
३८. श्री त्रिपुरान्तकाय नमः।
३९. श्री वृषांकाय नमः।
४०. श्री वृषभारूढ़ाय नमः।
४१. श्री भस्मोद्धूलित विग्रहाय नमः।
४२. श्री सामप्रियाय नमः।
४३. श्री स्वरमयाय नमः।
४४. श्री त्रयीमूर्तये नमः।
४५. श्री अनीश्वराय नमः।
४६. श्री सर्वज्ञाय नमः।
४७. श्री परमात्मने नमः।
४८. श्री सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः।
४९. श्री हविर्यज्ञमयाय नमः।
५०. श्री सोमाय नमः।
५१. श्री पञ्चवक्त्राय नमः।
५२. श्री सदाशिवाय नमः।

५३. श्री विश्वेश्वराय नमः।	८१. श्री अहिर्बुध्न्याय नमः।
५४. श्री वीरभद्राय नमः।	८२. श्री दिगम्बराय नमः।
५५. श्री गणनाथाय नमः।	८३. श्री अष्टमूर्तये नमः।
५६. श्री प्रजापतये नमः।	८४. श्री अनेकात्मने नमः।
५७. श्री हिरण्यरेतसे नमः।	८५. श्री सात्त्विकाय नमः।
५८. श्री दुर्द्धर्षाय नमः।	८६. श्री शुद्धविग्रहाय नमः।
५९. श्री गिरीशाय नमः।	८७. श्री शाश्वताय नमः।
६०. श्री गिरिशाय नमः।	८८. श्री खण्डाय नमः।
६१. श्री अनघाय नमः।	८९. श्री परशुरजसे नमः।
६२. श्री भुजंगभूषणाय नमः।	९०. श्री पाशविमोचनाय नमः।
६३. श्री भर्गाय नमः।	९१. श्री मृडाय नमः।
६४. श्री गिरिधन्विने नमः।	९२. श्री पशुपतये नमः।
६५. श्री गिरिप्रियाय नमः।	९३. श्री अव्याय नमः।
६६. श्री कृत्तिवासाय नमः।	९४. श्री महादेवाय नमः।
६७. श्री पुरारये नमः।	९५. श्री देवाय नमः।
६८. श्री भगवते नमः।	९६. श्री प्रभवे नमः।
६९. श्री प्रमथाधिपाय नमः।	९७. श्री पूषदन्तविदारिणे नमः।
७०. श्री मृत्युञ्जयाय नमः।	९८. श्री व्यग्राय नमः।
७१. श्री सूक्ष्मतनवे नमः।	९९. श्री दशाध्वरहरये नमः।
७२. श्री जगद्व्यापिने नमः।	१००. श्री हराय नमः।
७३. श्री जगद्गुरवे नमः।	१०१. श्री भगनेत्रभिदे नमः।
७४. श्री व्योमकेशाय नमः।	१०२. श्री अव्यक्ताय नमः।
७५. श्री महासेनाय नमः।	१०३. श्री सहस्राक्षाय नमः।
७६. श्री जनकाय नमः।	१०४. श्री सहस्रपातये नमः।
७७. श्री चारूविक्रमाय नमः।	१०५. श्री अपवर्गप्रदाय नमः।
७८. श्री रुद्राय नमः।	१०६. श्री अनन्ताय नमः।
७९. श्री भूतपतये नमः।	१०७. श्री तारकाय नमः।
८०. श्री स्थाणवे नमः।	१०८. परमेश्वराय नमः।

इसके उपरान्त बैठकर हाथ जोड़कर शिवजी की स्तुति करें :-

त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे।
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नमः।।
गंगाधर नमस्तुभ्यं वृषभध्वज नमोस्तुते।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो भूयो नमो नमः।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्त परमेश्वर

इसके बाद देवताओं का उत्तर पूजन करें तथा प्रणाम करें -

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैलेमल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकाल ओंकारममरेश्वरम्।।
केदार हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशंकरम्।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।।
वैद्यनाथ चिताभूमौ नागेशं दारुकावने।
सेतुबन्धे च रामेशं घुष्मेशं च शिवालये।।
द्वादशैतानि नमामि पूजाकाले सदा पठेत्।।

करचरणकृतं वा क्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।।
विहितमविहितं वाः सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो।।

नमः पार्वतीपतये हर हर।

काल हर, कंटक हर, दुःख हर, दारिद्र्य हर।
हर हर कहे तो हारे क्यों, हर का नाम विसारे क्यों।

अनेन श्री रुद्रपूजाभिषेककर्मणा भगवद्भवानीशंकर देवता प्रीयतां न मम।। ॐ शिवार्पणमस्तु।।

ॐ नमः शिवाय।। ॐ नमः शिवाय।। ॐ नमः शिवाय।।

अथ पौराणिक रुद्राभिषेक

वेदों एवं पुराणों में शिवार्चन की अनेक विधियाँ वर्णन की गयी हैं। वेद के मंत्रों से अभिषेक करना सर्वसाधारण के वश की बात नहीं हैं। अतएव यहाँ श्री महाभारत के द्रोण-पर्व में वर्णित पौराणिक रुद्राभिषेक दे रहे हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इस विधि का उपदेश किया था। इसके अनेक प्रकार हैं। संतान की इच्छा वाला तन्डुल से, धन प्राप्ति के लिए बिल्वपत्र से, कन्या के लिए धान्य से (समूचे धान), दीर्घायु के लिए दूर्वाङ्कुर से, पशु-वाहन-भृत्य आदि की इच्छा के लिए गोघृत की धारा से, शत्रु नाश के लिए कुशोदक से श्री आशुतोष भगवान् शिव पर यह श्लोक बोलकर कम से कम ११ बार अभिषेक करना चाहिए। यह अभिषेक विधि भी सद्यःफलदायी है।

अभिषेक श्लोकाः

ॐ नमो भवाय शर्वाय रुद्राय वरदाय च।
पशूनांपतये नित्यं उग्राय च कपर्दिने ।।१।।
महादेवाय भीम्राय त्र्यम्बकाय शिवाय च।
ईशानायमखघ्नाय नमस्ते मखघातिने ।।२।।
कुमारगुर्वे नित्यं नीलग्रीवाय वेधसे।
विलोहिताय धूम्राय ब्याधिने चापराजिते ।।३।।
नित्यं नील शिखंडाय शूलिने दिव्यचक्षुषे।
हन्त्रे गोत्रे त्रिनेत्राय व्याधाय च सुरेतसे ।।४।।
अचिन्त्यायाम्बिकामंत्र सर्वदेवस्तुताय च।
वृषभध्वजाय मुण्डाय जटिने ब्रह्मचारिणे ।।५।।

विश्वात्मके विश्वसृजे विश्वमावृत्त तिष्ठते।
नमो नमस्ते सत्याय भूतानां प्रभवे नमः ।।६।।
पंचवक्त्राय शर्वाय शंकराय शिवाय च।
नमोऽस्तु वाचस्पतये प्रजानांपतये नमः ।।७।।
विश्वस्यपतये नित्यं महतांपतये नमः।
नमः सहस्रशीर्षाय सहस्रभुजमन्यवे ।।८।।
सहस्रनेत्रपादाय नमः सांख्याय कर्मणे ।।९।।
नमो हिरण्यवर्णाय हिरण्यकवचाय च।
भक्तानुकंपिने नित्यं सिद्ध्यतां नो वर प्रभो ।।१०।।
एवं स्तुस्त्वा महादेवं वासुदेवसहार्जुनः।
प्रसादयामासभवं तदा शस्त्रोपलब्धये ।।११।।

।। ॐ नमः पार्वतीपतये हर हर हर महादेव ॐ।।

परिशिष्ट–प्रथमः (१)

अथ पार्थिव पूजनविधिः

जिस समय ब्रह्मा और विष्णु का विवाद हुआ था उस समय उनका गर्व दूर करने के लिए भगवान शंकर लिंगरूप में प्रकट हुए थे तथा उनका गर्व दूर किया था। उस समय उन्होंने उन दोनों एवं सम्पूर्ण विश्व को अपने अनन्तस्वरूप के दर्शन कराये थे। वहीं से लिङ्गार्चन आरंभ हुआ। लिङ्गों के अनेक प्रकार हैं। शिवपुराण एवं स्कन्दपुराणों में विविध प्रकार के शिवलिंगों का वर्णन तथा पूजन का फल भी लिखा है। यथा – रत्नलिङ्ग, धातुलिङ्ग, स्वयंभूलिङ्ग, बाणलिङ्ग, ज्योतिर्लिङ्ग, रसलिङ्ग, नमर्देश्वरलिङ्ग, पार्थिवेश्वरलिङ्ग आदि अनेक प्रकार के लिङ्गों का वर्णन मिलता है। यहाँ यही सोचकर शान्ति हो जाती है कि-

शिवतत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमोस्तु ते।।

अतएवं यहाँ हम पार्थिवेश्वर लिंग की सामान्य पूजन विधि का वर्णन करते हैं। यों तो पार्थिव नाम पृथ्वी से उत्पन्न होने का है। अतः सभी पाषाणलिंग पार्थिवेश्वर होते हैं, किन्तु प्रायः मिट्टी एवं बालू आदि से निर्मित लिंग को ही पार्थिवेश्वरलिङ्ग कहते हैं।

पार्थिवेश्वरलिङ्ग पूजन क्रम

आरम्भ में पहले लिखी विधि के अनुसार आचमन, प्राणायाम, भूशुद्धि, जलशुद्धि, स्वस्तिवाचन, संकल्प आदिक सारे कृत्य करें।

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।।
शिवःपशुपतिश्चैव महादेव विसर्जनम्।।

"ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः" मंत्र से पृथ्वी की प्रार्थना करें।

"ॐ हराय नमः" कहकर मृत्तिका ग्रहण करें।

"ॐ बं" कहकर मिट्टी गूँथें।

"ॐ शूलपाणये नमः" से प्रतिमा की स्थापना करें।

इसके बाद हाथ में जल लेकर विनियोग छोड़ें –

ॐ अस्य श्री शिवपंचाक्षरमन्त्रस्य वामदेवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीसदाशिवो देवता ॐ बीजं। नमः शक्तिः। शिवाय कीलकं। ममसाम्बसदाशिवप्रीतये पूजने – जपे च विनियोगः।।

ॐ वामदेवाय ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। ॐ सदाशिवदेवतायै नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः गुह्ये। ॐ शक्तये नमः पादयोः। ॐ शिवायकीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ शिं सद्योजाताय नमः गुह्ये। ॐ वां वामदेवाय नमो मूर्ध्नि। ॐ यं ईशानाय नमो मुखे। ॐ अं अंगुष्ठाभ्याम् नमः। ॐ नं तर्जनीभ्याम् स्वाहा। ॐ मं मध्यमाभ्याम् वषट्। ॐ शिं अनामिकाभ्याम् हुं। ॐ वां

कनिष्ठिकाभ्याम् वौषट्। ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्याम् फट्। ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिरसे स्वाहा। ॐ मं शिखायै वषट्। ॐ शिं कचवाय हुँ। ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्।

इस प्रकार अंगन्यास करने के बाद प्राण प्रतिष्ठा करें। विनियोग–

ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य बह्मविष्णुमहेश्वराः ऋषयः ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि क्रियामय वपुः – प्राणाख्या देवता आँ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, देवप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजुःसामच्छन्दसेभ्यो नमो मुखे। प्राणाख्या देवतायै नमः हृदि। आँ बीजाय नमो गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः पादयोः। क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य प्राणाः इह प्राणाः।। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थितः।। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षु-श्रोत्र-घ्राण-जिह्वा-पाणि-पाद-पायूपस्थानि इहागत्य सुखं-चिरं-तिष्ठन्तु स्वाहा।।

इसके बाद हाथ में ही पार्थिवलिङ्ग लिए हुए शिवजी का आवाहन करें –

ॐ भूः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।
ॐ भुवः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।
ॐ स्वः पुरुषं साम्बसदाशिवमावाहयामि।

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत् पूजावसानकम्।।
तावत्वं प्रीतिभावेन लिङ्गेस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

इसके बाद पहले लिखी विधि से पूजन-पाठ-अभिषेक-आरती-पुष्पाञ्जलि करें फिर चावल छोड़ कर विसर्जन करें -

इसके बाद अभिषेक का जल लेकर आचमन एवं मार्जन करें।

ॐ देवस्यत्वासवितु ऽप्प्रसवेऽश्विनों ब्बाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्याम्। सरस्वत्यै व्वाचोयन्तुर्य्यन्त्रियें दधामि बृहस्प्पतेष्ट्वा-साम्म्राज्ज्येनाभिषिंचाम्यसो।। ९/१०

ॐ आपोहिष्ठा............. आदि मंत्रों से भी अभिषेक करें।

।। इति पार्थिवेश्वरार्चनविधिः।। ।। शुभम्।।

।।ॐ सदाशिवार्पणमस्तु ॐ।।

परिशिष्ट द्वितीय (२)

ॐ नमः शिवाय

महामृत्युञ्जय-जपविधिः

श्रीमहामृत्युञ्जयजप बड़ा कठिन एवं तत्काल चमत्कारिक फलदाता है। इसी मंत्र की सिद्धि प्राप्त करके शुक्राचार्य में वह शक्ति आ गयी थी कि वे मृतक को पुनः जीवित कर देते थे। फिर मरणासन्न और आपदग्रस्त की तो बात ही क्या है। इनका नाम ही मृत्युञ्जय है। इनकी श्रद्धाविधि के साथ उपासना करने से दैहिक-दैविक-अधिभौतिक आदि सारे संकट टल जाते हैं। महामृत्यञ्जय की उपासना भगवान शंकर की उपासना का ही एक भेद है। सामान्यतया प्रायः यह उपासना रोगादि शान्ति के लिए करते हैं, किन्तु इससे सभी प्रकार के संकटों की निवृत्ति होती है। जैसे राजभय - शत्रुभय - अभिचारभय - अपमृत्युभय - अग्निभय - सर्पभय - कारागारभयादि समस्त ज्ञाताज्ञात भय दूर होते हैं। यदि विधानपूर्वक इनकी आराधना की जाये तो सभी प्रकार से जीवमात्र की रक्षा होती है।

जप करने वाला व्यक्ति मन-वाणी-बुद्धि का संयम करता

हुआ आचमन-प्राणायाम करके श्रीगणेशादि देवताओं का स्मरण करे तथा शान्तिपाठ या स्वस्तिवाचन करे। यथा सुविधानुसार शिव पूजन करे तथा ध्यान में श्री महामृत्युञ्जय का विशेष ध्यान करें।

संकल्प - ॐ विष्णुः ३ देशकालौसंकीर्त्य .... गोत्रः ....शर्माऽहं (........गोत्रेण........नियुक्तोऽहं........) मम (यजमानस्य) जन्मपत्रानुसारेण ....महादशा-मध्ये .... अन्तरजन्यपीड़ापरिहारार्थं तथा च नवग्रहाणांपीडामपि शान्त्यर्थं मम सकल दैहिक-दैविक-आधिभौतिक समस्त ज्ञाताज्ञात सांसर्गिक पापदोष शमनार्थं, राजभय, चौरभय, शत्रुभय, रोगभय, डाकिनी-शाकिनी, पिशाच, वैतालादिभय निवारणार्थ उत्तमायुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं तथा च भगवान्महामृत्युञ्जयदेवता प्रीत्यर्थं न्यास-ध्यान-पूजनपूर्वकं महामृत्युंजयजपानि करिष्ये (यदि यजमान् के लिए कर रहा हो तो 'करिष्यामि' कहे)।

(आदि में ऋष्यादि न्यास करे।)

ॐ वामदेवकहोलवशिष्ठा-ऋषयः मूर्ध्नि। ॐ पंक्तिगायत्री-अनुष्टुप्छन्दांसि मुखे। ॐ सदाशिवमहामृत्युञ्जयदेवतायै नमो हृदि। ॐ ह्रीं शक्तये नमो लिङ्गे। ॐ श्रीं बीजाय नमः पादयोः।

इसके बाद विनियोग छोड़ें -

ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जयमंत्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठाः ऋषयः पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमृत्युञ्जयदेवता ह्रीं शक्तिं श्रीं बीजम् श्रीमहामृत्युञ्जयप्रीतये पूर्वसिद्धाये जपे विनियोगः।।

मन्त्रः - ॐ ह्रौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।।
उर्व्वारुकमिवबन्धान्मृत्यो र्मुक्षीयमाऽमृतात्।
ॐ स्वः भुवः भू ॐ सः जूं ह्रौं ॐ।।

अथ मंत्रन्यास :- ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्रायामृतमूर्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः पुष्टिवर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिवबन्धनात् ॐ नमो भगवते त्रिपुरान्तकाय ॐ ह्रां ह्रीं कवचाय हुम्।। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवतेरुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममंत्राय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयायज्चलज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्।।

अथ मंत्र न्यास :- ॐ त्र्यम्बकं शिरसि। ॐ यजामहे भ्रुवोः। ॐ सुगन्धिं नेत्रयोः। ॐ पुष्टिवर्द्धनं मुखे। ॐ उर्वारुक गण्डयोः। ॐ इव हृदये। ॐ बन्धनात् जठरे। ॐ मृत्योर्लिङ्गे। ॐ मुक्षीयं ऊर्वो। ॐ मा जान्वोः। ॐ अमृतात्पादयोः।।

इस प्रकार मूल मंत्र से न्यास करने के पश्चात् ध्यान करें–

ॐ हस्ताम्भोज युगस्थ कुम्भयुगलादुद्धृत्य तोयं शिरः।
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ।।
अक्षस्रग्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्धस्थ चन्द्रात्स्रवत्।
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।।
ॐ चन्द्रोद्भासित मूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रंवहत्।
हस्ताब्जे न दधत्सुदिव्यममलैर्हास्यास्यपङ्केरुहम्।।
सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्राङ्कुशाम्।
भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरे।।२।।

इस प्रकार भगवान् महामृत्युञ्जय का ध्यान करके यथोपचार पूजन अथवा नीचे लिखे मंत्रों से मानसिक पूजन करें –

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गंधं समर्पयामि।
ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।
ॐ यं वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि।
ॐ रं तैजसात्मकं दीपं समर्पयामि।
ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।
ॐ सं सर्वात्मकं पुष्पाञ्जलि समर्पयामि।

पूजन के उपरान्त अच्छिन्न जलधारा की व्यवस्था भी करें तो अत्युत्तम है। यह धारा जप–पर्यन्त चलती रहे।

इसके उपरान्त आरती एवं पुष्पाञ्जलि करके उत्तर पूजन करें। इसके उपरान्त पहले मंत्र का जप करें। जप के उपरांत आरती पुष्पाञ्जलि आदि करें। इसके बाद उत्तर–पूजन तथा जपार्पण करें। इसके लिए हाथ में पुष्पाक्षतजल लेकर देवता के दक्षिण कर की ओर मंत्र बोलता हुआ छोड़ दें –

मृत्युञ्जयमहारुद्रो त्राहिमां शरणागतम्।।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।।
गुह्याति गुह्य गोप्ता त्वं ग्रहाणास्मत्कृतं जपम्।।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः।।

अनेन श्रीमहामृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयदेवता प्रीयतां न मम।

इसकी सम्पूर्ण सिद्धि के लिए अपामार्ग की समिधा को दूध घृत और मधु से डुबो कर जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण करें, तर्पण का दशांश मार्जन करें तथा मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करायें। इस प्रकार विधिवत् अनुष्ठान करने से बड़ी से बड़ी व्याधियों का भी निवारण हो जाता है।

।। ॐ नमः शिवाय ।। शुभम् ।।

परिशिष्ट तृतीयः (३)

पंचवक्त्र पूजन

पश्चिमवक्त्र पूजन ।।१।।

इस पूजन में विशेष रूप से मैनसिल का तिलक, श्वेत पुष्पाक्षत गुग्गुल की धूप, घृत का दीपक तथा खीर का नैवेद्य करें। प्रथम जल लेकर विनियोग छोड़ें –

ॐ सद्योजातमित्यस्य सद्योजात ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सद्योजातो देवता श्वेतवर्णं हंसवाहनं पश्चिमवक्त्रं पृथिवी तत्वम् पश्चिमवक्त्र पूजने विनियोगः।।

ॐ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवै नमोनमः।। भवेभवेनातिभवेभवस्वमां भवोद्भवायनमः।।

पूजन करें उसके बाद हाथ में अक्षत लेकर कलाओं का आवाहन करें –

ॐ ऋद्ध्ये नमः। ॐ सिद्ध्ये नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ प्रभायै नमः।

ध्यानम् – प्रालेयामल विन्दु कुन्दधवलं गोक्षीर फेनप्रभम्।।
भस्माभ्यङ्गमनंग देह दहन ज्वालावली लोचनम्।।
ब्रह्मेन्द्राग्निमरुद्गणैः स्तुतिपरैरभ्यर्चितं योगिभिः।।
वन्देऽहं सकलं कलंकरहितं स्थाणेर्मुखं पश्चिमम्।।१।।
शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिवप्रदम्।।
शुद्ध स्फटिक संकाशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम्।।२।।

उत्तरवक्त्र पूजन ।।२।।

इनके पूजन में विशेष रूप से हरिचन्दन का तिलक, तुलसीपत्र, कमल का पुष्प, पंचसौगन्धिक धूप तथा घृतपक्व गोधूम का नैवेद्य चढ़ावें तथा आदि में जल लेकर विनियोग छोड़ें –

ॐ वामदेवायेत्यस्य वामदेवऋषिः जगतीछन्दः विष्णुर्देवता कृष्ण वर्णगरुड़वाहनं उत्तरवक्त्रं आपस्तत्वं उत्तरवक्त्र पूजने विनियोगः।

ॐ वामदेवायनमोज्येष्ठायनमःश्रेष्ठाय नमोरुद्रायनमःकालायनमःकलविकरणाय नमोबलविकरणायनमो ।। बलायनमोबल प्रमथनायनमःसर्वभूतदमनायनमोमनोन्म नायनमः ।।

कला पूजन – ॐ रजसे नमः। ॐ रक्षायै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ पाल्यायै नमः। ॐ कामायै नमः। ॐ संजीविन्यै नमः। ॐ सियायै नमः। ॐ बुध्यै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ धात्र्यै नमः। ॐ भ्रामर्यै नमः। ॐ ज्वरायै नमः।

ध्यानम् – गौरं कुंकुमपिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डुगंडस्थलम् ।।
भ्रू विपेक्ष कटाक्ष वीक्षण लसत्संसक्त कर्णोत्पलम् ।।
स्निग्धं बिम्बकलाधरं प्रहसितं नीलालकालंकृतम् ।।
वन्दे पूर्ण शशांक मण्डलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम् ।।१।।
वामदेवं सुवर्णाभं दिव्यास्त्रगणसेवितम् ।।
अजन्मानमुमाकान्तं वन्देऽहं ह्युत्तरं मुखम् ।।२।।

दक्षिणवक्त्र पूजन ।।३।।

इनके पूजन में विशेष रूप से कृष्णागरु का तिलक, नीलकमल एवं करबीर (कनेर) के पुष्प, सफेद अगर की धूप तथा उड़द की दाल का बना नैवेद्य का भोग लगावें। हाथ में लेकर विनियोग करें –

ॐ अघोरेभ्येत्यस्य अघोरऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता नीलवर्णं कूर्मवाहनं दक्षिणवक्त्रं तेजस्तत्त्वं दक्षिणवक्त्रपूजने विनियोगः।

ॐ अघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोर तरेभ्यः।। सर्वेभ्य ं सर्व्वंशर्वेभ्योनमस्ते अस्तुरुद्ररूपेभ्य ं ।।

कला पूजन – ॐ तमसे नमः। ॐ मोहायै नमः। ॐ क्षयायै नमः। ॐ निद्रायै नमः। ॐ व्याधये नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ सुधायै नमः। ॐ तृषायै नमः।

ध्यानम् – ॐ कालाभ्रभ्रमरांजनाचलनिभं व्यादीप्तपिङ्गेक्षणम्।।
खण्डेन्दुद्युतिमाश्रिग्रदशनं प्रोभिन्नदंष्ट्रांकुरम्।।
सर्प प्रोत कपालशक्ति सुलभं व्याकीर्ण तच्छेश्वरम्।।
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य जटिलं भ्रूभङ्ग रौद्रं मुखं।।१।।
नीलाभ्रवर्णमोंकारमघोरं घोरदंष्ट्रकम्।।
दंष्ट्राकरालमत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिणं मुखम्।।२।।

पूर्ववक्त्र पूजन ।।४।।

इनके पूजन में हरताल का तिलक, दूर्वाङ्कुर, अकोड़ा के पुष्प तथा अन्य नाना पुष्प कृष्णागरु की धूप तथा मोदक का नैवेद्य अर्पण करें। हाथ में जल लेकर विनियोग छोड़ें –

ॐ तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुषऋषिः गायत्रीछन्दः रुद्रोदेवता पीतवर्णं अश्ववाहनं पूर्ववक्त्रं वायुस्तत्त्वं पूर्ववक्त्र पूजने विनियोगः।

ॐ तत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि ।। तन्नोरुद्रः प्रचोयदयात् ।

कला पूजन – ॐ निवृत्यै नमः। ॐ प्रतिष्ठायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ शान्त्यै नमः।

ध्यानम् – ॐ संवर्ताग्नितडित्प्रदीप्तकनक प्रस्पर्धितः तेजोऽरुणम्।।
गम्भीर स्मितनिः सृतोग्रदशनं प्रोद्भासिताम्राधरम्।।
बालेन्दुद्युति लोलपिङ्गल जटाभारं प्रबद्धोरगम्।।
वन्दे सिद्ध सुरासुरेन्द्र नमितं पूर्वमुखं शूलिनः।।१।।
बालार्कमारक्तं पुरुषं च तडित्प्रभम्।।
दिव्यं पिङ्गजटाधारं वन्देऽहं पूर्वदिङ्मुखम्।।२।।

ऊर्ध्ववक्त्र पूजन ।।५।।

इनके पूजन में विशेष रूप से भस्म का तिलक, बिल्वपत्र, धतूरे का पुष्प तथा अन्य पुष्प भी, हरिचन्दन की धूप तथा दही भात शक्कर का नैवेद्य भोग लगावें। हाथ में जल लेकर विनियोग छोड़ें।

ॐ ईशानेत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता गोक्षीर वर्णं वृषभवाहनम् ऊर्ध्ववक्त्रं आकाशतत्त्वम् ऊर्ध्ववक्त्र पूजने विनियोगः।

ॐ ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरꣳसर्वभूतानाम्।। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्माशिवोमेअस्तुसदाशिवोम्।।

कला पूजन - ॐ शशिन्यै नमः। ॐ अङ्गदायै नमः। ॐ इष्टायै नमः। ॐ मरिच्यै नमः। ॐ ज्वालिन्यै नमः।

ॐ व्यक्ताव्यक्त गुणोतरं सुवदनंषड्विंशतत्वाधिकम्
वेदाद्यक्षर मंत्रशास्त्रनिलयं ध्येयं सदा योगिभिः
वन्देतामस वर्जितेन मनसा सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम्
शान्तं पंचमीश्वरस्य वदनं खव्याप्त तेजोमयम्।।१।।
ईशानं सूक्ष्मव्यक्तं तेजपुंज परायणम्
अमृतस्त्राविचिद्रूपं वन्देऽहं पंचमंमुखम्।।२।।

इस प्रकार भगवान शंकर के पाँचों-मुखों का पूजन करें तथा नीचे लिखे तीनों मंत्रों का पाठ करें। यह इनकी वैदिक स्तुति है।

ॐ नमोस्तु।। रुद्रेब्भ्योयेदिवियेषांव्वर्षमिषव९ं। तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वा९। तेब्भ्यो नमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्च्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्ध्म९ं ।।१।। १६/६४

ॐ नमोस्तु।। रुद्रेब्भ्योयेन्तरिक्षेयेषांव्वातऽइषव९ं। तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वा९। तेब्भ्यो नमोऽअस्तुतेनोव्वन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्च्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्ध्म९ं ।।२।। १६/६५

ॐ नमोस्तुरुद्रेब्भ्योयेपृथिव्व्याय्येषा मन्नमिषवः ।। तेब्भ्योदशप्राचीर्द्दशदक्षिणा दशप्रतीचीर्द्दशोदीचीर्दशोर्द्धाः । तेब्भ्यो नमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्धिष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ।।३।।

१६/६६

परिशिष्ट चतुर्थ ।।४।।

।। ॐ नमः शिवाय।।

श्री शिवरात्रि एवं श्री प्रदोष – उद्यापनविधिः

भगवान शंकर की उपासना करने वाले भक्तजन नाना प्रकार के विधि-विधानों से उनकी आराधना करते हैं तथा भोग और मोक्ष दोनों फल प्राप्त करते हैं। इन्हीं अनेक विधानों में शिवरात्रि, प्रदोष, श्रावण के सोमवार आदि पर्वों का व्रत-पूजन-उद्यापन आदि भी करते हैं। इन सबकी उद्यापन विधि प्रायः एक सी ही है। थोड़ा बहुत अन्तर हो जाता है। यहाँ सक्षिप्त रूप से जनसाधारण के कर सकने योग्य विधि का उल्लेख कर रहे हैं। हमें आशा है कि इसके द्वारा भक्तजन लाभान्वित होंगे।

उद्यापन करने वाले व्यक्ति को चाहिए कि पहले दिन मनवाणी और इन्द्रियों का संयम करें तथा सात्विकवृत्ति धारण करता हुआ महादेव-पार्वती का गुणानुवादों का चिन्तन करे। सात्विक एवं स्वल्पाहार करे तथा उद्यापन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री का संकलन करे। प्रातःकाल ब्रह्मबेला में उठे तथा शौच-स्नान-संध्यादि कार्यों को सम्पन्न करे। फूल-बिल्वपत्र-दूर्वा-आक के फूल-बिल्व फल-धतूर फल आदि विशेष रूप

से सुधार कर रक्खे। योग्य आचार्य की अध्यक्षता में लिंगतोभद्रवेदी का निर्माण करावे। एक पट्टे (पीढ़े) पर गौरी गणेश, षोडशमातृका-नवगृह-घृतमातृका की स्थापना हेतु स्थान एवं आकार की रचना कराये। दो कलश तांबे के तथा ५ कलश मृतिका के स्थापित करे। कदलीस्तंभ, बन्दनवार, ध्वजा आदि से मण्डप रचना करे तथा पूर्वोक्त वेदी आदिको तथा कलशों को मण्डप में स्थापित करे। मण्डप के ऊपर वितान (चन्दोवा) ताने।

इस प्रकार सम्पूर्ण व्यवस्था करने के उपरान्त यजमान आचार्य तथा अन्य ब्राह्मणों के लिए उत्तम आसन की व्यवस्था करें। यजमान पूर्व की ओर मुख करके सपत्नीक बैठ जाये तथा आचमन प्राणायाम करे। ॐ अपवित्रः इत्यादि मंत्र से मार्जन करे। चाँदी-सोने-कुशा-दूर्वा आदि की पावित्री धारण करे। इसके बाद शान्तिपाठ अथवा स्वस्तिवाचन के मंगलमंत्रों का पाठ करे। इसके बाद "ॐ तत्वायामि.........." इत्यादि मंत्र से कर्मपात्र की स्थापना तथा सम्पूर्ण सामग्री का प्रोक्षण करे। फिर देशकालादि का उच्चारणपूर्वक प्रतिज्ञा संकल्प करे। पृथ्वी-दीपक-सूर्य या चन्द्रमा को अर्घ देकर गणेश-गौरी-कलशस्थापना, पुण्याहवाचन-षोडश मातृका, घृतमातृका, ग्रहपूजन आदि करे। इसके उपरान्त आचार्य-ब्रह्मा-ऋत्विक-गाणपत्य आदि का वरण करे। फिर लिङ्गतोभद्र वेदी पर वेदमंत्रों से अथवा पौराणिक मंत्रों से अथवा नाममंत्रों से देवताओं की स्थापना करे। उनका आवाहन-प्रतिष्ठा-पूजन करके वेदी पर तांबे के कलश (ताम्र कलश) की स्थापना करे। शिव-पार्वती की चांदी-सोने की प्रतिमाओं को अग्न्युतारणपूर्वक पूजन के विध ाान से प्राण प्रतिष्ठा करे। ध्यान से पुष्पांजलि तक विधिवत् अर्चन करें। उसमें विशेषरूप से माता पार्वती के पूजन में कज्जल, सिन्दूर आदि अनेक सौभाग्यद्रव्य, कौशेय वस्त्र, आभूषण एवं सौभाग्य

मंजूषा अर्पण करे। सदाशिव के पूजन में पहनने के पाँचों वस्त्र, सोने-चाँदी के बिल्वपत्र, चांदी के नन्दीश्वर, त्रिशूल, डमरू, अर्धचन्द्र, मृगछाला, कुंडी-सोंटा, विजया (ठंडाई का सामान) यज्ञोपवीत, खड़ाऊँ आदि चढ़ावे। विशेष पूजन करने के लिए "शिवसहस्रनामावली" से पुष्प-कमल-बिल्वपत्र या अन्य कोई वस्तु हजार की संख्या में अर्पण करें। इसके बाद रुद्री पाठ, कथा श्रवण या संकीर्तनपूर्वक रात्रिजागरण करें। प्रातःकाल या रात्रि में ही हवन करे। शाकल्य में चावल की खीर भी मिला लें।

हवन के बाद उत्तर पूजन, स्विष्टकृद्होम, नवाहुति, क्षेत्रपाल एवं दिग्पालों की बलि दे। पूर्णाहूति, पूर्णपात्रदान, गोदान, वृषभदान, शैय्यादान, आचार्यदिकों को दणिक्षादान तथा ब्राह्मण भोजन का संकल्प करे। प्रदोष व्रत में २६ युग्म ब्राह्मणों को, शिवरात्रि में १४ युग्म तथा सोमवार में ७ को अथवा यथेच्छ ब्राह्मणों को भोजन करावें। वेदी का सारा सामान आचार्य को अर्पण कर दे। इसके बाद माँ अन्नपूर्णा का ध्यान करते हुए उमामहेश्वर का प्रसाद ग्रहण करे।

परिशिष्ट - ५

शिवसहस्रनामावलिः

संकल्पः

यजमानः आचम्य, प्राणानायम्य, हस्ते-जलाऽक्षत-पुष्प-द्रव्याण्यादायाद्येत्याद्युच्चार्य, शुभपुण्यतिथौ अमुकनाम्नो मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सकलपापक्षयनिवृत्तिपूर्वक-दीर्घायुः-पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न सन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्म्यै-हिकाऽऽमुष्मिक-सकलकामनासिद्धिद्वारा धर्माऽर्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ-फलावाप्तये श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं शिव सहस्रनामभिः सदाशिवोपरि सहस्रबिल्वपत्रसमर्पणं करिष्ये।

विनियोगः

ॐ अस्य श्री सदाशिवसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः, श्रीसदाशिवो देवता, अनुष्टुप्छन्दः, सदाशिवो बीजम्, गौरीशक्तिः, श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं तद्दिव्यसहस्रनामभिः अमुकद्रव्य (बिल्वपत्रमन्दारपुष्प-धत्तूर-नीलकमलादि) समर्पणे विनियोगः।

करन्यासः

ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ मः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः

ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिरसे स्वाहा।
ॐ मः शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचाय हुम्।
ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

(१)

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्ग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

(२)

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

(३)

कर-चरणाकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे! श्रीमहादेव! श्री शम्भो!॥

शिवसहस्रनामावली

१ ॐ स्थिराय नमः
२ ॐ स्थाणवे नमः
३ ॐ प्रभवे नमः
४ ॐ भीमाय नमः
५ ॐ प्रवराय नमः
६ ॐ वरदाय नमः
७ ॐ वराय नमः
८ ॐ सर्वात्मने नमः
९ ॐ सर्वविख्याताय नमः
१० ॐ सर्वस्मै नमः
११ ॐ सर्वकराय नम :
१२ ॐ भवाय नमः
१३ ॐ जटिने नमः
१४ ॐ चर्मिणे नमः
१५ ॐ शिखण्डिने नमः
१६ ॐ सर्वाङ्गाय नमः
१७ ॐ सर्वभावनाय नमः
१८ ॐ हराय नमः
१९ ॐ हरिणाक्षाय नमः
२० ॐ सर्वभूतहराय नमः
२१ ॐ प्रभवे नमः
२२ ॐ प्रवृत्तये नमः
२३ ॐ निवृत्तये नमः
२४ ॐ नियताय नमः
२५ ॐ शाश्वताय नमः
२६ ॐ ध्रुवाय नमः
२७ ॐ श्मशानवासिने नमः
२८ ॐ भगवते नमः
२९ ॐ खेचराय नमः
३० ॐ गोचराय नमः
३१ ॐ अर्दनाय नमः
३२ ॐ अभिवाद्याय नमः
३३ ॐ महाकर्मणे नमः
३४ ॐ तपस्विने नमः
३५ ॐ भूतभावनाय नमः
३६ ॐ उन्मत्तवेषप्रच्छन्नाय नमः
३७ ॐ सर्वलोकप्रजापतये नमः
३८ ॐ महारूपाय नमः
३९ ॐ महाकायाय नमः
४० ॐ वृषरूपाय नमः
४१ ॐ महायशसे नमः
४२ ॐ महात्मने नमः
४३ ॐ सर्वभूतात्मने नमः
४४ ॐ विश्वरूपाय नमः
४५ ॐ महाहनवे नमः
४६ ॐ लोकपालाय नमः

४७	ॐ अन्तर्हितात्मने नमः	७२	ॐ मृगबाणार्पणाय नमः
४८	ॐ प्रसादाय नमः	७३	ॐ अनघाय नमः
४६	ॐ हयगर्दभये नमः	७४	ॐ महातपसे नमः
५०	ॐ पवित्राय नमः	७५	ॐ घोरतपसे नमः
५१	ॐ महते नमः	७६	ॐ अदीनाय नमः
५२	ॐ नियमाय नमः	७७	ॐ दीनसाधकाय नमः
५३	ॐ नियमाश्रिताय नमः	७८	ॐ संवत्सराय नमः
५४	ॐ सर्वकर्मणे नमः	७६	ॐ मन्त्राय नमः
५५	ॐ स्वयम्भूताय नमः	८०	ॐ प्रमाणाय नमः
५६	ॐ आदये नमः	८१	ॐ परमत्तपाय नमः
५७	ॐ आदिकराय नमः	८२	ॐ योगिने नमः
५८	ॐ निधये नमः	८३	ॐ योज्याय नमः
५६	ॐ सहस्राक्षाय नमः	८४	ॐ महाबीजाय नमः
६०	ॐ विशालाक्षाय नमः	८५	ॐ महारेतसे नमः
६१	ॐ सोमाय नमः	८६	ॐ महाबलाय नमः
६२	ॐ नक्षत्रसाधकाय नमः	८७	ॐ सुवर्णरितसे नमः
६३	ॐ चन्द्राय नमः	८८	ॐ सर्वज्ञाय नमः
६४	ॐ सूर्याय नमः	८६	ॐ सुबीजाय नमः
६५	ॐ शनये नमः	६०	ॐ बीजवाहनाय नमः
६६	ॐ केतवे नमः	६१	ॐ दशबाहवे नमः
६७	ॐ ग्रहाय नमः	६२	ॐ अनिमिषाय नमः
६८	ॐ ग्रहपतये नमः	६३	ॐ नीलकण्ठाय नमः
६६	ॐ वराय नमः	६४	ॐ उमापतये नमः
७०	ॐ अत्रये नमः	६५	ॐ विश्वरूपाय नमः
७१	ॐ अत्र्यानमस्कर्त्रे नमः	६६	ॐ स्वयंश्रेष्ठाय नमः

९७	ॐ बलवीराय नमः	१२२	ॐ तेजस्करनिधये नमः
९८	ॐ अबलाय नमः	१२३	ॐ उष्णीषिणे नमः
९९	ॐ गणाय नमः	१२४	ॐ सुवक्त्राय नमः
१००	ॐ गणकर्त्रे नमः	१२५	ॐ उदग्राय नमः
१०१	ॐ गणपतये नमः	१२६	ॐ विनताय नमः
१०२	ॐ दिग्वाससे नमः	१२७	ॐ दीर्घाय नमः
१०३	ॐ कामाय नमः	१२८	ॐ हरिकेशाय नमः
१०४	ॐ मन्त्रविदे नमः	१२९	ॐ सुतीर्थाय नमः
१०५	ॐ परमाय नमः	१३०	ॐ कृष्णाय नमः
१०६	ॐ मन्त्राय नमः	१३१	ॐ शृगालरूपाय नमः
१०७	ॐ सर्वभावकराय नमः	१३२	ॐ सिद्धार्थाय नमः
१०८	ॐ हराय नमः	१३३	ॐ मुण्डाय नमः
१०९	ॐ कमण्डलुधराय नमः	१३४	ॐ सर्वशुभंकराय नमः
११०	ॐ धन्विने नमः	१३५	ॐ अजाय नमः
१११	ॐ बाणहस्ताय नमः	१३६	ॐ बहुरूपाय नमः
११२	ॐ कपालवते नमः	१३७	ॐ गन्धधारिणे नमः
११३	ॐ अशनिने नमः	१३८	ॐ कपर्दिने नमः
११४	ॐ शतघ्निने नमः	१३९	ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
११५	ॐ खड्गिने नमः	१४०	ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः
११६	ॐ पट्टिशिने नमः	१४१	ॐ ऊर्ध्वशायिने नमः
११७	ॐ आयुधिने नमः	१४२	ॐ नभस्थलाय नमः
११८	ॐ महते नमः	१४३	ॐ त्रिजटाय नमः
११९	ॐ स्रुवहस्ताय नमः	१४४	ॐ चीरवाससे नमः
१२०	ॐ सुरूपाय नमः	१४५	ॐ रुद्राय नमः
१२१	ॐ तेजसे नमः	१४६	ॐ सेनापतये नमः

१४७ ॐ विभवे नमः
१४८ ॐ अहश्चाराय नमः
१४६ ॐ नक्तञ्चराय नमः
१५० ॐ तिग्ममन्यवे नमः
१५१ ॐ सुवर्चसाय नमः
१५२ ॐ गजघ्ने नमः
१५३ ॐ दैत्यघ्ने नमः
१५४ ॐ कालाय नमः
१५५ ॐ लोकधात्रे नमः
१५६ ॐ गुणाकराय नमः
१५७ ॐ सिहंशार्दूलरूपाय नमः
१५८ ॐ आर्दचर्माम्बरावृताय नमः
१५६ ॐ कालयोगिने नमः
१६० ॐ महानादाय नमः
१६१ ॐ सर्वकामाय नमः
१६२ ॐ चतुष्पथाय नमः
१६३ ॐ निशाचराय नमः
१६४ ॐ प्रेतचारिणे नमः
१६५ ॐ भूतचारिणे नमः
१६६ ॐ महेश्वराय नमः
१६७ ॐ बहुभूताय नमः
१६८ ॐ बहुधराय नमः
१६६ ॐ स्वर्भानवे नमः
१७० ॐ अमिताय नमः
१७१ ॐ गतये नमः
१७२ ॐ नृत्यप्रियाय नमः
१७३ ॐ नित्यनर्ताय नमः
१७४ ॐ नर्तकाय नमः
१७५ ॐ सर्वलालसाय नमः
१७६ ॐ घोराय नमः
१७७ ॐ महातपसे नमः
१७८ ॐ पाषाय नमः
१७६ ॐ नित्याय नमः
१८० ॐ गिरिरुहाय नमः
१८१ ॐ नभसे नमः
१८२ ॐ सहस्रहस्ताय नमः
१८३ ॐ विजयाय नमः
१८४ ॐ व्यवसायाय नमः
१८५ ॐ अतीन्द्रियाय नमः
१८६ ॐ अघर्षणाय नमः
१८७ ॐ घर्षणात्मने नमः
१८८ ॐ यज्ञघ्ने नमः
१८६ ॐ कामनाशकाय नमः
१६० ॐ दक्षयागापहारिणे नमः
१६१ ॐ सुसहाय नमः
१६२ ॐ मध्यमाय नमः
१६३ ॐ तेजोपहारिणे नमः
१६४ ॐ बलघ्ने नमः
१६५ ॐ मुदिताय नमः
१६६ ॐ अर्थाय नमः

१९७	ॐ अजिताय नमः	२२२	ॐ प्रशान्तात्मने नमः
१९८	ॐ अवराय नमः	२२३	ॐ हुताशनाय नमः
१९९	ॐ गम्भीराय नमः	२२४	ॐ उग्रतेजसे नमः
२००	ॐ गभीराय नमः	२२५	ॐ महातेजसे नमः
२०१	ॐ गम्भीरबलवाहनाय नमः	२२६	ॐ जन्याय नमः
२०२	ॐ न्यग्रोधरूपाय नमः	२२७	ॐ विजयकालविदे नमः
२०३	ॐ न्यग्रोधाय नमः	२२८	ॐ ज्योतिषामयनाय नमः
२०४	ॐ वृक्षकर्णस्थितये नमः	२२९	ॐ सिद्धये नमः
२०५	ॐ विभवे नमः	२३०	ॐ सर्वविग्रहाय नमः
२०६	ॐ सुतीक्ष्णदशनाय नमः	२३१	ॐ शिखिने नमः
२०७	ॐ महाकायाय नमः	२३२	ॐ मुण्डिने नमः
२०८	ॐ महाननाय नमः	२३३	ॐ जटिने नमः
२०९	ॐ विष्वक्सेनाय नमः	२३४	ॐ ज्वालिने नमः
२१०	ॐ हरये नमः	२३५	ॐ मूर्तिजाय नमः
२११	ॐ यज्ञाय नमः	२३६	ॐ मूर्धगाय नमः
२१२	ॐ संयुगापीडवाहनाय नमः	२३७	ॐ बलिने नमः
२१३	ॐ तीक्ष्णतापाय नमः	२३८	ॐ वेणविने नमः
२१४	ॐ हर्यश्वाय नमः	२३९	ॐ पणविने नमः
२१५	ॐ सहाय नमः	२४०	ॐ तालिने नमः
२१६	ॐ कर्मकालविदे नमः	२४१	ॐ खलिने नमः
२१७	ॐ विष्णुप्रसादिताय नमः	२४२	ॐ कालकण्टकाय नमः
२१८	ॐ यज्ञाय नमः	२४३	ॐ नक्षत्रविग्रहमतये नमः
२१९	ॐ समुद्राय नमः	२४४	ॐ गुणबुद्धये नमः
२२०	ॐ वडवामुखाय नमः	२४५	ॐ लयाय नमः
२२१	ॐ हुताशनसहाय नमः	२४६	ॐ अगमाय नमः

२४७ ॐ प्रजापतये नमः
२४८ ॐ विश्वबाहवे नमः
२४९ ॐ विभागाय नमः
२५० ॐ सर्वगाय नमः
२५१ ॐ अमुखाय नमः
२५२ ॐ विमोचनाय नमः
२५३ ॐ सुसरणाय नमः
२५४ ॐ हिरण्यकवचोद्भवाय नमः
२५५ ॐ मेढ्रजाय नमः
२५६ ॐ बलचारिणे नमः
२५७ ॐ महीचारिणे नमः
२५८ ॐ स्रुताय नमः
२५९ ॐ सर्वतूर्यनिनादिने नमः
२६० ॐ सर्वतोद्यपरिग्रहाय नमः
२६१ ॐ व्यालरूपाय नमः
२६२ ॐ गुहावसिने नमः
२६३ ॐ गुहाय नमः
२६४ ॐ मालिने नमः
२६५ ॐ तरङ्गविदे नमः
२६६ ॐ त्रिदशाननाय नमः
२६७ ॐ त्रिकालधृगे नमः
२६८ ॐ कर्मसर्वबन्धविमोचनाय नमः
२६९ ॐ असुरेन्द्राणांबन्धनाय नमः
२७० ॐ युधिशत्रुविनाशनाय नमः
२७१ ॐ सांख्यप्रसादाय नमः
२७२ ॐ दुर्वाससे नमः
२७३ ॐ सर्वसाधुनिषेविताय नमः
२७४ ॐ प्रस्कन्दनाय नमः
२७५ ॐ विभागज्ञाय नमः
२७६ ॐ अतुल्याय नमः
२७७ ॐ यज्ञभागविदे नमः
२७८ ॐ सर्वचारिणे नमः
२७९ ॐ सर्ववासाय नमः
२८० ॐ दुर्वाससे नमः
२८१ ॐ वासवाय नमः
२८२ ॐ अमराय नमः
२८३ ॐ हैमाय नमः
२८४ ॐ हेमकराय नमः
२८५ ॐ अयज्ञसर्वधारिणे नमः
२८६ ॐ धरोत्तमाय नमः
२८७ ॐ लोहिताक्षाय नमः
२८८ ॐ महाक्षाय नमः
२८९ ॐ विजयाक्षाय नमः
२९० ॐ विशारदाय नमः
२९१ ॐ सर्वकामदाय नमः
२९२ ॐ सर्वकालप्रसादाय नमः
२९३ ॐ सुबलाय नमः
२९४ ॐ बलरूपधृगे नमः
२९५ ॐ संग्रहाय नमः

२९६	ॐ निग्रहाय नमः	३२१	ॐ उपदेशकराय नमः
२९७	ॐ कर्त्रे नमः	३२२	ॐ अकराय नमः
२९८	ॐ सर्पचीरनिवासाय नमः	३२३	ॐ मुनये नमः
२९९	ॐ मुख्याय नमः	३२४	ॐ आत्मनिरालोकाय नमः
३००	ॐ अमुख्याय नमः	३२५	ॐ संभग्नाय नमः
३०१	ॐ देहाय नमः	३२६	ॐ सहस्रदाय नमः
३०२	ॐ काहलये नमः	३२७	ॐ पक्षिणे नमः
३०३	ॐ सर्वकामवराय नमः	३२८	ॐ पक्षरूपाय नमः
३०४	ॐ सर्वदाय नमः	३२९	ॐ अतिदीप्ताय नमः
३०५	ॐ सर्वतोमुखाय नमः	३३०	ॐ विशाम्पतये नमः
३०६	ॐ आकाशनिर्विरूपाय नमः	३३१	ॐ उन्मादाय नमः
३०७	ॐ निपातिने नमः	३३२	ॐ मदनाय नमः
३०८	ॐ अवशाय नमः	३३३	ॐ कामाय नमः
३०९	ॐ खगाय नमः	३३४	ॐ अश्वत्थाय नमः
३१०	ॐ रौद्ररूपाय नमः	३३५	ॐ अर्थकाराय नमः
३११	ॐ अंशवे नमः	३३६	ॐ यशसे नमः
३१२	ॐ आदित्याय नमः	३३७	ॐ वामदेवाय नमः
३१३	ॐ बहुरश्मये नमः	३३८	ॐ वामाय नमः
३१४	ॐ सुवर्चसिने नमः	३३९	ॐ प्राचे नमः
३१५	ॐ वसुवेगाय नमः	३४०	ॐ दक्षिणाय नमः
३१६	ॐ महावेगाय नमः	३४१	ॐ वामनाय नमः
३१७	ॐ मनोवेगाय नमः	३४२	ॐ सिद्धयोगिने नमः
३१८	ॐ निशाचराय नमः	३४३	ॐ महर्षये नमः
३१९	ॐ सर्ववासिने नमः	३४४	ॐ सिद्धार्थाय नमः
३२०	ॐ श्रियावासिने नमः	३४५	ॐ सिद्धसाधकाय नमः

३४६	ॐ भिक्षवे नमः	३७१	ॐ कालाय नमः
३४७	ॐ भिक्षुरूपाय नमः	३७२	ॐ निशाचारिणे नमः
३४८	ॐ विपणाय नमः	३७३	ॐ पिनाकधृगे नमः
३४९	ॐ मृदवे नमः	३७४	ॐ निमित्तस्थाय नमः
३५०	ॐ अव्ययाय नमः	३७५	ॐ निमित्ताय नमः
३५१	ॐ महासेनाय नमः	३७६	ॐ नन्दये नमः
३५२	ॐ विशाखाय नमः	३७७	ॐ नन्दिकराय नमः
३५३.	ॐ षष्टिभागाय नमः	३७८	ॐ हरये नमः
३५४	ॐ गवाम्पतये नमः	३७९	ॐ नन्दीश्वराय नमः
३५५	ॐ वज्रहस्ताय नमः	३८०	ॐ नन्दिने नमः
३५६	ॐ विष्कम्भिने नमः	३८१	ॐ नन्दनाय नमः
३५७	ॐ चमूस्तम्भनाय नमः	३८२	ॐ नन्दिवर्धनाय नमः
३५८	ॐ वृत्तावृत्तकराय नमः	३८३	ॐ भगहारिणे नमः
३५९	ॐ तालाय नमः	३८४	ॐ निहन्त्रे नमः
३६०	ॐ मधवे नमः	३८५	ॐ कालाय नमः
३६१	ॐ मधुकलोचनाय नमः	३८६	ॐ ब्रह्मणे नमः
३६२	ॐ वाचस्पत्याय नमः	३८७	ॐ पितामहाय नमः.
३६३	ॐ वाचसनाय नमः	३८८	ॐ चतुर्मुखाय नमः
३६४	ॐ आश्रमपूजिताय नमः	३८९	ॐ महालिङ्गाय नमः
३६५	ॐ ब्रह्मचारिणे नमः	३९०	ॐ चारुलिङ्गाय नमः
३६६	ॐ लोकचारिणे नमः	३९१	ॐ लिङ्गाध्यक्षाय नमः
३६७	ॐ सर्वचारिणे नमः	३९२	ॐ सुराध्यक्षाय नमः
३६८	ॐ विचारविदे नमः	३९३	ॐ योगध्यक्षाय नमः
३६९	ॐ ईशानाय नमः	३९४	ॐ युगावहाय नमः
३७०	ॐ ईश्वराय नमः	३९५	ॐ बीजाध्यक्षाय नमः

३९६ ॐ बीजकर्त्रे नमः
३९७ ॐ अध्यात्मानुगताय नमः
३९८ ॐ बलाय नमः
३९९ ॐ इतिहासाय नमः
४०० ॐ सङ्कल्पाय नमः
४०१ ॐ गौतमाय नमः
४०२ ॐ निशाकराय नमः
४०३ ॐ दम्भाय नमः
४०४ ॐ अदम्भाय नमः
४०५ ॐ वैदम्भाय नमः
४०६ ॐ वश्याय नमः
४०७ ॐ वशकराय नमः
४०८ ॐ कलये नमः
४०९ ॐ लोककर्त्रे नमः
४१० ॐ पशुपतये नमः
४११ ॐ महाकर्त्रे नमः
४१२ ॐ अनौषधाय नमः
४१३ ॐ अक्षराय नमः
४१४ ॐ परब्रह्मणे नमः
४१५ ॐ बलवते नमः
४१६ ॐ शक्राय नमः
४१७ ॐ नीतये नमः
४१८ ॐ अनीतये नमः
४१९ ॐ शुद्धात्मने नमः
४२० ॐ मान्याय नमः
४२१ ॐ शुद्धाय नमः
४२२ ॐ गतागताय नमः
४२३ ॐ बहुप्रसादाय नमः
४२४ ॐ सुस्वप्नाय नमः
४२५ ॐ दर्पणाय नमः
४२६ ॐ अमित्रजिते नमः
४२७ ॐ वेदकराय नमः
४२८ ॐ मन्त्रकाराय नमः
४२९ ॐ विदुषे नमः
४३० ॐ समरमर्दनाय नमः
४३१ ॐ महामेघनिवासिने नमः
४३२ ॐ महाघोराय नमः
४३३ ॐ वशिने नमः
४३४ ॐ कराय नमः
४३५ ॐ अग्निज्वालाय नमः
४३६ ॐ महाज्वालाय नमः
४३७ ॐ अतिधूम्राय नमः
४३८ ॐ हुताय नमः
४३९ ॐ हविशे नमः
४४० ॐ वृषणाय नमः
४४१ ॐ शङ्कराय नमः
४४२ ॐ वर्चस्विने नमः
४४३ ॐ धूमकेतनाय नमः
४४४ ॐ नीलाय नमः
४४५ ॐ अङ्गलुब्धाय नमः

४४६ ॐ शोभनाय नमः
४४७ ॐ निरवग्रहाय नमः
४४८ ॐ स्वस्तिदाय नमः
४४९ ॐ स्वस्तिभावाय नमः
४५० ॐ भागिने नमः
४५१ ॐ भागकराय नमः
४५२ ॐ लघवे नमः
४५३ ॐ उत्सङ्गाय नमः
४५४ ॐ महाङ्गाय नमः
४५५ ॐ महागर्भपरायणाय नमः
४५६ ॐ कृष्णवर्णाय नमः
४५७ ॐ सुवर्णाय नमः
४५८ ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय नमः
४५९ ॐ महापादाय नमः
४६० ॐ महाहस्ताय नमः
४६१ ॐ महाकायाय नमः
४६२ ॐ महायशसे नमः
४६३ ॐ महामूर्ध्ने नमः
४६४ ॐ महामात्राय नमः
४६५ ॐ महानेत्राय नमः
४६६ ॐ निशालयाय नमः
४६७ ॐ महान्तकाय नमः
४६८ ॐ महाकर्णाय नमः
४६९ ॐ महोष्ठाय नमः
४७० ॐ महानवे नमः
४७१ ॐ महानासाय नमः
४७२ ॐ महाकम्बवे नमः
४७३ ॐ महाग्रीवाय नमः
४७४ ॐ श्मशानभाजे नमः
४७५ ॐ महावक्षसे नमः
४७६ ॐ महोरस्काय नमः
४७७ ॐ अन्तरात्मने नमः
४७८ ॐ मृगालयाय नमः
४७९ ॐ लम्बनाय नमः
४८० ॐ लम्बितोष्ठाय नमः
४८१ ॐ महामायाय नमः
४८२ ॐ पयोनिधये नमः
४८३ ॐ महादन्ताय नमः
४८४ ॐ महादंष्ट्राय नमः
४८५ ॐ महाजिह्वाय नमः
४८६ ॐ महामुखाय नमः
४८७ ॐ महानखाय नमः
४८८ ॐ महारोम्णे नमः
४८९ ॐ महाकेशाय नमः
४९० ॐ महाजटाय नमः
४९१ ॐ प्रसन्नाय नमः
४९२ ॐ प्रसादाय नमः
४९३ ॐ प्रत्ययाय नमः
४९४ ॐ गिरिसाधनाय नमः
४९५ ॐ स्नेहनाय नमः

४६६	ॐ अस्नेहनाय नमः	५२०	ॐ कनकाय नमः
४६७	ॐ अजिताय नमः	५२१	ॐ काञ्चनच्छवये नमः
४६८	ॐ महामुनये नमः	५२२	ॐ नाभये नमः
४६६	ॐ वृक्षाकराय नमः	५२३	ॐ नन्दिकराय नमः
५००	ॐ वृक्षकेतवे नमः	५२४	ॐ भावाय नमः
५०१	ॐ अनलाय नमः	५२५	ॐ पुष्करस्थपतये नमः
५०२	ॐ वायुवाहनाय नमः	५२६	ॐ स्थिराय नमः
५०३	ॐ गण्डनिले नमः	५२७	ॐ द्वादशाय नमः
५०४	ॐ मेरुधाम्ने नमः	५२८	ॐ त्रासनाय नमः
५०५	ॐ देवाधिपतये नमः	५२६	ॐ आद्याय नमः
५०६	ॐ अथर्वशीर्षाय नमः	५३०	ॐ यज्ञाय नमः
५०७	ॐ सामास्याय नमः	५३१	ॐ यज्ञसमाहिताय नमः
५०८	ॐ ऋक्सहस्रामितेक्षणाय नमः	५३२	ॐ नक्ताय नमः
		५३३	ॐ कलये नमः
५०६	ॐ यजुःपादभुजाय नमः	५३४	ॐ कालाय नमः
५१०	ॐ गुह्याय नमः	५३५	ॐ मकराय नमः
५११	ॐ प्रकाशाय नमः	५३६	ॐ कालपूजिताय नमः
५१२	ॐ जङ्गमाय नमः	५३७	ॐ सगणाय नमः
५१३	ॐ अमोघार्थाय नमः	५३८	ॐ गणकाराय नमः
५१४	ॐ प्रसादाय नमः	५३६	ॐ भूतवाहनसारथये नमः
५१५	ॐ अभिगम्याय नमः	५४०	ॐ भस्मशयाय नमः
५१६	ॐ सुदर्शनाय नमः	५४१	ॐ भस्मगोप्त्रे नमः
५१७	ॐ उपकाराय नमः	५४२	ॐ भस्मभूताय नमः
५१८	ॐ प्रियाय नमः	५४३	ॐ तरवे नमः
५१६	ॐ सर्वाय नमः	५४४	ॐ गणाय नमः

५४५	ॐ लोकपालाय नमः	५७०	ॐ तार्क्ष्याय नमः
५४६	ॐ आलोकाय नमः	५७१	ॐ सुविज्ञेयाय नमः
५४७	ॐ महात्मने नमः	५७२	ॐ सुशारदाय नमः
५४८	ॐ सर्वपूजिताय नमः	५७३	ॐ परश्वधायुधाय नमः
५४९	ॐ शुक्लाय नमः	५७४	ॐ देवाय नमः
५५०	ॐ त्रिशुक्लाय नमः	५७५	ॐ अनुकारिणे नमः
५५१	ॐ सम्पन्नाय नमः	५७६	ॐ सुबान्धवाय नमः
५५२	ॐ शुचये नमः	५७७	ॐ तुम्बवीणाय नमः
५५३	ॐ भूतनिषेविताय नमः	५७८	ॐ महाक्रोधाय नमः
५५४	ॐ आश्रमस्थाय नमः	५७९	ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
५५५	ॐ क्रियावस्थाय नमः	५८०	ॐ जलेशयाय नमः
५५६	ॐ विश्वकर्मपतये नमः	५८१	ॐ उग्राय नमः
५५७	ॐ वराय नमः	५८२	ॐ वंशकराय नमः
५५८	ॐ विशालशाखाय नमः	५८३	ॐ वंशाय नमः
५५९	ॐ ताम्रोष्ठाय नमः	५८४	ॐ वंशनादाय नमः
५६०	ॐ अम्बुजाय नमः	५८५	ॐ अनिन्दिताय नमः
५६१	ॐ सुनिश्चलाय नमः	५८६	ॐ सर्वाङ्गरूपाय नमः
५६२	ॐ कपिलाय नमः	५८७	ॐ मायाविने नमः
५६३	ॐ कपिशाय नमः	५८८	ॐ सुहृदाय नमः
५६४	ॐ शुक्लाय नमः	५८९	ॐ अनिलाय नमः
५६५	ॐ आयुषे नमः	५९०	ॐ अनलाय नमः
५६६	ॐ पराय नमः	५९१	ॐ बन्धनाय नमः
५६७	ॐ अपराय नमः	५९२	ॐ बन्धकर्त्रे नमः
५६८	ॐ गन्धर्वाय नमः	५९३	ॐ सुबन्धनविमोचनाय नमः
५६९	ॐ आदितये नमः	५९४	ॐ सयज्ञारये नमः

५९५	ॐ सकामारये नमः	६२०	ॐ धात्रे नमः
५९६	ॐ महादंष्ट्राय नमः	६२१	ॐ शक्राय नमः
५९७	ॐ महायुधाय नमः	६२२	ॐ विष्णवे नमः
५९८	ॐ बहुधानिन्दिताय नमः	६२३	ॐ भिन्नाय नमः
५९९	ॐ शर्वाय नमः	६२४	ॐ त्वष्ट्रे नमः
६००	ॐ शङ्कराय नमः	६२५	ॐ ध्रुवाय नमः
६०१	ॐ शङ्कराय नमः	६२६	ॐ धराय नमः
६०२	ॐ अधनाय नमः	६२७	ॐ प्रभवाय नमः
६०३	ॐ अमरेशाय नमः	६२८	ॐ सर्वगवे नमः
६०४	ॐ महादेवाय नमः	६२९	ॐ अर्यम्णे नमः
६०५	ॐ विश्वदेवाय नमः	६३०	ॐ सवित्रे नमः
६०६	ॐ सुरारिघ्ने नमः	६३१	ॐ रवये नमः
६०७	ॐ अहिर्बुघ्न्याय नमः	६३२	ॐ उषङ्गवे नमः
६०८	ॐ अनिलाभाय नमः	६३३	ॐ विधात्रे नमः
६०९	ॐ चेकिताय नमः	६३४	ॐ मान्धात्रे नमः
६१०	ॐ हविषे नमः	६३५	ॐ भूतभावनाय नमः
६११	ॐ अजैकपादे नमः	६३६	ॐ विभवे नमः
६१२	ॐ कपालिने नमः	६३७	ॐ वर्णविभाविने नमः
६१३	ॐ त्रिशङ्कवे नमः	६३८	ॐ सर्वकामगुणावहाय नमः
६१४	ॐ अजिताय नमः	६३९	ॐ पद्मनाभाय नमः
६१५	ॐ शिवाय नमः	६४०	ॐ महागर्भाय नमः
६१६	ॐ धन्वन्तरये नमः	६४१	ॐ चन्द्रवक्त्राय नमः
६१७	ॐ धूमकेतवे नमः	६४२	ॐ अनिलाय नमः
६१८	ॐ स्कन्दाय नमः	६४३	ॐ अनलाय नमः
६१९	ॐ वैश्रवणाय नमः	६४४	ॐ बलवते नमः

६४५ ॐ उपशान्ताय नमः
६४६ ॐ पुराणाय नमः
६४७ ॐ पुण्यचञ्चवे नमः
६४८ ॐ इत्यै नमः
६४९ ॐ कुरुकर्त्रे नमः
६५० ॐ कुरुवासिने नमः
६५१ ॐ पुरुहूताय नमः
६५२ ॐ गुणौषधाय नमः
६५३ ॐ सर्वाशयाय नमः
६५४ ॐ दर्भचारिणे नमः
६५५ ॐ सर्वप्राणिपतये नमः
६५६ ॐ देवदेवाय नमः
६५७ ॐ सुखासक्ताय नमः
६५८ ॐ सदसते नमः
६५९ ॐ सर्वरत्नविदे नमः
६६० ॐ कैलासगिरिवासिने नमः
६६१ ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय नमः
६६२ ॐ कूलहारिणे नमः
६६३ ॐ कुलकर्त्रे नमः
६६४ ॐ बहुविद्याय नमः
६६५ ॐ बहुप्रदाय नमः
६६६ ॐ वणिजाय नमः
६६७ ॐ वर्धकिने नमः
६६८ ॐ वृक्षाय नमः
६६९ ॐ बकुलाय नमः
६७० ॐ चन्दनाय नमः
६७१ ॐ छन्दाय नमः
६७२ ॐ सारग्रीवाय नमः
६७३ ॐ महाजत्रवे नमः
६७४ ॐ अलोलाय नमः
६७५ ॐ महौषधाय नमः
६७६ ॐ सिद्धार्थकारिणे नमः
६७७ ॐ छन्दोव्याकरणोत्तर सिद्धार्थाय नमः
६७८ ॐ सिंहनादाय नमः
६७९ ॐ सिंहदंष्ट्राय नमः
६८० ॐ सिंहाय नमः
६८१ ॐ सिंहवाहनाय नमः
६८२ ॐ प्रभवात्मने नमः
६८३ ॐ जगत्कालस्थानाय नमः
६८४ ॐ लोकहिताय नमः
६८५ ॐ तरवे नमः
६८६ ॐ सारङ्गाय नमः
६८७ ॐ नवचक्राङ्गाय नमः
६८८ ॐ केतुमालिने नमः
६८९ ॐ सभायनाय नमः
६९० ॐ भूतालयाय नमः
६९१ ॐ भूतपतये नमः
६९२ ॐ अहोरात्राय नमः
६९३ ॐ अनिन्दिताय नमः

६९४ ॐ सर्वभूतवाहिने नमः	७१९ ॐ गान्धाराय नमः
६९५ ॐ सर्वभूतनिलयाय नमः	७२० ॐ सुवासाय नमः
६९६ ॐ विभवे नमः	७२१ ॐ तपःसक्ताय नमः
६९७ ॐ भवाय नमः	७२२ ॐ रतये नमः
६९८ ॐ अमोघाय नमः	७२३ ॐ नराय नमः
६९९ ॐ संयताय नमः	७२४ ॐ महागीताय नमः
७०० ॐ अश्वाय नमः	७२५ ॐ महानृत्याय नमः
७०१ ॐ भोजनाय नमः	७२६ ॐ अप्सरोगणसेवितीय नमः
७०२ ॐ प्राणधारणाय नमः	७२७ ॐ महाकेतवे नमः
७०३ ॐ धृतिमते नमः	७२८ ॐ महाधातवे नमः
७०४ ॐ मतिमते नमः	७२९ ॐ नैकसानुचराय नमः
७०५ ॐ दक्षाय नमः	७३० ॐ चलाय नमः
७०६ ॐ सत्कृताय नमः	७३१ ॐ आवेदनीयाय नमः
७०७ ॐ युगाधिपाय नमः	७३२ ॐ आदेशाय नमः
७०८ ॐ गोपालाय नमः	७३३ ॐ सर्वगन्धसुखावहाय नमः
७०९ ॐ गोपतये नमः	७३४ ॐ तोरणाय नमः
७१० ॐ ग्रामाय नमः	७३५ ॐ तारणाय नमः
७११ ॐ गोचर्मवसनाय नमः	७३६ ॐ वाताय नमः
७१२ ॐ हरये नमः	७३७ ॐ परिधिने नमः
७१३ ॐ हिरण्यबाहवे नमः	७३८ ॐ पतिखेचराय नमः
७१४ ॐ प्रवेशिनां गुहापालाय नमः	७३९ ॐ संयोगवर्धनाय नमः
७१५ ॐ प्रकृष्टारये नमः	७४० ॐ गुणाधिकवृद्धाय नमः
७१६ ॐ महाहर्षाय नमः	७४१ ॐ अधिवृद्धाय नमः
७१७ ॐ जितकामाय नमः	७४२ ॐ नित्यात्मसहाय नमः
७१८ ॐ जितेन्द्रियाय नमः	७४३ ॐ देवासुरपतये नमः

७४४ ॐ पत्ये नमः
७४५ ॐ युक्ताये नमः
७४६ ॐ युक्तबाहवे नमः
७४७ ॐ दिविसुपर्वदेवाय नमः
७४८ ॐ आषाढाय नमः
७४९ ॐ सुषाढाय नमः
७५० ॐ ध्रुवाय नमः
७५१ ॐ हरिणाय नमः
७५२ ॐ हराय नमः
७५३ ॐ आवर्तमानवपुषे नमः
७५४ ॐ वसुश्रेष्ठाय नमः
७५५ ॐ महापथाय नमः
७५६ ॐ विमर्षशिराहारिणे नमः
७५७ ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय नमः
७५८ ॐ अक्षरथयोगिने नमः
७५९ ॐ सर्वयोगिने नमः
७६० ॐ महाबलाय नमः
७६१ ॐ समाम्नायाय नमः
७६२ ॐ असमाम्नायाय नमः
७६३ ॐ तीर्थदेवाय नमः
७६४ ॐ महारथाय नमः
७६५ ॐ निर्जीवाय नमः
७६६ ॐ जीवनाय नमः
७६७ ॐ मन्त्राय नमः
७६८ ॐ शुभाक्षाय नमः
७६९ ॐ बहुकर्कशाय नमः
७७० ॐ रत्नप्रभूताय नमः
७७१ ॐ रत्नाङ्गाय नमः
७७२ ॐ महार्णवनिपानविदे नमः
७७३ ॐ मूलाय नमः
७७४ ॐ त्रिशूलाय नमः
७७५ ॐ अमृताय नमः
७७६ ॐ व्यक्ताऽव्यक्ताय नमः
७७७ ॐ तपोनिधये नमः
७७८ ॐ आरोहणाय नमः
७७९ ॐ अधिरोधाय नमः
७८० ॐ शीलधारिणे नमः
७८१ ॐ महायशसे नमः
७८२ ॐ सेनाकल्पाय नमः
७८३ ॐ महाकल्पाय नमः
७८४ ॐ योगाय नमः
७८५ ॐ युगकराय नमः
७८६ ॐ हरये नमः
७८७ ॐ युगरूपाय नमः
७८८ ॐ महारूपाय नमः
७८९ ॐ महागहनाय नमः
७९० ॐ वधाय नमः
७९१ ॐ न्यायनिर्वपणाय नमः
७९२ ॐ पादाय नमः
७९३ ॐ पण्डिताय नमः

७९४ ॐ अचलोपमाय नमः
७९५ ॐ बहुमालाय नमः
७९६ ॐ महामालाय नमः
७९७ ॐ शशिहरसुलोचनाय नमः
७९८ ॐ विस्तारलवणकूपाय नमः
७९९ ॐ त्रियुगाय नमः
८०० ॐ सफलोदयाय नमः
८०१ ॐ त्रिनेत्राय नमः
८०२ ॐ विषाणाङ्गाय नमः
८०३ ॐ मणिविद्धाय नमः
८०४ ॐ जटाधराय नमः
८०५ ॐ बिन्दवे नमः
८०६ ॐ विसर्गाय नमः
८०७ ॐ सुमुखाय नमः
८०८ ॐ शराय नमः
८०९ ॐ सर्वयुधाय नमः
८१० ॐ सहाय नमः
८११ ॐ निवेदनाय नमः
८१२ ॐ सुखाजाताय नमः
८१३ ॐ सुगन्धाराय नमः
८१४ ॐ महाधनुषे नमः
८१५ ॐ गन्धपालिभगवते नमः
८१६ ॐ सर्वकर्मोत्थानाय नमः
८१७ ॐ मन्थानबहुलबाहवे नमः
८१८ ॐ सकलाय नमः
८१९ ॐ सर्वलोचनाय नमः
८२० ॐ तलस्तालाय नमः
८२१ ॐ करस्थालिये नमः
८२२ ॐ ऊर्ध्वसंहननाय नमः
८२३ ॐ महते नमः
८२४ ॐ छत्राय नमः
८२५ ॐ सुच्छत्राय नमः
८२६ ॐ विख्यातलोकाय नमः
८२७ ॐ सर्वाश्रयक्रमाय नमः
८२८ ॐ मुण्डाय नमः
८२९ ॐ विरूपाय नमः
८३० ॐ विकृताय नमः
८३१ ॐ दण्डिने नमः
८३२ ॐ कुण्डिने नमः
८३३ ॐ विकुर्वाणाय नमः
८३४ ॐ हर्यक्षाय नमः
८३५ ॐ ककुभाय नमः
८३६ ॐ वज्रिणे नमः
८३७ ॐ शतजिह्वाय नमः
८३८ ॐ सहस्रपदे नमः
८३९ ॐ सहस्रमूर्ध्ने नमः
८४० ॐ देवेन्द्राय नमः
८४१ ॐ सर्वदेवमयाय नमः
८४२ ॐ गुरवे नमः
८४३ ॐ सहस्रबाहवे नमः
८४४ ॐ सर्वाङ्गाय नमः
८४५ ॐ शरण्याय नमः
८४६ ॐ सर्वलोककृते नमः
८४७ ॐ पवित्राय नमः

८४८ ॐ त्रिककुन्मन्त्राय नमः
८४९ ॐ कनिष्ठाय नमः
८५० ॐ कृष्णपिङ्गलाय नमः
८५१ ॐ ब्रह्मदण्डविनिर्मात्रे नमः
८५२ ॐ शतघ्नीपाशशक्तिमते नमः
८५३ ॐ पद्मगर्भाय नमः
८५४ ॐ महागर्भाय नमः
८५५ ॐ ब्रह्मगभार्य नमः
८५६ ॐ जलजोद्भवाय नमः
८५७ ॐ गभस्तये नमः
८५८ ॐ ब्रह्मकृते नमः
८५९ ॐ ब्रह्मिणे नमः
८६० ॐ ब्रह्मविदे नमः
८६१ ॐ ब्राह्मणाय नमः
८६२ ॐ गतये नमः
८६३ ॐ अनन्तरूपाय नमः
८६४ ॐ नैकात्मने नमः
८६५ ॐ स्वयंभुवतिग्मतेजसे नमः
८६६ ॐ ऊर्ध्वगात्मने नमः
८६७ ॐ पशुपतये नमः
८६८ ॐ घातरंहसे नमः
८६९ ॐ मनोजवाय नमः
८७० ॐ चन्दनिने नमः
८७१ ॐ पद्मनालाग्राय नमः
८७२ ॐ सुरभ्युत्तारणाय नमः
८७३ ॐ नराय नमः
८७४ ॐ कर्णिकारमहस्रग्विणे नमः
८७५ ॐ नीलमौलये नमः
८७६ ॐ पिनाकधृषे नमः
८७७ ॐ उमापतये नमः
८७८ ॐ उमाकान्ताय नमः
८७९ ॐ जाह्नवीधृषे नमः
८८० ॐ उमाधवाय नमः
८८१ ॐ वरवराहाय नमः
८८२ ॐ वरदाय नमः
८८३ ॐ वरेण्याय नमः
८८४ ॐ सुमहास्वनाय नमः
८८५ ॐ महाप्रसादाय नमः
८८६ ॐ दमनाय नमः
८८७ ॐ शत्रुघ्ने नमः
८८८ ॐ श्वेतपिङ्गलाय नमः
८८९ ॐ पीतात्मने नमः
८९० ॐ परमात्मने नमः
८९१ ॐ प्रयतात्मने नमः
८९२ ॐ प्रधानधृषे नमः
८९३ ॐ सर्वपार्श्वमुखाय नमः
८९४ ॐ त्र्यक्षाय नमः
८९५ ॐ सर्वसाधारणवराय नमः
८९६ ॐ चराऽचरात्मने नमः
८९७ ॐ सूक्ष्मात्मने नमः
८९८ ॐ अमृतगोवृषेश्वराय नमः
८९९ ॐ साध्यर्षये नमः
९०० ॐ आदित्यवसवे नमः
९०१ ॐ विवस्वत्सवित्रमृताय नमः

६०२ ॐ ब्यासाय नमः
६०३ ॐ सर्वसुसंक्षेपविस्तराय नमः
६०४ ॐ पर्ययनराय नमः
६०५ ॐ कतवे नमः
६०६ ॐ संवत्सराय नमः
६०७ ॐ मासाय नमः
६०८ ॐ पक्षाय नमः
६०९ ॐ संख्यासमापनाय नमः
६१० ॐ कलायै नमः
६११ ॐ काष्ठायै नमः
६१२ ॐ लवेभ्यो नमः
६१३ ॐ मात्राभ्यो नमः
६१४ ॐ मुहूर्ताहःक्षपाभ्यो नमः
६१५ ॐ क्षणेभ्यो नमः
६१६ ॐ विश्वक्षेत्राय नमः
६१७ ॐ प्रजाबीजाय नमः
६१८ ॐ लिङ्गाय नमः
६१९ ॐ आद्यनिर्गमाय नमः
६२० ॐ सते नमः
६२१ ॐ असते नमः
६२२ ॐ व्यक्ताय नमः
६२३ ॐ अव्यक्ताय नमः
६२४ ॐ पित्रे नमः
६२५ ॐ मात्रे नमः
६२६ ॐ पितामहाय नमः
६२७ ॐ स्वर्गद्वाराय नमः
६२८ ॐ प्रजाद्वाराय नमः
६२९ ॐ मोक्षद्वाराय नमः
६३० ॐ त्रिविष्टपाय नमः
६३१ ॐ निर्वाणाय नमः
६३२ ॐ ह्रादनाय नमः
६३३ ॐ ब्रह्मलोकाय नमः
६३४ ॐ परागतये नमः
६३५ ॐ देवासुरविनिर्मात्रे नमः
६३६ ॐ देवासुपरायणाय नमः
६३७ ॐ देवासुरगुरवे नमः
६३८ ॐ देवाय नमः
६३९ ॐ देवासुरनमस्कृताय नमः
६४० ॐ देवासुरमहामात्राय नमः
६४१ ॐ देवासुरगणाश्रयाय नमः
६४२ ॐ देवासुरगणाध्यक्षाय नमः
६४३ ॐ देवासुरगणाग्रण्ये नमः
६४४ ॐ देवातिदेवाय नमः
६४५ ॐ देवर्षये नमः
६४६ ॐ देवासुरवरप्रदाय नमः
६४७ ॐ देवासुरेश्वराय नमः
६४८ ॐ विश्वाय नमः
६४९ ॐ देवासुरमहेश्वराय नमः
६५० ॐ सर्वदेवमयाय नमः
६५१ ॐ अचिन्त्याय नमः
६५२ ॐ देवतात्मने नमः
६५३ ॐ आत्मसम्भवाय नमः
६५४ ॐ उद्भिदे नमः
६५५ ॐ त्रिविक्रमाय नमः

९५६	ॐ वैद्याय नमः	९८३	ॐ राजराजाय नमः
९५७	ॐ विरजाय नमः	९८४	ॐ निरामयाय नमः
९५८	ॐ नीरजाय नमः	९८५	ॐ अभिरामाय नमः
९५९	ॐ अमराय नमः	९८६	ॐ सुरगणाय नमः
९६०	ॐ ईड्याय नमः	९८७	ॐ विरामाय नमः
९६१	ॐ हस्तीश्वराय नमः	९८८	ॐ सर्वसाधनाय नमः
९६२	ॐ व्याघ्राय नमः	९८९	ॐ ललाटाक्षाय नमः
९६३	ॐ देवसिंहाय नमः	९९०	ॐ विश्वदेवाय नमः
९६४	ॐ नरर्षभाय नमः	९९१	ॐ हरिणाय नमः
९६५	ॐ विबुधाय नमः	९९२	ॐ ब्रह्मवर्चसाय नमः
९६६	ॐ अग्रवराय नमः	९९३	ॐ स्थावरपतये नमः
९६७	ॐ सूक्ष्माय नमः	९९४	ॐ नियमेन्द्रियवर्धनाय नमः
९६८	ॐ सर्वदेवाय नमः	९९५	ॐ सिद्धार्थाय नमः
९६९	ॐ तपोमयाय नमः	९९६	ॐ सिद्धभूतार्थाय नमः
९७०	ॐ सुसुक्ताय नमः	९९७	ॐ अचिन्त्याय नमः
९७१	ॐ शोभनाय नमः	९९८	ॐ सत्यव्रताय नमः
९७२	ॐ वज्रिणे नमः	९९९	ॐ शुचये नमः
९७३	ॐ प्रासानाम्प्रभवाय नमः	१०००	ॐ व्रताधिषाय नमः
९७४	ॐ अव्ययाय नमः	१००१	ॐ पराय नमः
९७५	ॐ गुहाय नमः	१००२	ॐ ब्रह्मणे नमः
९७६	ॐ कान्ताय नमः	१००३	ॐ भक्तानां परमागतये नमः
९७७	ॐ निजसर्गाय नमः	१००४	ॐ विमुक्ताय नमः
९७८	ॐ पवित्राय नमः	१००५	ॐ मुक्ततेजसे नमः
९७९	ॐ सर्वपावनाय नमः	१००६	ॐ श्रीमते नमः
९८०	ॐ शृङ्गिणे नमः	१००७	ॐ श्रीवर्धनाय नमः
९८१	ॐ शृङ्गप्रियाय नमः	१००८	ॐ जगते नमः
९८२	ॐ बभ्रवे नमः		

। इति श्री शिवसहस्रनामावलिः समाप्तम् ।।

परिशिष्ट-६

अथ रुद्राक्ष माहात्म्य एवं धारण मंत्र

(श्रीयुत् पं. रमाशंकर जी त्रिपाठी के सौजन्य से)

भगवान शंकर सृष्टि में आदि देव हैं। सभी देवता इन्हें नमन करते हैं। जिस समय सारे देवता त्रिपुरासुर से परास्त हो गये तो वे शिवजी की शरण में गये। वहाँ उन्होंने भगवान शंकर से त्रिपुरासुर के भय निवारण के लिए प्रार्थना की और वे भगवान आशुतोष त्रिपुरासुर को मारने के लिए तैय्यार होने लगे। उन्होंने अपने हाथ में कालबज्र के समान अघोरास्त्र उठा लिया। उस दिव्यास्त्र के तेज से शिव के नेत्रों से जल-बिन्दु गिरे और वे पृथ्वी में विलीन हो गये उन्हीं से रुद्राक्ष के वृक्ष की उत्पत्ति हुयी। उन वृक्षों में जो फल लगे वे रुद्राक्ष कहलाये। ये साक्षात् शिवस्वरूप होते हैं। उन्हें धारण करने वाला भी शिवस्वरूप होता है। ये रुद्राक्ष अनेक मुखों वाले होते हैं। उनके पृथक्-पृथक् गुण तथा प्रभाव होते हैं। यहाँ कुछ रुद्राक्षों की महिमा एवं धारणीय मंत्रों का संकलन दे रहे हैं।

जो व्यक्ति रुद्राक्ष धारण करता है वह साक्षात् रुद्रतुल्य हो जाता है। इसके स्पर्शमात्र से पूजन अनुष्ठान आदि कार्यों का फल लाख गुना बढ़ जाता है। इसकी माला धारण करने से वह फल कोटि गुना होता है। हाथ-कान-मस्तक-कंठ आदि सभी अंगों में विधानपूर्वक धारण करने से वे अनन्त फलदायक होते हैं ऐसा व्यक्ति संसार में शिव के समान पूजनीय होता है। उसके दर्शन करने से शिवदर्शन के समान फल की प्राप्ति होती है। जिन्होंने सारे जीवन पाप कर्म किये हैं, जो सर्वदा अशुद्ध हैं, घोरातिघोर पातकों से युक्त है, ब्रह्महत्या-गोहत्या जैसे महापातकी लोग भी रुद्राक्ष धारण करने से पापमुक्त हो जाते हैं। रुद्राक्ष के अभाव में मिट्टी का बना रुद्राक्ष भी मनुष्य के २१ पीढ़ियों को रुद्रलोक का वास देने वाला होता है जैसा कहा है कि -

मृन्मयं वापि रुद्राक्षं कृत्वा चैवावधारयेत्।।

रुद्राक्ष यदि अधम पशु-पक्षी के भी शरीर में पड़ा हो और उसके साथ उसकी मृत्यु हो जाय तो वह भी रुद्रलोक का अधिकारी होता है। इसकी आकृति कई प्रकार की छोटी, बड़ी, बीच की और भी कई प्रकार की होती है। इसके सम्बन्ध में कहा है कि -

''रुद्राक्षं शिवलिंगं च स्थूलं स्थूलं प्रशस्यते।।''

अस्तु, यह प्रायः एक से चौदह मुखों का देखा गया है। शरीर पर धारण में रुद्राक्षों का विशेष महत्त्व है। इसके बारे में लिखा है कि ३२ दाने कंठ में, ४० दाने शिर में। ६-६ दाने कानों में, १२-१२ दाने हाथ के पहुँचों में, १६-१६ दाने भुजाओं में, १ शिखा में, १०८ दाने वक्ष पर जो धारण करता है वह साक्षात् नीलकण्ठ के समान हो जाता है।

रुद्राक्षों का धारण करने के लिए भगवान् शिव का पूजन तथा उसी प्रकार रुद्राक्ष का पूजन उनके मंत्रों द्वारा करें। इसके बाद वेदपाठी ब्राह्मण या शैव-सम्प्रदाय के साधक से स्वस्तिवाचन पूर्वक धारण करें। इसके बाद उसे शिवस्वरूप मान कर द्रव्य दक्षिणा फल नैवेद्य आदि से सम्मानित करे। इससे रुद्राक्ष धारण करने के उत्तम फल की प्रप्ति होती है। एक हजार रुद्राक्ष के मंत्र को जप करें।

१. एकमुख रुद्राक्ष

एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् शिवस्वरूप होता है। इसको धारण करने से ब्रह्महत्या जैसे महापातक दूर होते हैं। यह कठिनता से प्राप्त होता है।

धारण मंत्र - ॐ ऐं हं औं ऐं ॐ।

२. दोमुखी रुद्राक्ष

दो मुख का रुद्राक्ष शिव पार्वती का स्वरूप होता है। इसके धारण करने से गोहत्या, अंगच्छेद जैसे बड़े पातक निर्मल हो जाते हैं।

धारण मंत्र - ॐ क्षीं ह्रीं क्षौं ब्रीं ॐ।

३. तीनमुखी रुद्राक्ष

तीन मुखों का रुद्राक्ष अग्निस्वरूप होता है। इसके धारण करने से स्त्री-हत्या का पातक दूर होता है। रक्तचाप के उच्चमान को समान करता है।

धारण मंत्र - ॐ रं इं ह्रीं हूं ॐ।

४. चारमुखी रुद्राक्ष

यह साक्षात् प्रजापति ब्रह्मा का स्वरूप होता है। इसे धारण करने से नरहत्या का पाप दूर होता है। वंशवृद्धि के लिए इसको धारण करना चाहिए।

धारण मंत्र - ॐ वां क्रां तां हां ईं ॐ।

५. पंचमुखी रुद्राक्ष

पंचमुखी साक्षात् शिव का स्वरूप होता है। इसके धारण करने से अगम्यागमन, भक्ष्याभक्ष्य जैसे पातक दूर होते हैं।

धारण मंत्र - ॐ ह्रां आं क्ष्म्यौं स्वाहा।

६. षड्मुखी रुद्राक्ष

यह स्वामी कुमार का स्वरूप होता है। इसको दाहिनी भुजा पर धारण करने से गर्भपात, बालहत्या जैसे निन्दनीय पातकों से मुक्ति होती है। कचहरी आदि राजदरबार में इसे धारण करने से विजय होती है।

धारण मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सौं ऐं ॐ।

७. सप्तमुखी रुद्राक्ष

यह अनन्त नाम का होता है। इसके धारण करने से स्वर्ण की चोरी, गोहत्या जैसे सैकड़ों पाप छूट जाते हैं।

धारण मंत्र - ॐ हं क्रीं ह्रीं सौं ॐ।

८. अष्टमुखी रुद्राक्ष

यह साक्षात गणेश जी का स्वरूप होता है। इसके धारण करने से कम तौलना, परस्त्री-गमन जैसे पातकों से मुक्ति होती है। सर्वत्र यश कीर्ति प्राप्त होती है।

धारण मंत्र - ॐ ह्रां ग्रीं लं आं श्रीं ॐ।

९. नवमुखी रुद्राक्ष

यह साक्षात् भैरव का स्वरूप होता है। यह कपिलवर्ण का होता है। इसके बायीं भुजा में धारण करने वाला साक्षात् रुद्रतुल्य हो जाता है तथा सर्वत्र विजयी होता है।

धारण मंत्र - ॐ ह्रीं वं यं रं लं ॐ।

१०. दशमुखी रुद्राक्ष

यह साक्षात् भगवान विष्णु का स्वरूप है। इसके धारण करने से नवग्रहजन्य पीड़ा, भूत-प्रेत-बेताल-ब्रह्मराक्षस आदि शान्त होते हैं। इसके धारण करने वाले को सर्पदंश का भय नहीं होता है। धर्म की ओर प्रवृत्ति होती है।

धारण मंत्र - ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं व्रीं ॐ।

११. एकादशमुखी रुद्राक्ष

यह एकादश रुद्रों का एक स्वरूप है। जो व्यक्ति इसको शिखा में धारण करता है उसे हजारों अश्वमेघों का, सैकड़ों बाजपेय यज्ञों का फल प्राप्त होता है। चन्द्रग्रहण में दान करने का फल सदैव प्राप्त होता है।

धारण मंत्र - ॐ रूं मूं यूं औं ॐ।

१२. द्वादशमुखी रुद्राक्ष

यह साक्षात् भगवान सूर्य का स्वरूप होता है। इसके धारण करने वाला गोहत्या, नरहत्या, रत्नों की चोरी जैसे महापातकों से मुक्त होता है। इससे दारिद्र्य का नाश, ग्रह-पीड़ा की शान्ति होती है। चोर-अग्नि-व्याधिभय का निवारण होता है। दैहिक-दैविक-आधिभौतिक-सांसर्गिक सभी प्रकार के उपद्रव शान्त होकर धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति होती है।

धारण मंत्र - ॐ ह्रीं क्षौं घृणिः श्रीं ॐ।

१३. त्र्योदशमुखी रुद्राक्ष

यह देवराज इन्द्र का स्वरूप होता है। इसको धारण करने वाला सभी पातकों उपपातकों से मुक्त होता है। उसे सभी धातु-रसायन-रत्न आदि अतुल ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

धारण मंत्र - ॐ ईं यां आपः औं ॐ।

१४. चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष

यह साक्षात् हनुमान जी का स्वरूप होता है। जो कोई इसको मस्तक पर धारण करता है उसे परम पद की प्राप्ति होती है।

धारण मंत्र - ॐ औं हस्फ्रें खस्फ्रें हस्रौं हसल्फैंः ॐ।

।।अस्तु।।

परिशिष्ट-७

।। ॐ नमः शिवाय।।

श्री अष्टोत्तर शत बिल्वपत्रार्पण विधानम्

ॐ साम्ब सदाशिवाय नमः

शिवतत्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरः
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः।।
नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टाङ्गोयं प्रणामोऽहं प्रयत्नेन मयाकृतः।।

शिवार्चन की यथा साध्य विधि से शिवजी का पूजन करके सुन्दर कोमल अछिद्र बिल्वपत्र ठीक करें। यदि सम्भव हो तो उन पर अष्टगंध या लाल चन्दन से "ॐ नमः शिवाय" अथवा "श्रीराम" का लेखन कर लें। स्ववित्तानुसार सोने या चाँदी का बिल्वपत्र चढ़ाना अति उत्तम होता है। इसके करने से समस्त दैहिक, दैविक, भौतिक तापों का शमन, ग्रहोपग्रहजन्य पीड़ा शान्त होती है तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, आयु, आरोग्य, ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति के साथ-साथ मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। इस अनुष्ठान को आगे लिखी विधि से करें।

।। संकल्पः ।।

ॐ विष्णुः ३ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः ..... शर्माऽहं मम जन्मराशेः वर्तमान नवग्रहजन्य पीड़ा परिहारार्थं दैहिक दैविक भौतिक त्रिविध तापोपशमनार्थं नानाविध्यागतभयनिरसनपूर्वकं उत्तमायुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं पुरुषार्थचतुष्टयसिद्ध्यर्थं स्थिर धनलक्ष्मी पुत्र पौत्र प्रपौत्र सुखावाप्तये अस्थिर लक्ष्मी चिरकाल पर्यंतं संरक्षणार्थं पूर्वजन्म पुण्योदय फलस्वरूपेण प्राप्ते पुण्यावसरे जन्म जन्मान्तर कृत समस्त पातकोपपातकक्षयार्थं साम्बसदाशिव प्रीत्यर्थं अष्टोत्तरशत स्तोत्रं मंत्रैः बिल्वपत्रार्चनमहं करिष्ये।

।। विनियोगः ।।

ॐ अस्य श्री बिल्वपत्रार्पण स्तोत्र मन्त्रस्य ऋषभ शिव योगीश्वर ऋषिः साम्बसदाशिवोदेवता अनुष्टुप्छन्दः ॐ बीजं नमः शक्तिः शिवायेति कीलकम् अष्टोत्तरशत स्तोत्र मंत्रैः बिल्वपत्र समर्पणे विनियोगः।

।। अथ न्यास विधानम् ।।

ॐ सदाशिवाय - अंगुष्ठाभ्यां नमः ।।

ॐ नं गंगाधराय - तर्जनीभ्यां नमः ।।

ॐ मं मृत्युञ्जयाय - मध्यमाभ्यां नमः ।।

ॐ शिं शूलपाणये - अनामिकाभ्यां नमः ।।

ॐ वां पिनाकिने - कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।।

ॐ यं उमापतये - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।।

।। अथ षडङ्गन्यासः ।।

ॐ सदाशिवाय - हृदयाय नमः ।।

ॐ नं गंगाधराय - शिरसे स्वाहा ।।

ॐ मं मृत्युञ्जयाय - शिखायै वषट् ।।

ॐ शिं शूलपाणये - कवचाय हुं ।।

ॐ वां पिनाकिने - नेत्रत्रयाय वौषट् ।।

ॐ यं उमापतये - अस्त्राय फट् ।।

।। अथध्यानम् ।।

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं दिव्य कर्पूर गौरं।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तं ।।
नांग पाशं च घण्टां प्रलयहुतवहं सांकुशं वामभागे।
नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ।।

बिल्वपत्रसमर्पणश्लोकाः

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१।।

त्रिशाखैः बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभम्।।
तव पूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।२।।

सर्वत्रैलोक्यकर्तारं सर्वत्रैलोक्यपालकम्।।
सर्वत्रैलोक्य हर्तारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।३।।

नागाधिराज वलयं नागहारेण भूषितम्।।
नागकुण्डलसंयुक्तं बिल्पत्रं शिवार्पणम्।।४।।

अक्षमालाधरं रुद्रं पार्वती प्रिय बल्लभम्।।
चन्द्रशेखरमीशानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।५।।

त्रिलोचनं दशभुजं दुर्गादिहार्ध धारिणाम्।।
विभूत्याभ्यर्चितो देवं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।६।।

त्रिशूलधारिणं देवं नानाभरण सुन्दरम्।।
चन्द्रशेखरमीशानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।७।।

गंगाधरं अम्बिकानाथं फणिकुण्डल मण्डितम्।।
कालकालं गिरीशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।८।।

शुद्धस्फटिकसंकाशं शितिकण्ठं कृपानिधिम्।।
सर्वेश्वरं सदाशान्तं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।९।।

सच्चिदानन्दरूपं च परानन्दमयं शिवम्।।
वागीश्वरं चिदाकाशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१०।।

शिपिविष्टं सहस्राक्षं दुंदुभ्यश्च निषंगिणम्।।
हिरण्यबाहुं सेवान्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।११।।

अरुणं वामनंतारं वास्तव्यं चैववास्तवम् ।।
ज्येष्ठं कनिष्ठं घैशन्तं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१२।।

हरिकेशं संनदीशं उच्चैघोषं सनातनम् ।।
अघोररूपं कर्मं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१३।।

पूर्वजाऽपरजंयाम्यं सूक्ष्मतस्कर नायकम् ।।
नीलकंठ जघन्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१४।।

सुराश्रयं विषहरं कर्मिणां च बरूथिनम् ।।
महासेनं महावीरं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१५।।

कुमारं कुशलं कूप्यं वदान्यं च महारथम् ।।
तौर्यातौयं च देव्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१६।।

दशकर्णं ललाटाक्षं पञ्चवक्त्रं सदाशिवम् ।।
अशेषपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१७।।

नीलकण्ठ जगद्वंद्यं दीनानाथ महेश्वरम् ।।
महापापहरं शंभुं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१८।।

चूड़ामणि कृत्त विधुं बलयीकृत्त वासुकिम् ।।
कैलाशनिलयं भीमं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१९।।

कर्पूर कुन्दधवलं नरकार्णव तारकम् ।।
करुणामृत सिन्धुं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२०।।

महादेवं महात्मानं भुजंगाधिपकंकणम् ।।
महापापहरंदेवं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२१।।

भूतेशं खण्डपरशुं वामदेवं पिनाकिनम् ।।
वामेशक्तिधंर श्रेष्ठं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२२।।

कालेक्षणं विरूपाक्षं श्रीकण्ठं भक्तवत्सलम् ।।
नीललोहित खट्वाङ्गं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२३।।

कैलाशवासिनं भीमं कठोरं त्रिपुरान्तकम् ।।
वृषाङ्कं बृषभारूढं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२४।।

सामप्रियं सर्वमयं भस्मोद्धूलितविग्रहम् ।।
मृत्युञ्जयं लोकनाथं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२५।।

दारिद्र्यदुखहरणं रविचन्द्रानलेक्षणम् ।।
मृगपाणिं चन्द्रमौलिं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२६।।

सर्वलोकमयाकारं सर्वलोकैक साक्षिणम् ।।
निर्मलं निर्गुणाकारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२७।।

सर्व तत्वात्मकं साम्बं सर्वतत्त्वविदूरकम् ।।
सर्व तत्वस्वरूपं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२८।।

सर्वलोकगुरुं स्थाणुं सर्वलोक वरप्रदम् ।।
सर्वलोकैकनेत्रं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।२९।।

मन्मथोद्धरणं शैवं भवभर्ग परात्परम् ।।
कमला प्रियपूज्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।३०।।

तेजोमयं महाभीमं उमेशं भस्मलेपनम् ।।
भवरोगविनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।३१।।

स्वर्गापवर्ग फलदं रघुनाथप्रदम् ।।
नागराज सुताकान्तं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।३२।।

मञ्जीरपाद युगलं शुभलक्षण लक्षितम् ।।
फणिराज विराजं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।३३।।

निरामयं निराधारं निःसर्गं निष्प्रपञ्चकम् ।।
तेजोरूपं महारौद्रं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।३४।।

सर्वलोकैक पितरं सर्व लोकैक मातरम् ।।
सर्वलोकैक नाथं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।३५।।

चित्राम्बरं निराभासं वृषभेश्वरवाहनम्।।
नीलग्रीवं चतुर्वक्त्रं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।३६।।

रत्नकंचुक रत्नेशं रत्नकुण्डल मण्डितम्।।
नवरत्न किरीटं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।३७।।

दिव्य रत्नाङ्गुली स्वर्णं कण्ठाभरणभूषितम्।।
नानारत्न मणिमयं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।३८।।

रत्नांगुलीयविलसत् करशाखा नखप्रभम्।।
भक्तमानसगेहं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।३९।।

वामाङ्गभागे विलसद् अम्बिकावीक्षणं प्रियम्।।
पुण्डरीकमिवाक्षं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४०।।

सम्पूर्ण कामदं सौख्यं भक्तेष्टं फलकारकम्।।
सौभाग्यदं हितकारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४१।।

नानाशास्त्रगुणोपेतं स्फुरन्मङ्गल विग्रहम्।।
विद्या त्रिभेदरहितं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४२।।

अप्रमेयं गुणाधारं वेदकृद्रूप विग्रहम्।।
धर्माधर्म प्रवृत्तं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४३।।

गौरी विलास सदनं जीवजीव पितामहम्।।
कल्पान्त भैरवं शुभ्रं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४४।।

सुखदं सुखनाशं च दुःखदं दुःखनाशनम्।।
दुःखावतारं भद्रं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४५।।

सुखरूपं रूपनाशं सर्वधर्म फलप्रदम्।।
अतीन्द्रियं महामायं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४६।।

सर्वपक्षि मृगाकारं सर्वपक्षि मृगाधिपम्।।
सर्वपक्षि मृगाधारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।४७।।

जीवाध्यक्षं जीववन्द्यं जीव जीवन रक्षकम् ।।
जीकृज्जीवहरणं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।४८।।

विश्वात्मानं विश्ववन्द्यं जङ्गात्मावज्रहस्तकम् ।।
बज्रेशं बज्रभूषं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।४९।।

गणाधिपं गणाध्यक्षं प्रलयानल नाशनम् ।।
जितेन्द्रियं वीरभद्रं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५०।।

त्रयम्बकं मतं शूरं अरिषड्वर्ग नाशनम् ।।
दिगम्बरं क्षोभनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५१।।

कुन्देन्दुशङ्खधवलं भगनेत्रमिदुज्चलम् ।।
कालाग्निरुद्र सदृशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५२।।

कम्बुग्रीवं कम्बुकण्ठं धैर्यदं धैर्यवर्धकम् ।।
शार्दूलं चर्मवसनं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५३।।

जगदुत्पत्ति हेतुं च जगत्प्रलय कारकम् ।।
पूर्णानन्दस्वरूपं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५४।।

स्वर्णकेशं महत्तेजं पुण्यश्रवण कीर्तनम् ।।
ब्रह्माण्ड नायकं तारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५५।।

मन्दारमूलनिलयं मन्दारकुसुमप्रियम् ।।
वृन्दारकप्रियतरं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५६।।

महेन्द्रियं महाबाहुं विश्वास परिपूरकम् ।।
सुलभासुलभं लभ्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५७।।

बीजाधारं बीजरूपं निर्बीजंवीजवृद्धिदम् ।।
परेशं बीजनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५८।।

युगाकारं युगाधीशं युगकृतयुगनाशनम् ।।
परेशं बीजनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।५९।।

धूर्जटिंपिङ्गलजटा जय मण्डल मण्डितम् ।।
कर्पूरगौरं गिरीशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।६०।।

सुरावासं जनावासं योगीशं योगपुङ्गवम् ।।
योगदे योगिनांसिंहं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।६१।।

उत्तमानुत्तमं तत्वं अन्धकासुरसूदनम् ।।
भक्तकल्पद्रुमस्तोमं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।६२।।

विचित्रमाल्यवसनं दिव्यचन्दन चर्चितम् ।।
विष्णुब्रह्मादिवंद्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।६३।।

कुमारं पितरं देवं स्थितचन्द्रकलानिधिम् ।।
ब्रह्मसत्यं जगन्भिन्नं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।६४।।

लावण्यमधुराकारं करुणारसवारिधिम् ।।
भ्रुवोर्मध्ये सहस्रार्चि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।६५।।

जटाधरं पाषकाक्षं ऋक्षेशं भूमिनायकम् ।।
कामदं सर्वदागम्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।६६।।

शिवं शान्तं उमानाथं महाध्यान परायणम् ।।
ज्ञानप्रदं कृत्तिवासं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।६७।।

वासुक्युरुग्रहारं च लोकानुग्रहकारणम् ।।
कोटिकन्यां महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।६८।।

शशाङ्कधारिणं गर्भं सर्वलोकैक शङ्करम् ।।
शुद्धं च शाश्वतं नित्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।६९।।

शरणागतदीनार्त परित्राण परायणम् ।।
गम्भीरं वषटाकारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।७०।।

भोक्तारं भोजनं भोज्यं जेतारं जितमानसम् ।।
करणं कारणं विष्णुं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।७१।।

क्षेत्रज्ञं क्षेत्रपालं च परार्थैक प्रयोजनम् ।।
व्योमकेशं भीमवेशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।७२।।

भवघ्नं करुणोपेतं क्षोदिष्टं यमनाशकम् ।।
हिरण्यगर्भं हेमाङ्गं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।७३।।

दक्षं चामुण्डजनकं मोक्षदं मोक्षनायकम् ।।
हिरण्यदं हेमरूपं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।७४।।

महाश्मशाननिलयं प्रच्छन्नं स्फटिकप्रभम् ।।
वेदाश्वं वेदरूपं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।७५।।

स्थिरं स्वधर्मनाथं ब्रह्मण्यं चाश्रय विभुम् ।।
जगन्निवासं प्रमथं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।७६।।

रुद्राक्षमालाभरणं रुद्राक्षं प्रियदर्शनम् ।।
रुद्राक्षभक्त संस्तोभं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।७७।।

फणीन्द्रविलसद्कण्ठं भुजंगाभरण प्रियम् ।।
दक्षाध्वर विनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।७८।।

नागेन्द्र विलसद्कर्णं महेन्द्रवलावृतम् ।।
मुनिवंद्यं मुनिश्रेष्ठं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।७९।।

मृगेन्द्रचर्मवसनं मुनीनामेक जीवनम् ।।
सर्वदेवादि पूज्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।८०।।

निधनेशं धनाधीशं अपमृत्यु विनाशनम् ।।
लिङ्गमूर्ति अलिङ्गात्मं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।८१।।

भक्तकल्याणदं व्यस्तं वेदवेदान्त संस्तुतम् ।।
कल्पकृत् कल्पनाशं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।८२।।

घोरपातक दावाग्निं जन्मकर्म विवर्जितम् ।।
कपालमालाभरणं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।८३।।

मातङ्गचर्मवसनं विरदं पवित्रधारकम् ।।
विष्णुक्रान्तं अनन्तं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।८४।।
यज्ञकर्म फलाध्यक्षं यज्ञविघ्नविनाशकम् ।।
यज्ञेशं यज्ञभोक्तारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।८५।।
कालाधीशं त्रिकालज्ञं दुष्टनिग्रहकारकम् ।।
योगीमानसपूज्यं च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।८६।।
महोन्नतं महाकायं महोदर महाभुजम् ।।
महावक्रं महावृद्धं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।८७।।
सुनेत्रं सुललाटं च सर्वभीमपराक्रमम् ।।
महेश्वरं शिवतरं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।८८।।
समस्त जगदाधारं समस्त गुणसागरम् ।।
सत्यं सत्यगुणोपेतं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।८९।।
माघकृष्णचतुर्दश्यां पूजार्थं च जगद्गुरुम् ।।
दुर्लभं सर्वदेवानां बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।९०।।
तत्रापिदुर्लभंमन्ये नभोमासेन्दुवासरे ।।
प्रदोषकाले पूजां च बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।९१।।
शालग्रामेषु विप्राणां तटोकेशतकूपयोः ।।
कोटिकन्या महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।९२।।
दर्शनं बिल्वबृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम् ।।
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।९३।।
तुलसीबिल्वनिर्गुंडी जम्बीरमलकंतथा ।।
पञ्चबिल्वमितिख्यातं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।९४।।
अखण्डैः बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशंकरम् ।।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।९५।।
सालंकृताशतावृत्या कन्याकोटि सहस्त्रकम् ।।
साम्राज्यं पृथिवीदानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।९६।।

दशकोटि तुरंगानां अश्वमेध सहस्त्रकम्।।
सवत्स धेनुकोटीनां बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।९७।।

चतुर्वेद सहस्त्राणि भारतादि पुराणकम्।।
साम्राज्यं पृथ्वीदानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।९८।।

सर्वरत्नमयंमेरुं कांचनं दिव्यवस्त्रकम्।।
तुलाभागं शतावृत्तं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।९९।।

अष्टोत्तरशतं बिल्वं योऽर्चयेत् लिङ्गमस्तके।।
अथर्वोक्तं वदेद्यस्तु बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१००।।

काशीक्षेत्र निवासीच कालभैरव दर्शनम्।।
अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१०१।।

अष्टोत्तरशतैः श्लोकैः स्तोत्राद्यैः पूजयेतथा।।
त्रिसन्ध्यं मोक्षमवाप्रोति बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१०२।।

दन्ति कोटि सहस्त्राणां भूहिरण्यं सहस्त्रकम्।।
सर्वं क्रतुमयं पुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१०३।।

पुत्र पौत्रादि भोगं च शुक्तवाचात्र यथोप्सितम्।।
अन्तं च शिवसायुज्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१०४।।

विप्रकोटि सहस्त्रानां वित्तदानाच्चयत्फलम्।।
तत्फले प्राप्नुयात्सत्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१०५।।

त्वन्नमकीर्तनं तदवत् तवपाम्बुपसेवनम्।।
जीवनन्मुक्तो भवेनित्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१०६।।

अनेकदानफलदं अनन्तसुकृतादिकम्।।
तीर्थयात्रादिकं पुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१०७।।

त्वंमाम्पालय सर्वत्र पदध्यानं कृतं तव।।
भवनं शांकरं नित्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।।१०८।।

फलश्रुतिः

एककाले पठेन्नित्यं सर्वशत्रु विदारणम् ।।
द्विकाले च पठेन्नित्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१०९ ।।
एकैक बिल्वपत्रेण कोटि यज्ञफलं लभेत् ।।
महादेवस्य पूजार्थं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।११० ।।
अमृतोद्भववृक्षस्य महादेवप्रियस्य च ।।
कण्ठकाघाताद्कण्टकेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।१११ ।।
त्रिकालेयः पठेन्नित्यं मनोवांछा फलप्रदम् ।।
अचिरात् कार्य सिद्धिं च लभतेनात्र संशयः ।।११२ ।।
एककालं द्विकालं च त्रिकाले यः पठेन्नरः ।।
लक्ष्मी प्राप्तिः शिवावासं शिवेन सहमोदते ।।११३ ।।
कोटिजन्मकृतं पापं स च तेन विनश्यति ।।
सप्तजन्मकृतं पापं श्रवणेन विनश्यति ।।११४ ।।
जन्मान्तरकृतं पापं पठनेन विनश्यति ।।
दिवारात्रिकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति ।।११५ ।।
क्षणे क्षणे कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ।।
पुस्तकं धारयेद् देही आरोग्यं दुःख नाशनम् ।।११६ ।।

।। शिवार्पणमस्तु ।।

इसके बाद हाथ में जलाक्षतादि लेकर बोलें :-

अनेन अष्टोत्तरशत बिल्वपत्रार्पण कर्मणा साम्बसदाशिवदेवता प्रीयताम् न मम ।।

भूयसी दक्षिणादानं –

ॐ विष्णुः ३ अद्येत्यादि देशकालौ सङ्कीर्त्य......... गोत्र. .... शर्माऽहं अष्टोतरशत बिल्वपत्रार्चने साङ्गोपाङ्गफलावाप्तये मनसोपकल्पित द्रव्यदक्षिणां नानानाम् गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो पृथक् पृथक् दातुं अहं उत्सृजे।

।। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः ।।

परिशिष्ट-८

अथ रुद्रयागहवनमन्त्राः

एकषट्युत्तरशतधाविभागपक्षमाश्रित्य

रुद्रस्वाहाकारविधिः

ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा।

ॐ अम्बेऽ अम्बिके० स्वाहा। इति हुत्वा,

ॐ यज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ विब्भ्राड् बृहत्पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्न्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा।।१।।

ॐ या ते रुद्द्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा।।२।।

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हिꣳसीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा।।३।।

ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसमुनाऽ असत् स्वाहा।।४।।

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्व्यो भिषक् । अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भ पन्त्सर्व्वाश्च्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव स्वाहा ।।५।।

ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽ अरूणऽउत बब्भ्रुः समुङ्गलः । ये चैनঁ रुद्राऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषाঁ हेडऽ ईमहे स्वाहा ।।६ ।।

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः । उतैनङ्गोपाऽ अदृश्श्रन्न दृश्श्रन्नुदहार्य्यः सः दृष्ट्टो मृडयाति नः स्वाहा ।।७।।

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे । अथो येऽ अस्य सत्त्वानो हन्तेब्भ्योऽकरन्नमः स्वाहा ।।८।।

ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्त्न्योंर्ज्ज्याम् । याश्च्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा ।।९।।

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ऽ उत । अने शन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा ।।१०।।

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयास्म्मान्न्विश्श्वतस्त्व मयक्ष्यमया परिभुज स्वाहा ।।११।।

ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः । अथो यऽ इषुधिस्त वारेऽ अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा ।।१२।।

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वঁ सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य्य शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा ।।१३।।

ॐ नमस्त ऽ आयुधायानातताय धृष्ण्णवे। उभाब्भ्यामुत
ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने स्वाहा।।१४।।

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽ अर्ब्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत
मा नऽ उक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा
नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्र रीरिषः स्वाहा।।१५।।

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा
नोऽ अश्श्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्द्र भामिनो
व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा।।१६।।

ॐ नमो हिरण्ण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा।।१७।।

ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा।।१८।।

ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा।।१९।।

ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः स्वाहा।।२०।।

ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्वयाधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा।।२१।।

ॐ नमो भवस्य हेत्त्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा।।२२।।

ॐ नमो रुद्द्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा।।२३।।

ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा।।२४।।

ॐ नमो रोहिताय स्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा।।२५।।

ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा।।२६।।

ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा।।२७।।

ॐ नमऽ उच्चैर्ग्घोषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा।।२८।।

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा ।।२९।।

ॐ नमः सहमानाय निव्याधिनऽ आव्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ।।३०।।

ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा ।।३१।।

ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्ण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ।।३२।।

ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ।।३३।।

ॐ नमो निषङ्गिणऽ इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ।।३४।।

ॐ नमः सृकायिब्भ्यो जिघा सद्भ्यो मुष्णताम्पये नमः स्वाहा ।।३५।।

ॐ नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो व्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ।।३६।।

ॐ नमऽ उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ।।३७।।

ॐ नमऽ इषुमद्भ्यो धन्वायिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।३८।।

ॐ नमऽ आतन्वानेब्भ्यः प्रतिदधानेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ।।३९।।

ॐ नमऽ आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ।।४०।।

ॐ नमो व्विसृजद्भ्यो व्विद्ध्यद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ।।४१।।

ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ।।४२।।

ॐ नमः शयानेब्भ्यऽ आसीनेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।४३।।

ॐ नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ।।४४।।

ॐ नमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ।।४५।।

ॐ नमोऽश्श्वेब्भ्योऽश्श्वपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ।।४६।।

ॐ नमऽ आव्वयाधिनीब्भ्यो व्विविद्ध्यन्तीब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ।।४७।।

ॐ नमऽ उगणाब्भ्यस्तृ ँ हतीब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४८।।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।४६।।

ॐ नमो व्व्रातेब्भ्यो व्व्रातपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५०।।

ॐ नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५१।।

ॐ नमो व्विरूपेब्भ्यो व्विश्श्वरूपेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५२।।

ॐ नमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५३।।

ॐ नमो रथिब्भ्योऽ अरथेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५४।।

ॐ नमः क्षत्तृब्भ्यः सङ्ग्रहीतृब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५५।।

ॐ नमो महद्ब्भ्योऽ अर्ब्भकेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५६।।

ॐ नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५७।।

ॐ नमः कुलालेब्भ्यः कर्म्मारेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५८।।

ॐ नमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।५६।।

ॐ नमः श्श्वनिब्भ्यो मृगयुब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।६०।।

ॐ नमः श्श्वब्भ्यः श्श्वपतिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा।।६१।।

ॐ नमो भवाय च रुद्द्राय च स्वाहा।।६२।।

ॐ नमः शर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा।।६३।।

ॐ नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा।।६४।।

ॐ नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा।।६५।।

ॐ नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा।।६६।।

ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा।।६७।।

ॐ नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा।।६८।।

ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा।।६९।।

ॐ नमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा।।७०।।

ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा।।७१।।

ॐ नमोऽग्रयाय च प्प्रथमाय च स्वाहा।।७२।।

ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च स्वाहा।।७३।।

ॐ नमः शीग्घ्याय च शीब्भ्याय च स्वाहा।।७४।।

ॐ नमऽ ऊर्म्म्याय चावस्वन्न्याय च स्वाहा।।७५।।

ॐ नमो नादेयाय च द्वीप्पयाय च स्वाहा।।७६।।

ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा।।७७।।

ॐ नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा।।७८।।

ॐ नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा।।७९।।

ॐ नमो जघन्न्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा।।८०।।

ॐ नमः सोब्भ्याय च प्रतिसर्य्याय च स्वाहा।।८१।।

ॐ नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा।।८२।।

ॐ नमः श्श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च स्वाहा।।८३।।

ॐ नमऽ उर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा।।८४।।

ॐ नमो व्वन्न्याय च क्कक्ष्याय च स्वाहा।।८५।।

ॐ नमः श्श्रवाय च प्रतिश्श्रवाय च स्वाहा।।८६।।

ॐ नमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा।।८७।।

ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा।।८८।।

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च स्वाहा।।८९।।

ॐ नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा।।९०।।

ॐ नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च स्वाहा।।९१।।

ॐ नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च स्वाहा।।९२।।

ॐ नमो धृष्ष्णवे च प्रमृशाय च स्वाहा।।९३।।

ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा।।९४।।

ॐ नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा।।९५।।

ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्न्वने च स्वाहा।।९६।।

ॐ नमः स्स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा।।९७।।

ॐ नमः काट्टयाय च नीप्प्याय च स्वाहा।।९८।।

ॐ नमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा।।९९।।

ॐ नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा।।१००।।

ॐ नमः कूप्प्याय चावट्टयाय च स्वाहा।।१०१।।

ॐ नमो व्वीद्ध्रयाय चातप्प्याय च स्वाहा।।१०२।।

ॐ नमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्त्याय च स्वाहा।।१०३।।

ॐ नमो व्वर्ष्र्याय चावर्ष्र्याय च स्वाहा।।१०४।।

ॐ नमो व्वात्त्याय च रेष्म्म्याय च स्वाहा।।१०५।।
ॐ नमो व्वास्तव्वयाय च व्वास्तुपाय च स्वाहा।।१०६।।
ॐ नमः सोमाय च रुद्द्राय च स्वाहा।।१०७।।
ॐ नमस्ताम्म्राय चारुणाय च स्वाहा।।१०८।।
ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा।।१०६।।
ॐ नमऽ उग्ग्राय च भीमाय च स्वाहा।।११०।।
ॐ नमोऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा।।१११।।
ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा।।११२।।
ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः स्वाहा।।११३।।
ॐ नमस्ताराय स्वाहा।।११४।।
ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा।।११५।।
ॐ नमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा।।११६।।
ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा।।११७।।
ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा।।११८।।
ॐ नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा।।११६।।
ॐ नमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा।।१२०।।
ॐ नमः शष्प्याय च फेन्न्याय च स्वाहा।।१२१।।
ॐ नमः सिकत्त्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा।।१२२।।
ॐ नमः कीᳪ शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा।।१२३।।
ॐ नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा।।१२४।।

ॐ नमऽ इरिण्ण्याय च प्रपत्थ्याय च स्वाहा ।।१२५।।
ॐ नमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा ।।१२६।।
ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ।।१२७।।
ॐ नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ।।१२८।।
ॐ नमः काट्टयाय च गह्वरेष्ठाय च स्वाहा ।।१२९।।
ॐ नमः शुष्क्क्याय च हरित्त्याय च स्वाहा ।।१३०।।
ॐ नमः पाᳫंसव्व्याय च रजस्याय च स्वाहा ।।१३१।।
ॐ नमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च स्वाहा ।।१३२।।
ॐ नमऽ ऊर्व्व्याय च सूर्व्व्याय च स्वाहा ।।१३३।।
ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा ।।१३४।।
ॐ नमऽ उद्गुरमाणाय चाभिग्घ्नते च स्वाहा ।।१३५।।
ॐ नमऽ आखिदते च प्रखिदते च स्वाहा ।।१३६।।
ॐ नमऽ इषुकृद्भ्भ्यो धनुष्कृद्भ्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ।।१३७।।
ॐ नमो वः किरिकेब्भ्यो देवान[illegible]भ्यः स्वाहा ।।१३८।।
ॐ नमो व्विचिन्न्वकेब्भ्यो देवानाᳫं हृदयेब्भ्यः स्वाहा ।।१३९।।
ॐ नमो व्विक्षिणत्केब्भ्यो देवानाᳫं हृदयेब्भ्यः स्वाहा ।।१४०।।
ॐ नमो आनिर्हतेब्भ्यो देवानाᳫं हृदयेब्भ्यः स्वाहा ।।१४१।।
ॐ द्रापेऽ अन्धसस्प्पते दरिद्र नीललोहिताय । आसाम्प्रजाना
मेषाम्पशू नाम्मभेर्म्मा रोङ्‌ मो च नः किञ्चनाममत्
स्वाहा ।।१४२।।

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्श्वम्पुष्टं ग्रामे ऽ अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा।।१४३।।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्श्वाहा भेषजी। शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृढ जीवसे स्वाहा।।१४४।।

ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरधा योः। अव स्त्थिरा मधवद्ब्भ्यस्तनुष्ष्व मीड्ढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा।।१४५।।

ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे व्वृक्ष ऽ आयुधन्निधाय कृतिं व्वसान ऽ आचर पिनाकम्बि-भ्रदागहि स्वाहा।।१४६।।

ॐ व्विकिरिद्द्र व्विलोहित नमस्ते ऽ अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र७ँ हेतयो ऽन्न्यमस्म्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा।।१४७।।

ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा।।१४८।।

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽ अधि भूम्म्याम्। तेषा७ँ सहस्रयोजने ऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।।१४९।।

ॐ अस्म्मिन्न्महत्यर्ण्णवे ऽन्तरिक्षे भवा ऽ अधि। तेषा७ँ सहस्रयोजने ऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।।१५०।।

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिव७ँ रुद्द्रा ऽ उपश्श्रिताः। तेषा७ँ सहस्रयोजने ऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा।।१५१।।

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अधः क्षमाचराः ।
तेषा॑ᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा ।।१५२।।

ॐ ये व्वृक्षेषु शष्प्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवाः व्विलोहिताः ।
तेषा॑ᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा ।।१५३।।

ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिन ।
तेषा॑ᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा ।।१५४।।

ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलवृदाऽ आयुर्य्युधः ।
तेषा॑ᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा ।।१५५।।

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषा॑ᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा ।।१५६।।

ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषा॑ᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा ।।१५७।।

ॐ यऽ एतावन्तश्श्च भूयाकसश्च्च दिशोरुद्द्रा व्वितस्त्थिरे ।
तेषा॑ᳪ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्मसि स्वाहा ।।१५८।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः । तेब्भ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्र्ध्वाः ।। तेब्भ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्ष्मो यश्च्च नो द्वेष्ष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ।।१५९।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽ इषवः । तेब्भ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्र्ध्वाः ।। तेब्भ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्ष्मो यश्च्च नो द्वेष्ष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ।।१६०।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः।। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा।।१६१।।

ॐ भूः, ॐ भूवः, ॐ स्वः, ॐ व्वय७ँ सोम० (८ मन्त्राः) (पाठमात्रम्)।

ॐ उग्रश्च० (७ मन्त्राः) (पाठमात्रम्)।

ॐ व्वाजश्च०।।१।। प्राणश्च०।।२।। ओजश्च०।।३।। ज्यैष्ठ्यं च०।।४।। स्वाहा।

२–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ सत्यञ्च०।।१।। ऋतञ्च०।।२।। यन्ता च०।।३।। शञ्च०।।४।। स्वाहा।

३–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ ऊर्क् च०।।१।। रयिश्च०।।२।। वित्तञ्च०।।३।। व्व्रीहयश्च०।।४।। स्वाहा।

४–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ अश्मा च०।।१।। अग्निश्च०।।२।। व्वसु च०।।३।। स्वाहा।

५–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।

ॐ अग्निश्च मऽ इन्द्रश्च०।।१।। मित्रश्च०।।२।। पृथिवी च०।।३।। स्वाहा।

६–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ अ॰ शुश्च०।।१।।आग्रयणश्च०।।२।।स्रुचश्च०।।३।। स्वाहा।

७–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ अग्निश्च०।।१।।व्रतञ्च०।।२।।स्वाहा।

८–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ एका च०।।१।।स्वाहा।

९–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ चतस्रश्च०।।१।।स्वाहा।

१०–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ त्र्यविश्च०।।१।।पष्ठवाट् च०।।२।।स्वाहा।

(पुनः) ॐ यज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।
ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा।
ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा।
ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा।
ॐ विभ्राड् बृहत् पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा।

११–ॐ नमस्ते० (१६१ आहुतयः)।
ॐ व्वाजाय स्वाहा०।।१।।आयुर्य्यज्ञेन कल्पताम्०।।२।। स्वाहा। ॐ ऋचं वाचम्० स्वाहा। ॐ यन्मे छिद्रम्० स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः० स्वाहा। ॐ कयानश्चित्रः० स्वाहा। ॐ कस्त्वा सत्यो मदानाम्. स्वाहा। ॐ अभी षु णः० स्वाहा।

ॐ कया त्वन्न ऽ ऊत्याभिः स्वाहा । ॐ इन्द्रो व्विश्वस्य० स्वाहा । ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः स्वाहा । ॐ शं नो व्वातः पवता ँ शं नः० स्वाहा । ॐ अहानि शं भवन्तु नः० स्वाहा । ॐ शन्नो देवीः० स्वाहा । ॐ स्योना पृथिवि० स्वाहा । ॐ आपो हि ष्ठा० स्वाहा । ॐ यो वः शिवतमो रसः० स्वाहा । ॐ तस्मा ऽ अरं गमाम वः० स्वाहा । ॐ द्यौः शान्तिः० स्वाहा । ॐ दृते दृ ँ ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा० स्वाहा । ॐ दृते दृ ँ ह मा ज्योक्ते० स्वाहा । ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे० स्वाहा । ॐ नमस्ते ऽ अस्तु व्विद्युते० स्वाहा । ॐ यतो यतः समीहसे० स्वाहा । ॐ सुमित्रिया न ऽ आपः० स्वाहा । ॐ तच्चक्षुर्द्देवहितम्० स्वाहा । ॐ सद्योजातम्० (५ मन्त्राः) (पाठमात्रम्) ।

ततः षडङ्गन्यासं कुर्यादिति ।

इति रुद्रयागहवनमन्त्राः ।।

(१) अथ रुद्रयागस्य षड्भिः प्रकारैर्हवनमन्त्रविभागस्तत्र एकधाहवनमन्त्रविभागपक्षः प्रथमः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ।।

इति षट्षष्ठिमन्त्राणामेकाहुतिः ।।१ ।।

(२) अथ त्रेधाहवनमन्त्रविभागपक्षः द्वितीयः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य अर्ब्भकेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।

इति षड्विंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ।।१ ।।

ॐ नमस्तक्षब्भ्य इत्यारभ्य सुधन्वने च स्वाहा ।।

इति दशमन्त्राणामेकाहुतिः ।।२ ।।

ॐ नमः स्रुत्यायेत्यारभ्य तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ।।

इति त्रिंशन्मन्त्राणामेकाहुतिः ।।३ ।।

(३) अथ षोढा (षडधा) हवनमन्त्रविभागपक्षस्तृतीयः।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।
इति षड्विंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ।।१।।

ॐ नमस्तक्षभ्य इत्यारभ्य सुधन्वने च स्वाहा ।।
इति दशमन्त्राणामेकाहुतिः ।।२।।

ॐ नमः स्रुत्यायेत्यारभ्य यऽएतावन्तश्च० मसि स्वाहा ।।
इति सप्तविंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ।।३।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः। तेभ्यो दश प्राची० तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ।।४।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वातऽ इषवः। तेभ्यो दश प्राची० तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ।।५।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राची० तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ।।६।।

(४) अथ षोडशधा हवनमन्त्रविभागपक्षश्चतुर्थः।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।।
इति षड्विंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ।।१।।

ॐ नमस्तक्षभ्य इत्यारभ्य सुधन्वने च स्वाहा ।।
इति दशमन्त्राणामेकाहुतिः ।।२।।

ॐ नमः स्रुत्यायेत्यारभ्य पराचीना सुखा कृधि स्वाहा ।।
इति सप्तदशमन्त्राणामेकाहुतिः ।।३।।

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्याम्।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ।।४।।

ॐ अस्मिन्नमहत्त्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि।
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ।।५।।

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिव७ँ रुद्राऽ उपश्रिताः।
तेषा७ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।६।।

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा शर्व्वाऽ अधः क्षमचराः।
तेषा७ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।७।।

ॐ ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा व्विलाहिताः।
तेषा७ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।८।।

ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः।
तेषा७ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।९।।

ॐ ये पथां पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्य्यधः।
तेषा७ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१०।।

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिगणः।
तेषा७ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।११।।

ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।
तेषा७ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१२।।

ॐ यऽ एतावन्तश्च्व भूया७ँसश्श्च दिशो रुद्रा व्वितस्थिरे।
तेषा७ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा।।१३।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्द्दश०। तेभ्यो नमोऽ अस्तु तेनोऽवन्तु तेनो० तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा।१४।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽ इषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्द्दश०। तेभ्यो नमोऽ अस्तु तेनोऽवन्तु तेनो० तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा।१५।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्द्दश०। तेभ्यो नमोऽ अस्तु तेनोऽवन्तु तेनो० तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा।१६।।

(५) अथ चतुश्चत्वारिंशद्धवनमन्त्रविभागपक्षः पञ्चमः।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव० मुत ते नमः स्वाहा।।१।।
ॐ या ते रुद्र शिवा० भि चाकशीहि स्वाहा।।२।।
ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त० पुरुषञ्जगत् स्वाहा।।३।।
ॐ शिवेन व्वचसा० सुमनाऽ असत् स्वाहा।।४।।
ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता० परासुव स्वाहा।।५।।
ॐ असौ यस्ताम्रो० ईमहे स्वाहा।।६।।
ॐ असौ योऽवसर्प्पति० उतैनं गोपा० मृडयाति नः स्वाहा।।७।।
ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय० तेभ्योऽकरन्नमःस्वाहा।।८।।
ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो० भगवो व्वप स्वाहा।।६।।
ॐ व्विज्ज्यं धनुः कपर्द्दिनो० निषङ्गधिः स्वाहा।।१०।।
ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते० परिभुज स्वाहा।।११।।
ॐ परि ते धन्वनो हेति० निधेहि तम् स्वाहा।।१२।।
ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष० सुमना भव स्वाहा।।१३।।
ॐ नमस्तऽ आयुधाया० धन्वने स्वाहा।।१४।।
ॐ मा नो महान्तमुत० रीरिषः स्वाहा।।१५।।
ॐ मा नस्तोके० हवामहे स्वाहा।।१६।।
ॐ नमो हिरण्यबाहवे० स्वाहा। ॐ नमो बभ्लुशाय०। ॐ नमो रोहिताय० स्वाहा। ॐ नमः कृत्स्नायतया० स्वाहा। ॐ नमो व्वञ्चते व्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा। इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः।।१७।।

ॐ नमो उष्णीषिणे० स्वाहा। ॐ नमो व्विसृजद्भ्यो० स्वाहा।
ॐ नमः सभाभ्यः० स्वाहा। ॐ नमो गणेभ्यो० स्वाहा।
ॐ नमः सेनाभ्यः० अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा।
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः।।१८।।

ॐ नमस्तक्षभ्यो० स्वाहा। ॐ नमः श्वभ्यः० स्वाहा।
ॐ नमः कपर्द्दिने० स्वाहा। ॐ नमो ह्रस्वाय० स्वाहा।
ॐ नमऽ आशवे० स्वाहा।
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः।।१९।।

ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय० स्वाहा। ॐ नमः सोभ्यायः० स्वाहा।
ॐ नमो व्वन्न्याय० स्वाहा। ॐ नमो बिल्मिने० स्वाहा।
ॐ नमो धृष्णवे०
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः।।२०।।

ॐ नमः स्रुत्याय० स्वाहा। ॐ नमः कृप्याय० स्वाहा। ॐ नमो व्वात्याय० स्वाहा। ॐ नमः शङ्गवे नमस्ताराय स्वाहा।
इति मन्त्रचतुष्टयस्यैकाहुतिः।।२१।।

ॐ नमः शम्भवाय० शिवतराय च स्वाहा।।२२।।

ॐ नमः पार्य्याय० स्वाहा। ॐ नमः सिकत्याय० स्वाहा।
ॐ नमो व्व्रज्ज्याय० स्वाहा। ॐ नमः शुष्क्याय० स्वाहा। ॐ नमः पर्ण्णाय० आनिर्हतेभ्यः स्वाहा।
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः।।२३।।

ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳬ हृदयेभ्यो नमो व्विचिन्नवत्केभ्यो नमो व्विक्षिणत्केत्यो नमऽ आनिर्हतेभ्यः स्वाहा।।२४।।

ॐ द्रापेऽ अन्धसस्पते० किं चनाममत् स्वाहा।।२५।।

ॐ इमा रुद्राय तवसे० अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा।।२६।।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा० मृड जीवसे स्वाहा।।२७।।

ॐ परि नो रुद्रस्य० तनयाय मृड स्वाहा।।२८।।

ॐ मीढुष्टम शिवतम० बिभ्रदा गहि स्वाहा।।२९।।
ॐ व्विकिरिद्द व्विलोहित० विपन्तु ताः स्वाहा।।३०।।
ॐ सहस्राणि सहस्रशो० मुखा कृधि स्वाहा।।३१।।
ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि० तन्न्मसि स्वाहा।।३२।।
ॐ अस्म्मिन्न्महत्यर्णवे० तन्न्मसि स्वाहा।।३३।।
ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवᳬ रुद्द्रा० तन्न्मसि स्वाहा।।३४।।
ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अधः० तन्न्मसि स्वाहा।।३५।।
ॐ ये व्वृक्षेषु० तन्न्मसि स्वाहा।।३६।।
ॐ ये भूतानामधिपतयो० तन्न्मसि स्वाहा।।३७।।
ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐल० तन्न्मसि स्वाहा।।३८।।
ॐ ये तीर्त्थानि० तन्न्मसि स्वाहा।।३९।।
ॐ येऽन्नेषु० तन्न्मसि स्वाहा।।४०।।
ॐ यऽ एतावन्तश्च० तन्न्मसि स्वाहा।।४१।।
ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये दिवि० जम्भे दध्मः स्वाहा।।४२।।
ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो येऽन्तरिक्षे० जम्भे दध्मः स्वाहा।।४३।।
ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये पृथिव्यां येषामन्न०जम्भे दध्मः स्वाहा।।४४।।

(६) अथाष्टचत्वारिंशद्धवनमन्त्रविभागपक्षः षष्ठः।

ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्यव० मुतते नमः स्वाहा।।१।।
ॐ या ते रुद्द्र शिवा० भि चाकशीहि स्वाहा।।२।।
ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त० पुरुषञ्जगत् स्वाहा।।३।।
ॐ शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाच्छा० सुमनाऽ असत् स्वाहा।।४।।

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता० परासुव स्वाहा।।५।।

ॐ असौ यस्ताम्रोऽ अरुणः० ईमहे स्वाहा।।६।।

ॐ असौ योऽवसर्प्पति०उतैनं गोपा०मृडयाति नः स्वाहा।।७।।

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुसे० करन्नमःस्वाहा।।८।।

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्ज्याम्० भगवो व्वप स्वाहा।।९।।

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो० निषङ्गधिः स्वाहा।।१०।।

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टम हस्ते० परिभुज स्वाहा।।११।।

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्त० निधेहितं स्वाहा।।१२।।

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्व ँ सहस्राक्ष शतेषुधे० सुमना भव स्वाहा।।१३।।

ॐ नमस्तऽ आयुधायाना० धन्वने स्वाहा।।१४।।

ॐ मा नो महान्तमुत० रुद्र रीरिषः स्वाहा।।१५।।

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि० सद्मित्त्वा हवामहे स्वाहा।।१६।।

ॐ नमो हिरण्ण्यबाहवे० स्वाहा। ॐ नमो बब्भ्लुशाय० स्वाहा।
ॐ नमो रोहिताय० स्वाहा। ॐ नमः कृत्स्नायतया० स्वाहा।
ॐ नमो व्वञ्चते परिवञ्चते० व्विकृन्तानां पतये नमः स्वाहा।
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः।।१७।।

ॐ नमो उष्णीषिणे गिरिचराय० स्वाहा। ॐ नमो व्विसृजद्भ्यो
व्विध्यद्भ्यश्च० स्वाहा। ॐ नमः सभाभ्यः सभा० स्वाहा।
ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च० स्वाहा। ॐ नमः सेनाभ्यः
सेनानिभ्यश्च० अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा।
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः।।१८।।

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च० स्वाहा। ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च० स्वाहा। ॐ नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय० स्वाहा। ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय० स्वाहा। ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च० द्वीप्याय व स्वाहा।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः।।१९।।

ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च० स्वाहा। ॐ नमः सोभ्यायः च प्रति सर्य्याय च० स्वाहा। ॐ नमो व्वन्याय च० स्वाहा। ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च० स्वाहा। ॐ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च० सधन्नवने च स्वाहा।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः।।२०।।

ॐ नमः स्रुत्याय च पत्थ्याय च० स्वाहा। ॐ नमः कूप्याय चावट्याय च० स्वाहा। ॐ नमो व्वात्याय च रेष्म्याय च० स्वाहा। ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च० हनीयसे च मनो व्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय स्वाहा।

इति चतुर्मन्त्राणामेकाहुतिः।।२१।।

ॐ नमः शम्भवाय च० शिवतराय च स्वाहा।।२२।।

ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च० स्वाहा। ॐ नमः सिकत्याय प्रवाह्याय च० स्वाहा। ॐ नमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च० स्वाहा। ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च० स्वाहा। ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च० धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः।।२३।।

ॐ नमो वः किरिकेभ्यः स्वाहा।।२४।।

ॐ देवानाᳫ हृदयेभ्यः स्वाहा।।२५।।

ॐ नमो विचिन्वत्केभ्यः स्वाहा ।।२६ ।।
ॐ नमो विक्षिणत्केभ्यः स्वाहा ।।२७ ।।
ॐ नमऽ आनिर्हतेभ्यः स्वाहा ।।२८ ।।
ॐ द्रापेऽ अन्धसस्पते० किञ्चनाममत् स्वाहा ।।२६ ।।
ॐ इमा रुद्राय तवसे० अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ।।३० ।।
ॐ या ते रुद्र शिवा० मृड जीवसे स्वाहा ।।३१ ।।
ॐ परि नो रुद्रस्य० तनयाय मृड स्वाहा ।।३२ ।।
ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः० बिभ्रदा गहि स्वाहा ।।३३ ।।
ॐ विकिरिद्र० न्नि वपन्तु ताः स्वाहा ।।३४ ।।
ॐ सहस्राणि सहस्रशो० मुखा कृधि स्वाहा ।।३५ ।।
ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि० तन्मसि स्वाहा ।।३६ ।।
ॐ अस्मिन्महत्यर्णवे० तन्मसि स्वाहा ।।३७ ।।
ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवꣳ रुद्रा० तन्मसि स्वाहा ।।३८ ।।
ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽ अधः० तन्मसि स्वाहा ।।३६ ।।
ॐ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा० तन्मसि स्वाहा ।।४० ।।
ॐ ये भूतानामधिपतयो० तन्मसि स्वाहा ।।४१ ।।
ॐ ये पथां पथि० जनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ।।४२ ।।
ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति० तन्मसि स्वाहा ।।४३ ।।
ॐ येऽन्नेषु विविद्ध्यन्ति० तन्मसि स्वाहा ।।४४ ।।
ॐ यऽ एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च० तन्मसि स्वाहा ।।४५ ।।
ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि० तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ।।४६ ।।
ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे० तमेषाजम्भे दध्मः स्वाहा ।।४७ ।।
ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्न० तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा ।।४८ ।।

इति रूद्रयाग-हवनमन्त्राः ।

श्री पशुपत्यष्टकम्

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारूचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्जवाङ्ग्ग परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्ननम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणै र्व्याघ्रकृतिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।१।।

स्त्रोतम्

पशुपतिं द्युपतिं धरणीपतिं भुजगलोकपतिं च सतीपतिम्।
प्रणतभक्तजनार्तिहिरं परं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।१।।
न जनको जननी न च सोदरो न तनयो न च भूरिबलं कुलम्।
अवति कोऽपि न कालवशं गतं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।२।।
मुरजडिडिपवाद्यविलक्षणं मधुरपञ्चमनादविशारदम्।
प्रमथभूतगणैरपि सेवितं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।३।।
शरणदं सुखदं शरणान्वितं शिव शिवेति शिवेति नतं नृणाम्।
अभयदं करूणावरूणालयं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।४।।
नरशिरोरचितं मणिकुण्डलं भुजगहारमुदं वृषभध्वजम्।
चितिरजोधवलीकृतविग्रहं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।५।।
मखविनाशकरं शशिशेखरं सततमध्वरभाजि फलप्रदम्।
प्रलयदग्धसुरासुरमानवं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।६।।
मरमपास्य चिरं हृदि संस्थितं मरणजन्मजराभयपीडितम्।
जगदुदीक्ष्य समीपभयाकुलं भजत रे गिरिजापतिम्।।७।।

हरिविरञ्चिसुराधिपपूजितं यमजतेशधनेशनमस्कृतम्।
त्रिनयनं भुवनत्रितयाधिपं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।८।।
पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतं विरचितं पृथिवीपतिसूरिणा।
पठति संश्रृणुते मनुजः सदा शिवपुरीं वसते लभते मुदम्।।९।।

इति श्री पृथिवीपतिसूरिविरचितं श्रीपशुपत्यष्टकं सम्पूर्णम्।

श्री विश्वनाथाष्टकम्

गङ्गातरङ्गरमणीयजटाकलापं
गौरी निरन्तरविभूषितवामभागम्।
नारायणप्रियमनङ्गमदापहारं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।१।।

वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं
वागीशविष्णुसुरसेवितपादपीठम्।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।२।।

भूताधिपं भुजगभूषणभूषिताङ्ग
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम्।
पाशाङ्कुशाभयवरप्रदशूलपाणि
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।३।।

शीतांशुशोभिकिरीटविराजमानं
भालेक्षणानलविशेषिपञ्चबाणम्।
नागाधिपारचितभासुरकर्णपुरं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।४।।

पञ्चाननं दुरिमत्तमतङ्ङ्गजानां
नागान्तकं दनुजपुङ्ङ्गवपन्नगानाम्।
दावानलं मरणशोकजराटवीनां
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।५।।

तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्धितीय-
मानन्दकन्दमपराजितप्रमेयम्।
नागात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।६।।

रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं
वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम्।
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाऽभिरामं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।७।।

आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां
पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं।
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्।।८।।

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्।।९।।

विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।१०।।

इति श्री महर्षिव्यासप्रणीतं श्रीविश्वनाथष्टकं सम्पूर्णम्।

